रत्नाकर-ग्रन्थमालाका २१ वा रत्न।

मेवाड़-गौरव।

(महाराणा प्रतापकी लीलाभूमिका गौरवमय इतिहास।)

लेखक —

बाबू पद्मराज जैन।

सम्पादक—बा० मूलचन्द्र अग्रवाल बी० ए०

प्रकाशक —

दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी

११५ हरीसन रोड,

कलकत्ता।

सवत् १९८३

द्वितीय सस्करण]

प्रकाशक —

उमादत्त शर्मा।

पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी।

११५ हरीसन रोड,

कलकत्ता।

मुद्रक—

बाबू मूलचन्द्र अग्रवाल बी० ए०

'विश्वमित्र' प्रेस, ११५ हरीसन रोड,

कलकत्ता।

उपहार

मेवाड़ !

मनु मेरो चित्तौर पै लखि तेरो जस थम्भ।
भ्रमतु, हसतु, रोवतु अहो ! सुभट मौलि नृप-कुम्भ ॥
तपत बात उर लाय, फिरि सेवहु धीर समीर।
प्रथम जाहु चित्तौर-गढ पुनि विरमहु कसमीर ॥
जनि सुपूत बापा, सुभट, सांगा, कुम्भ, प्रताप।
वीर-जननि चित्तौर ! तू दल्यौ दुवन-दल दाप ॥
वह जौहर, रण रङ्ग वह, वह जूझन जुरि जङ्ग।
अजहुँ चित्र चित्रत वहै गिरि-अरावली-शृङ्ग ॥
दहलति ही दिल्ली दलित, सुनि चित्तौर ! तुव धाक।
क्यों न कहैं फिरि तोहि हम आजु हिन्द की नाक ॥
लोहागढ लौं सिंहगढ, बाधन, रणथमौर।
औरहु गढ, सिरमोरु पै सब में गढ चित्तौर ॥

श्रीवियोगी हरि।

—०—

भूमिका

ससारमें अनेक देशोने स्वाधीनताके लिये आदर्श त्याग और दृढ़ता दिखायी, भयानकसे भयानक कठिनाइयोंका सामना किया, परन्तु मेवाडके वीर नर नारियोंने जिस ढङ्गसे स्वाधीनताके लिये भीषण सग्राम छेड़ कर प्राणाहुति दी, वह वास्तवमें सर्वोपरि होनेके कारण विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। मेवाडके महाराणा ही नहीं, सामन्त-सरदार ही नहीं, राज दरबारके कर्मचारी ही नही, रनवास की वीर-बालाए ही नहीं, देशके ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, धनी निर्धन, बालक, युवा और वृद्ध सभी मातृभूमिके गौरवके लिये हसते हसते प्राण देना जानते थे। मेवाड़ महाराणाकी पैतृक सम्पत्ति नहीं, बल्कि सभी अधिवासियोंकी गौरवस्थली समझी जाती थी। देशके लिये कोई भी बड़ा त्याग और कोई भी कठिनाई भयानक न थी। देशके लिये स्त्री पुरुषका प्रेम कोई चीज न था और कुल-गौरवके लिये ससारका रूपलावण्य निछावर था। मोक्ष प्राप्तिके लिये योगीजन निर्जन वनोंमें कन्दमूल फल खाकर जिस तरह घोर तपस्या किया करते हैं, उसी तरह मेवाडके सहस्रों वीर देश-गौरवके लिये नाना प्रकारके कष्ट सहा करते थे। मेवाड़के बालक बचपनसे रणस्थलके शिक्षालयमें प्राणमोह विनाशनी शिक्षा ग्रहण किया करते थे और रनवासमें सुन्दर बालिकाए सतीत्वके सामने ससारके बहुमूल्यसे बहुमूल्य आभूषण और प्रलोभन मिट्टीके समान समझा करती थीं। मेवाड वास्तवमें किसी समय स्वर्गपुरी थी जिसमे राजा प्रजाके बीच अनुपम प्रेम, पति-पत्नीके बीच सात्विक अनुराग था।

ऊपर जो कुछ लिखा गया है वह कविकल्पना नहीं है। सुदृढ प्रमाणोंके आधार पर ही वीरभूमिका गौरव अङ्कित किया गया है। वह मेवाड़ ही था जिसके वीर शिरोमणि महाराणा लक्ष्मणसिंहने देशकी स्वाधीनताके लिये सबसे पहले अपने ११ पुत्रोंका बलिदान दिया और उन पुत्रोंकी वीर माताने प्रसन्न मुखसे उनकी आरती उतारी। वह मेवाड़ ही था जिसकी सहस्रों वीर बालाएं सतीत्वकी रक्षाके लिये हसती हुई अग्निमे भस्म हो गयीं। वह मेवाड ही था जिसमें रूप-लावण्यकी खान महारानी पद्मिनीने अपने सतीत्व और पति-प्रेमके सामने बादशाही महलों और सुख-ऐश्वर्य पर थूक दिया और कुल-गौरवके लिये अग्नि चिता पर चढ़ गयी। वह मेवाड़ ही था जिसमें महाराणा सग्रामसिहने पेडकी छाल खा कर दिन काटे थे, क्योंकि उनकी प्यारी प्रजा दुर्भिक्षके कारण अन्न न पाती थी। वह मेवाड़ ही था जिसके महाराणाने न्याय-रक्षाके लिये अपने इकलौते पुत्रको वश सहारकी जरा भी परवाह न कर फासी पर लटका दिया था। वह मेवाड़ ही था जिसकी रक्षाके लिये वीरवर जयमल और फत्ताने प्राणोंका कुछ भी मोह न किया। वह मेवाड ही था जिसके सरदारने अटूट धनकी कुछ भी परवा न कर अपने स्वामी और जातिके लिये प्राण तक दे दिये। जिसका सिर भी धड़से अलग हो गया, परन्तु जो अपनी प्रतिज्ञाकी रक्षाके लिये घोडे पर डटा हुआ निश्चित समय तक लड़ता रहा। वह मेवाड ही था जिसने चन्द सरीखे त्यागी उत्पन्न किये, जिन्होंने अपना वचन पालन करनेके लिये राज्याधिकार तक त्याग दिया। क्या कहे, मेवाड़की एक एक घटना ससारके इतिहासमें अनुपम और उल्लेखनीय है। मेवाड़का इतिहास भारतके गगन मण्डलमें वास्तवमें सूर्य ही है। ऐसा कोई देश तो बताया जाय जिसके शासकने देशकी

स्वाधीनता और वंशके गौरवके लिये वर्षों पहाड़ी स्थानों और दुर्गम जङ्गलोंमें निवास किया हो और जिसने स्वय घास खाकर तथा अपने परिवारको खिला कर अपने दिन काटे हों। क्या कोई देश है जिसके शासक परिवारने स्वाधीनताके लिये ऐसे भयानक कष्ट सहे हों। ससारमें जिस समय भी निष्पक्ष इतिहास-लेखक जन्म लेंगे, वे मेवाड़को ही सर्वमान्य मानेंगे।

सच पूछा जाय तो मेवाड़का इतिहास हिन्दुओंका अद्वितीय कोष है, जिसका मूल्य ससारका साम्राज्य भी नहीं हो सकता। निर्जीवोंमें यदि जीवन शक्तिका सचार करने वाली कोई शक्ति है तो वह मेवाड़का गौरव पूर्ण इतिहास ही है, जिसका अध्ययन प्रत्येक हिन्दूके लिये गीता और रामायणके समान आवश्यक है। भारतवासी यदि स्वाधीनताके महत्वको समझना चाहते हैं, तो मेवाडका इतिहास पढ़ें।

प्रस्तुत पुस्तक इसी उद्देश्यसे बड़े आग्रह पूर्वक लिखी गई है जो अत्यन्त अल्प कालमें पथ-प्रदर्शनके लिये तैयार की गयी है। पुस्तक लेखक श्रीयुक्त पद्मराजजी जैन मेवाड़के गौरवपूर्ण इतिहास से इतने प्रभावान्वित हुए हैं कि वे भारतीय स्वाधीनताके लिये सदा ही मेवाडके वीरोंके त्याग और साहसका आदर्श देखा करते हैं और मेवाड़के गौरव पर अपनेको निछावर समझते हैं। मेरे आग्रह पर उन्होंने केवल इसी लिये स्वीकार किया कि जिस पराधीन देशका स्वातन्त्र्य-प्रेम आज कल पश्चिमी देशोंका अनुकरण मात्र समझा जाता है, उसका परिचय पक्षपातपूर्ण आक्षेपकारोंको मिल जाये और भारतीय सन्तानोंको भी अपने पूर्व-पुरुषोंके गौरवका पता लगे। लेखककी प्रबल इच्छा थी कि मेवाडका इतिहास सर्वाङ्ग रूपपूर्ण निकले, परन्तु मेरे आग्रह ने उन्हे यह सक्षिप्त इतिहास

लिखनेके लिये ही बाध्य किया। उनकी हार्दिक इच्छा यही है कि भारतवासी अपने गौरवस्थान, स्वतन्त्रताकी लीलाभूमि मेवाडके सम्बन्धमें यदि वर्तमान पुस्तक पढ कर और भी विशेष बातें जानने के अभिलाषी हुए तो वे अपना अमूल्य समय और धन व्यय कर एक बडा इतिहास प्राचीन शिलालेखों और मेवाडके चारणोंके कथनके आधार पर तैयार करेंगे जो हिन्दीससारमें एक अपूर्व वस्तु होगी। परमात्मा उनके इस उद्देश्यको पूर्ण करे यही मेरी इच्छा है।

प्रस्तुत पुस्तकके तैयार करनेमें टाडसाहबके 'राजस्थान' नामक ऐतिहासिक ग्रन्थसे बहुत कुछ सहायता ली गयी है, परन्तु पुस्तक उस ग्रन्थकी पुनरावृत्ति ही नहीं है, बहुतसी ऐसी बातें भी वर्तमान पुस्तकमें दी गयी हैं, जिनका उल्लेख टाडसाहबने कहीं पर नहीं किया। लेखक मेवाड़के गौरवसे उत्साहित होकर स्वय उस वीरभूमिके दर्शन करने गये थे और वही कई महीने रह कर उन्होंने जङ्गलों और दुर्गम स्थानोंका निरीक्षण किया। प्रात·स्मरणीय महाराणा प्रतापकी समाधि तथा उनके अनेक आश्रय स्थान देखे, बहुतसे शिलालेख भी बड़े परिश्रमसे पढे और चारणों को एकत्र कर बहुतसी प्रामाणिक बातोंका सग्रह किया। मेवाडके वीर भीलोसे भी मिलकर उन्होंने बहुतसी पुरानी बातोंका परिचय प्राप्त किया। मेवाड-भ्रमण और तत्सम्बन्धी अनुसन्धानकी सभी बातें मौलिक रूपसे इस पुस्तकमे दे दी गयी हैं। पुस्तक बहुत बडी न हो जाये इससे बहुतसी घटनायें प्रामाणिक होने पर भी न दी जा सकीं। पुस्तकका स्वरूप विस्तृत हो जाता और वह अधिक मूल्यके कारण सर्वसाधारणके लिये सुलभ न रहती, इसी

भयसे मैंने लेखकको जहा तक हो सके संक्षिप्त इतिहास लिखनेकी सलाह दी।

लेखकने यद्यपि मेरे अनुरोधसे इतिहासको संक्षिप्त रखा, परन्तु इसका मुझे भी बडा दु ख है क्योंकि सभी घटनायें विस्तारपूर्वक न दी जा सकी। कुछ घटनायें तो वास्तवमें उल्लेखनीय होने पर भी स्थानाभावसे छोड़ देनी पड़ीं, असल बात तो यह हैं कि जिस देशके इतिहासमें लाखों उल्लेखनीय घटनायें हैं उसकी जो भी घटना स्थान पा जाय उद्देश्यसिद्धीके लिये पर्याप्त है।

जिस मेवाड़ने अनुपम वीर और स्वाभिमानी राजपूत कुल-केसरी महाराणा प्रतापको जन्म दिया, वह वास्तवमें वन्दनीय स्थान है। महाराणा वीरताकी ही खान थे सहृदयताके मूर्तिमान अवतार थे। एक समयकी बात है कि वे जङ्गलमें शिकार खेलकर एक गावमें जा पहुचे और एक राजपूत बुढियाके मकान पर पानी पीनेके लिये ठहर गये, वह वृद्धा अपनी कुमारी कन्याके साथ बैठी हुई रो रही थी। महाराणाने उससे पीनेके लिये जल मागा और बुढिया अतिथिसत्कारके लिये ठण्डा जल और कुछ खानेको ले आयी। जब महाराणा पानी पीकर शान्त हुए तो उन्होंने बुढिया से उसके रोनेका करण पूछा। बुढियाने उत्तर दिया कि भाई, तुम पानी पी चुके अब अपना रास्ता लो। मेरे रोनेका कारण पूछनेसे क्या लाभ होगा। बुढियाने महाराणाको पहचाना नही। जब अतिथिने बहुत आग्रह किया तो बुढिया आखोंमें आसू भर कर बोली कि इस कन्याका विवाह है। इसके कोई मामा नहीं जो इसका भात भरे। यही सोच कर मैं रोने लगी और मेरी कन्या भी मुझे देख कर रो रही है। महाराणाने विवाहकी तिथि पूछ ली और बुढियासे कहा कि यदि कन्याका मामा नहीं तो

मुझे इसका मामा समझ लो। मैं निश्चित दिन पर आकर भात भर जाऊंगा। बुढियाने इसे निर्मूल उपहास समझा और कहा कि इन व्यर्थकी बातोंसे क्या लाभ है। हम दोनोंका सम्बन्धी कौन बन सकता है। महाराणा वहासे राजधानी चले गये और कन्याके विवाहके दिन उसके मामा बन कर बहुतसे घोडे सजाकर तथा धन द्रव्य लेकर भात भरने पहुच गये। जब बुढियाने सुना कि स्वय महाराणाजी उसके भाई बनकर भात भरने आये हैं तो वह कृतज्ञतासे विह्वल हो गयी। महाराणाके इस कार्यको देख प्रजा फूली न समायी। मेवाडके शासनका भार महाराणा प्रताप सरीखे सहृदय वीरोंके हाथमें था फिर भला ऐसे उत्तम कार्य राजा-प्रजाका प्रेम बढ़ानेवाले क्यों न दिखाई दें। मेवाड़के महाराणा यदि रणस्थलमे व्याघ्रसे भी कठोर थे तो अपनी प्रजाके लिये फूलसे भी अधिक कोमल थे।

मेवाडके रनवासकी रानिया तथा राजपूत-बालाएं भी स्वाभिमानकी साक्षात मूर्त्ति हुआ करती थीं। वे अपने अपने पतियोंको कर्त्तव्य पालनके लिये सदा उत्साहित किया करती थीं। चूड़ावत सरदारकी नवविवाहिता भार्याने पतिको रणस्थलमें निश्चिन्त बनाने के लिये अपना शिर काट कर दे दिया था। जिसे पाकर वे रुद्र बन गये थे और जिस घटनाने उन्हें औरङ्गजेब सरीखे दुर्दान्त शत्रुको कई दिन तक रोक रखनेका अपूर्व साहस प्रदान किया था। जोधपुरके महाराज यशवन्तसिंहको उदयपुरकी कन्या ब्याही हुई थी। जिस समय रानीने सुना कि मेरा पति काबुलसे पीठ दिखा कर भाग आया है, उसने अपने महलका दरवाजा इसलिये बन्द कर दिया कि कायर पतिका मुह न देखकर चितामे भस्म हो जाऊंगी। बहुत समझाने पर उस वीर महिलाने

इस शर्त पर जीवित रहना स्वीकार किया था कि जबतक यशवन्तसिंह रणस्थलको न लौट जायेंगे अन्न ग्रहण न करूंगी। उसने वास्तवमें उसी दिन अन्न ग्रहण किया जिस दिन उसका पति फिर लड़नेके लिये चला गया।

इसी महिलाके जब अजीतसिंह नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था तो जोधपुरमें बडी धूम मचायी गयी थी। बालककी नानी जब उदयपुरसे जोधपुर पहुंची तो इस बातकी लोगोंमें बड़ी चर्चा थी कि बालकके लिये अमूल्य रत्न, वस्त्र, और आभूषण लाये गये होंगे, परन्तु उदयपुरकी महारानीने एक ढालका पालना बना कर बालकको उस पर सुलानेकी आज्ञा दी और उसके खेलनेके लिये एक छोटीसी तलवार दी। उसके तकियेके स्थानमें एक हथियार रखा और उसका अगूठा चीर कर रक्तसे उसका तिलक किया। महारानीका यह कार्य देख सब बडे चकित हुए। महारानीने गर्जती हुई वाणीसे कहा कि देशकी स्वतन्त्रता खोयी समझ हम लोग अपने बालकको मखमल और रेशमके कोमल वस्त्रों पर किस तरह सुला सकते हैं। कांटोंकी शय्या वीरोंके बालकोंके लिये उपयुक्त हैं। जिस समय सारा देश दु खी हो रहा है उस समय हम अपने महलोंमें किस तरह आनन्द मना सकते हैं। महारानी के इस पवित्र उपदेशको सुनकर विलासी दर्शक अवाक् खडे रह गये। मेवाडकी इन वीर रमणियोंने ही सदा देशमें स्वतत्रताका दीपक प्रज्वलित रखा और देश पर आये हुए सङ्कटके समय स्वय खड्ग धारण कर कुल-गौरवकी रक्षा की।

मेवाड़के वीरोंने अल्प सख्यामें होने पर भी दिल्लीके बादसाहों की विराट् सेनाओंका बडी वीरतासे सामना किया। दिल्लीके राज

सिंहासन पर जो भी बादशाह बैठा उसने अपना प्रभाव बढ़ानेके लिये मेवाड़को जीतना चाहा, परन्तु वीरोंने कभी अपने देशकी स्वतन्त्रता नष्ट नहीं होने दी। यदि किसी एक महाराणाने कभी साधारण कमजोरी भी दिखायी तो राजसिंह सरीखे उत्तराधिकारी ने उस कमजोरीका बदला ब्याज समेत चुका लिया। यदि दिल्लीके बादशाहोंके साथ महाराणाओंका राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित हुआ तो वह सदा बराबरीकी शर्तों पर ही रहा। मेवाड़का कोई भी महाराणा कभी दिल्लीके दरबारमें उपस्थित नहीं हुआ। मेवाड़के महाराणा सदा हिन्दूपति कहलाये क्योंकि हिन्दू तीर्थों पर जब कभी कोई संकट उपस्थित हुआ तो मेवाड़के महाराणा सबसे आगे रणस्थलमें दिखायी दिये। महाराणाने अपने प्रथम कुल गौरवकी रक्षाके लिये विधर्मियोंको कभी अपनी लड़कियां नहीं दीं। यह ऐसी बात है जिसका अभिमान प्रत्येक स्वाभिमानी व्यक्ति कर सकता है। मेवाड़का राजघराना जितना पवित्र और साहसी था उतना ही धार्मिक भी रहा। समस्त इतिहासमें एकभी ऐसा उदाहरण नहीं पाया जाता कि किसी भी महाराणाने शक्तिके मदमें कोई अनुचित काम किया हो। औरङ्गजेबकी बेगम और कन्या युद्धस्थलमें गिरफ्तार हुई, परन्तु महाराणाने उन्हें अपनी बहन बेटीके समान राजमहलमें रख कर वापस कर दिया। जब शत्रुकी रमणियोंके साथ ऐसा पवित्र बर्ताव किया, तो क्या कोई कल्पना कर सकता है कि मेवाड़के महाराणाने कभी व्यभिचारसे अपनी उज्वल कीर्तिमें धब्बा लगायी होगी। रूपनगरकी राजपूत कन्याके समान उन्होंने अबलाओंका उद्धार अपने प्राण सङ्कटमें डाल कर किया।

बप्पारावलके वंशधरोंमें महाराणा राजसिंह अन्तिम प्रतापी

महाराणा हुए, उनके बाद जो शासक हुए वे साधारण श्रेणीके ही थे। यद्यपि उन्हें अपने कुलगौरवका पूरा ज्ञान था, परन्तु मेवाड़में जो परस्परकी फूट उत्पन्न हुई उसे दबानेमें वे असमर्थ सिद्ध हुए। घरेलू फूटके कारण मराठोंने राज्यको बहुत तङ्ग किया और कोपमें धन न रहने पर भी बड़ी निर्दयतासे कर वसूल किया। यदि मराठोंमे प्राचीन हिन्दू शासकोंके गौरवकी रक्षाका भाव होता तो वे अपनी अधम धन लालसाको दबा कर अच्छा सङ्गठन कर सकते थे, परन्तु छत्रपति शिवाजीके बाद उनके वशधर भी तो पराधीनताकी बेडिया पहननेवाले थे। जयपुर, जोधपुरके शासक ही यदि राजपूत गौरवको कोई चीज समझते और समय समय पर की हुई प्रतिज्ञाओंका पालन कर महाराणाओंका साथ देते तो मेवाडका ही नहीं उनका भी कल्याण होता।

मराठोंने लूट और आक्रमणोंकी जैसी धूम मचायी थी, उससे अपनी रक्षा करनेके लिये उदयपुरके महाराणाको १९ वीं शताब्दी के आरम्भमें अंग्रेजोंसे सन्धि कर लेनी पडी। अंग्रेजोंने इस तरह मेवाड़को तलवारसे नहीं जीता बल्कि उदयपुरके राजघरानेकी इच्छासे ही उसे पाया।

मेवाडके राजघरानेमें अन्तिम उल्लेखनीय परन्तु साथ ही अत्यन्त शोचनीय घटना कुमारी कृष्णाकी मृत्यु है, जिसके शापसे राजघरानेमें कई पीढी तक कोई पुत्र ही उत्पन्न न हुआ और गोदके लडकोंको गद्दी देकर काम चलाना पडा। जयपुर जोधपुरके राजपूत शासक ही कुमारी कृष्णाकी मृत्युके कारण थे। हृदय दहल जाता है जब स्मरण होता है कि एक अबोध निरपराध कन्याको हलाहल विषका प्याला पीकर अपने प्राण देने पडे थे। यदि उस बेचारीका कोई अपराध था तो यही कि उसने ईश्वरसे रूपका

अनुपम वर पाया था।

मेवाडके इतिहासमे जहा पन्नाकी स्वामिभक्ति, पद्मिनीकी चतुराई, चूडावत सरदारकी भार्याकी कर्तव्यशीलता उल्लेखनीय है, वहा कुमारी कृष्णाका हलाहल विषपान भी चिरस्मरणीय रहेगा।

पश्चिमी सभ्यताके सङ्घर्षने भारतीयोंमें इस बातकी प्रबल इच्छा उत्पन्न की है कि ऐतिहासिक परिशोध किया जाये। जो लोग इस विषयमें अनुराग रखते हैं वे मेवाडमें बहुत कुछ सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। भारतमे वीरपूजाका तो कभी अभाव रहा नहीं। आज भी वीर सतियों और वीर सरदारोंकी पूजा मेवाड़मे होती है तथा उनके पवित्र सरदारोंके दर्शन कर लोग अपनेको भाग्यशाली मानते हैं, परन्तु यह वीरपूजा यदि वास्तवमें कुछ महत्व रखती है तो यही कि वीरोंके अनुसार आचरण करनेकी चेष्टा करनी चाहिये। वर्तमान पुस्तकके लेखकको वास्तवमें बड़ी प्रसन्नता होगी यदि हमारे देशके बालक बालिकाये अपने पूर्वजोंकी अनुपम वीरता, साहस और स्वाभिमानका थोड़ा भी अनुकरण कर सकें। लेखक अपना परिश्रम सफल समझता है, पाठक यदि पढ़ी हुई बातोंको शीघ्र ही न भूल जायें। आशा है यह उद्योग पाठकोंके पसन्द आयेगा और उन्हें इससे लाभ पहुचेगा। उनकी प्रेरणासे लेखकको सर्वाङ्ग सुन्दर और विस्तृत मेवाड़ गौरव लिखनेके लिये बाध्य होना पडे यही ईश्वरसे फिर प्रार्थना है।

——❀.——

मेवाड़-गौरव

प्रथम-परिच्छेद ।

मेवाड़-परिचय ।

आज भारतके पैरोंमें दासत्वकी बेडियां पडी हुई हैं, इससे इसका सारा गौरव दब रहा है, जिस तरह कि मेघाच्छन्न आकाशमें सूर्यका तेज छिपा रहता है। पराधीनताने भारतवासियोंको उत्साहहीन बना दिया है। उनका प्राचीन इतिहास ही उनके निर्बल हृदयोंको आशापूर्ण बना सकता है। इसीसे भारतीय इतिहासके चमकते हुए रत्नोंका कुछ परिचय देना आवश्यक समझा गया है। भारतकी प्राचीन सभ्यतापूर्ण भूमिमें मेवाडका नाम प्रातःस्मरणीय है ? क्योंकि इस अञ्चलके शासकोंने भयानकसे भयानक कष्टोंका सामना करते हुए भी आर्यजतिका गौरव रखा। वह पवित्र स्थान राजस्थानके दक्षिणमें अजमेरके पास है। इसका क्षेत्रफल लगभग १३ हजार वर्गमील है। आबू पर्वत मेवाड़की सीमासे मिला हुआ है। अरावली पर्वतमाला उसके एक सिरेसे दूसरे सिरे तक फैली हुई है। मेवाडकी वर्तमान राजधानी उदयपुर अस्सी मील लम्बे चौड़े पर्वतके बीचोबीच है। प्राचीन राजधानी चित्तौड़ भी पर्वत श्रेणीके ऊपर है। प्राय सारा मेवाड ही

पर्वतोंके बीच बसा हुआ है। पर्वतोंके बीच आज भी पुरानी वीर जाति भील स्वतन्त्रतापूर्वक निवास कर रही है। बानास नदी मेवाड होकर चम्बलमें गिरती है। इस वीर देशकी भूमि उर्वरा है। यहां पर गल्ला औररुई बहुतायतसे पैदा होती है। स्वतन्त्र अवस्थामें यह देश इन चीजोंका व्यापारकेन्द्र माना जाता था।

देशकी सम्पन्न अवस्था और उसके चित्ताकर्षक दृश्य ही आक्रमणकारियोंके मुहमें पानी लाने वाले बने। मेवाड़के शहरों में उदयपुर, चित्तौड, भीलवाड़ा, कपासन आदि विशेष उल्लेख नीय हैं। उदयपुर एक सुन्दर तालावके किनारे पर बसा हुआ है, जिसके तीन ओर पहाड़ हैं। यही कारण है कि इस शहरकी शोभा बहुत बढ गयी है। मेवाडके राणाओंने अपने अपने नाम पर अपने वीरतापूर्ण उद्योगोंके स्मारकमें यहा तालाब खुदाये। जिनसे पानीकी कमी कमी नहीं रही। इन तालाबों के अतिरिक्त बहुतसे प्राकृतिक तालाब भी हैं। राजपूतानेमें पानीको कमीकी जो बात प्रसिद्ध है वह मेवाडमें न समझनी चाहिये। तालाव इतने बड़े बडे हैं कि उन्हींके बीच राजमहल बने हुए हैं जिन तक डोंगियोंकी सहायतासे पहुचा जाता है। तालावोंमें समुद्रकी तरह बडी बडी भयानक लहरें आती हैं। जनता वायुसेवनके लिये इन तालावोंके किनारे गीष्म ऋतुमें बहुत बडी सख्यामें एकत्र होती है। महाराणाका वर्तमान महल जिसमें वे निवास करते हैं तालाबके किनारे पर है। इसी महलके पास पुराने महलके अग्रभागमें पीतलका एक बहुत बडा सूर्य लगा हुआ है जो सूर्यवंशका परिचय देनेवाला हैं। नये महलके नीचे बहुतसे बैठकखाने हैं जिनमेंसे एकमें उन

सादे भील उस पवित्र समाधिका पूरा परिचय रखते हैं जो वडे घने जङ्गलके वीचमें उदयपुरसे २० मीलकी दूरी पर हैं। यह समाधि वड़ी जीर्ण अवस्थामें है। भीलोने उसके ऊपर बास लगाकर पत्ते डाल रखे हैं। समाधिसे दो ढाई मील इधर उधर जङ्गलमें आज पर्य्यन्त भी वृक्षोंमे और पहाड़के गुप्त निरापद स्थानोंमें लोहेके बड़े बड़े कडे और कीलें गडी हुई दिखायी देती हैं। कहा जाता है कि इन्ही स्थानोंमें राज घरानेके लड़के लड़किया विदेशियोंके आक्रमणके समय टोक रियोंमें भर कर इन कीलों और कडोंसे बाध दिये जाते थे। समाधिके पास मिट्टीका एक खमा बना हुआ है। जिसके नीचे भील पूजा किया करते हैं।

मेवाड़में फलोकी भी कमी नहीं हैं। जो फल उत्पन्न होते हैं वे वडे मीठे होते हैं। अमरूद और अनार तो बहुतायतसे पैदा होते हैं। घोडे भी यहाके मजबूतीके लिये प्रसिद्ध हैं। पहाड़ी घोडे ऊ चे ऊ चे पहाडों पर ४० मील दूर चले जाते हैं।

विदेशियोंके आक्रमणके समय मेवाड़में जो सतिया चिता बनाकर भस्म हो गयी थीं उनकी समाधिया चित्तौडमे पर्वत के ऊपर और उदयपुरमें पहाड़के नीचे बहुत वड़े घेरेके भीतर बनी हुई हैं। मेवाडके अनेक वीरोंकी भी समाधिया देखनेमें आती हैं। श्राद्धके दिनोंमें वर्तमान महाराणा इन समाधियोंकी पूजा करने जाया करते हैं। उदयपुरकी समाधियोंके दर्शन सर्वसाधारणको वडी कठिनाईसे हो सकते हैं।

चित्तौडमें पहाडके ऊपर १२।१३ मील या इससे भी अधिक दूरीमें वड़ा भारी किला बनाया गया था, जिसके लाखों कमरे आज भी देखनेमें आते हैं। यह किला खडहरके रूपमें पडा

हुआ हैं। जगह जगह ईंट पत्थरके ढेर दिखायी देते हैं। किलेके खडहरोंमें महारानी पद्मिनीका महल, देवीका मन्दिर, जैन मन्दिर तथा जयस्तम्भ अब भी बचे हुए हैं। इस किलेके अन्दर ही कई तालाब हैं जो सब सूखे पडे हैं। पद्मिनी-गुफाके पास एक गोमुखी झरना अब भी वह रहा है। यह स्थान चित्तौडकी महासतियोंके स्थानके नामसे प्रसिद्ध है। गुफाके दो दरवाजे हैं जो बिल्कुल बन्द हैं। पद्मिनी स्मारक दो छतरियोंका बना हुआ है, जिसकी लोग अब भी पूजा करते हैं। किलेके भीतर जिन जिन राणाओंके महल हैं, उनमें ही उनकी समाधिया देखी जाती हैं। इन समाधियोंके ऊपर पत्थरके चौखटे पर पत्थरमें खुदी हुई मूर्त्तिया बनी हुई हैं। राणाओंकी मूर्त्तिया घोडोंपर सवार हैं। हाथमें माला और कमरमें ढाल बधी हुई हैं। स्त्रियोंकी मूर्त्तिया खडी हैं। उनका पहनाव पुराने ढङ्गका है। मुह खुला हुआ है। महलोंके भीतर अलग अलग मूर्त्तिया रहनेसे पता लगता है कि वह किसकी मूर्त्ति है। मूर्त्तिके नीचे किसीका नाम नहीं लिखा है। चितौड़में प्रवेश करने पर एक दरवाजे पर सरदार जयमलकी और दूसरे दरवाजे पर सरदार फतेहसिहकी छतरी है जो इतिहासमें जयमल और फत्ताके नामसे प्रसिद्ध हैं। बादशाह अकबरने इन दोनोकी वीरता पर मोहित होकर अपने दरबारमें इनकी प्रतिमूर्त्ति बनायी थी। चित्तौड़की तराईमें अलाउद्दीनकी खाई भी देखनेमें आती है। चित्तौड़के अधिवासी वहांकी चहदिवारी देखकर अब भी बताया करते हैं कि अमुक स्थानोंमें अमुक चढाईके गोले लगे थे। चित्तौड़में बहुत से शिलालेख पाये जाते हैं। वहांके अधिकारी न जाने किस कारणसे उन्हें पढ़ने नहीं देते।

उदयपुरमें ही आजकल महाराणा निवास करते हैं। सोलहवीं शताब्दीमें महाराणा उदयसिंह चित्तौड़से उदयपुर चले आये थे और उन्होंने अपने नाम पर यह राजधानी बनायी। उदयसागर नामक एक बहुत बड़ा तालाब भी खुदाया गया। पहले उदयपुरकी चहदीवारीके बाहर बस्ती न थी, परन्तु अब कुछ आबादी देखनेमें आती है। चहदीवारी का प्रधान दरवाजा सवेरे ६ बजे बाद खुलता और रातको ८ बजे बाद बन्द हो जाता है। ११ बजे छोटी खिड़की भी बन्द हो जाती है। उदयपुर चौक बाजार देखने लायक है। सोने-चादी सराफेकी दुकानें इसी चौकमें हैं। पुराने हथियार और पुराने चित्र भी यहा बहुत मिलते हैं परन्तु दाम ज्यादा हैं। मकान बहुत ऊ चे नहीं परन्तु देखनेमें अच्छे मालूम होते हैं। चौक बाजारसे ही महाराणाके महलोंको रास्ता गया है। उदयपुरमें आज लोग प्रातःस्मरणीय महाराणा प्रतापका नाम नहीं जानते, यह बड़े दुःखकी बात है। महाराणाके पुराने महलके पास जो उनका फीलखाना है उसमे महाराणा प्रतापके घोड़े चेतककी काठी और उनका भाला रखा हुआ है जो देखने योग्य हैं। इन्हे देखनेमे बड़ी कठिनाई होती है। उदयपुरमें यद्यपि महाराणा प्रतापका गुणगान नहीं होता, परन्तु आज भी यदि वहाकी स्त्रियोंको पता लग जाये कि कोई व्यक्ति उनके देश और महाराणाके गौरव सुन कर वहां पहुचा है तो वे उसकी बड़ी खातिरदारी करती हैं। फल बेचनेवाली स्त्रिया फलोंके दाम तक नहीं लेतीं। उदयपुरसे पश्चिम कुछ दूर पर हल्दीघाटीका मैदान है जहा पर महाराणा प्रताप और अकबरके बीच अन्तिम ऐतिहासिक युद्ध हुआ था। यह स्थान बड़ा ही भयानक है। रास्ता इतना सकीर्ण है कि दो

बैलगाडिया एक स्थान नहीं निकल सकती। मैदान चारों ओर पहाड़ोंसे घिरा हुआ है। बीच बीचमे वडे वडे समस्थल दिखायी देते हैं जहा पर सेनायें एकत्रित कर लडाई की जा सकती हैं। घाटीसे आठ दश मील आगे एक वड़े भारी पहाड़ी क़िलेके पास अब भी एक चबूतरा बना हुआ है जो चेतकका चबूतरा कहलाता है। यह वही स्थान हैं जहा पर महाराणा प्रतापके घोड़े चेतककी मृत्यु हुई थी और महाराणाकी श्री सगरसिहसे भेट हुई थी। इस चबूतरेकी वड़ी बुड़ी दशा है परन्तु प्रसन्नताकी बात है कि लोग उसे ते तो हैं।

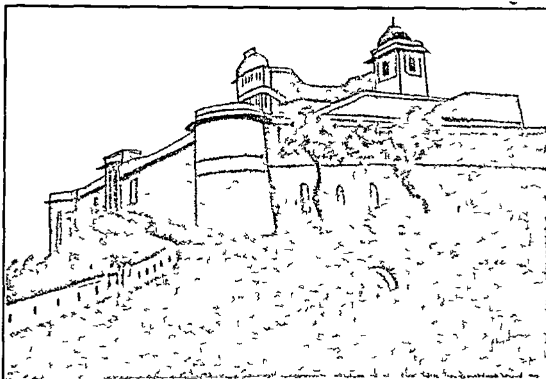
चित्तौडसे कुछ दूर कमलमीर दुर्ग है। जब कभी राणाओंके हाथसे चित्तौड निकल जाता था तो वे इसी किलेकी शरण लिया करते थे। आजकल यह भी खण्डहर हो गया है। वह किला चित्तौड़के समान तो नहीं है परन्तु वडा वहुत है। किलेके भीतर खेती होने लग गयी है। मेवाडमें और भी सैकडों छोटे छोटे किले और महल हैं जिनका वर्णन आवश्यक नहीं।

उदयपुरसे २२ मील दूर जैनियोंका प्रसिद्ध तीर्थ स्थान श्री केसरियाजीका मन्दिर है जो वडा प्राचीन है। इसमें खण्डित प्रतिमा है परन्तु ऊपरी भाग ठीक बना हुआ है। मन्दिर वडा ही दर्शनीय और नदीके पास एक शिलालेख है जो पुजारियोंकी कृपासे अब पढ़ा नही जाता। उस पर सेरों केसर चढ चुकी है। मन्दिरके पास ही गाव है जहा पर सब चीजें विकती हैं। केसरियाजी पर चढानेके लिये गाममें सौ रुपया सेरके हिसाबसे भी दूध नहीं मिल सकता यदि दूध पानी मिश्रत न हो। पानी मिश्रित दूध किसीको चढानेके लिये दिया नहीं जाता। मन्दिर पहाड़ोंके बीचमें है। चारों ओ थरोंके ऊचे ढेर दिखायी देते हैं।

अनुसार स्थान दे देते हैं। स्त्रिया मन्दिरमें प्रसाद चढानेके लिये पंक्तिया बाधकर बादाम फोडती, पिश्ता चुनती और अंगूरका साग बनाती हैं। सैकड़ों स्त्रिया प्रसाद तैयार करती हैं। बम्बई से फलोंकी हजारों टोकरिया आती हैं। स्टेशन पर फल और मेवाके ढेर लगे रहते हैं।

मन्दिरके पट समय पर खुलते हैं। पट खुलनेकी खबर सारे शहरमे फैल जाती है और बडी धूम मचती है। मन्दिरमें भीड पर कोडे चलते हैं और कोडेवाले कोडा मार कर पैसा मागा करते हैं। एक एक मन्दिरमें कई कोड़ेवाले होते हैं। गायन और नृत्यका समारोह रात दिन रहता है। गोसाई जी मन्दिरमें केवल एक बार जाते हैं। उनके स्नानकी बोली बुला करती है। जो अधिक डाक चढ़ाता है वह स्नान करानेका भार लेता है। स्त्रिया भी स्नान कराती हैं। नालोंसे गुलाब जल केवड़ा और इत्र बहता है और लोग नीचे खडे रह कर चरणोदक लेते हैं। चक्कियोंसे केशर पीसी जाती है तब वह तिलकोंके लिये काफी होती है। शामको गोसाई जी हवा खाने निकलते हैं तब उनके दर्शन सब कोई कर सकता है।

महाराणा प्रतापने प्रतिज्ञा की थी कि देश जब तक स्वाधीन न हो हमारे वंशज पत्तोंमें खायेंगे, घास पर सोयेंगे और कुटयामें रहेंगे। *उनकी इस प्रतिज्ञाकी रक्षाके लिये आज भी महाराणा* अपने थालके नीचे पत्ते, बिछौनेके नीचे घास रखवा लेते हैं और शयनालयके सामने एक छप्पर लगा रहता है। महाराणा हिन्दू धर्मके पूर्ण अनुयायी हैं। वे अपने भाई-बेटोंके साथ पुरानी प्रथाके अनुसार थाल लगवा कर भोजन करते हैं।



मेवाड़-दुर्ग ।

बसाया था, जहा पर उनके वशके कई राजाओंने राज किया। यह कवियोंका कहना है कि वल्लभीपुरसे ही मेवाड़ राजवश उत्पन्न हुआ। महाराज कनकसेनकी आठवीं पीढ़ीमें वल्लभीपुरमें शिलादित्य नामक राजा गद्दी पर बैठे। म्लेच्छोंने उनपर आक्रमण किया और राज्यको तहस नहस कर दिया। महाराज शिलादित्यके कई रानिया थीं। महारानी पुष्पवतीके सिवा और सब रानिया उनके साथ सती हो गयीं। पुष्पवती चन्द्रावती नामक स्थानके परमारोंके घरानेकी थीं। शिलादित्यको मृत्युके पहले ही रानीके गर्भ रह गया था। म्लेच्छोंके आक्रमणके पूर्व वे अपने पिताके घर चली गयी थीं। एक दिन वे किसी दूसरे गावमें देवीकी पूजा करने गयी थीं। राहमे उन्होंने शिलादित्यकी मृत्युका समाचार सुना।

रानी सती होना चाहती थीं परन्तु गर्भवती होनेके कारण ऐसा न कर सकीं। रानीने अपने पिताके घर लौटना उचित न समझा और एक पहाड़की गुफामें रहने लगीं, जहा पर उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। गुफाके पास एक बीरनगर नामक एक गाव था जिसमें कमलावती नामक ब्राह्मणी रहती थी। रानीने उसको अपना पुत्र सौंप कर कहा कि तुम इसका लालन पालन करना और वह जब बड़ा हो जाये तो क्षत्रिय कन्यासे उसका विवाह कर देना। कमलावतीके कोई सन्तान न थी इसलिये उसने बच्चेको बड़े प्यारसे पाला। बच्चेका नाम गोह रखा गया क्योंकि वह गुफामें पैदा हुआ था। जब कुमारकी अवस्था बड़ी होने लगी तो वह बड़ी धूम मचाने लगा। वह भीलोंके साथ रह कर शिकार करता और जरा भी न डरता। जब वह ११ वर्षका हुआ तो मेवाड़के ईदर नामक स्थानके भील

द्वितीय-परिच्छेद ।

वश-परिचय ।

भारतके शासक क्षत्रिय पुराने जमानेसे दो वशोंमें विभक्त हैं—सूर्यवशी और चन्द्रवशी । दोनों वशोंकी स्थापना एक ही साथ हुई थी । ससारके इतिहासमें इन दोनों वशोंकी स्थापनाके पहले किसी राजवशकी स्थापना नहीं हुई थी । सीरिया, चीन और मिश्रके राजवश बडे प्राचीन बताये जाते हैं परन्तु वे भी भारतके सूर्य वश और चन्द्रवशके पहलेके नहीं । सूर्यवंशके आदि पुरुप मनु और चन्द्रवशके आदि पुरुप बुध थे । पुराणोंमें इस बातका उल्लेख है कि दोनों वशोंके बीच वैवाहिक सम्बन्ध था । सूर्यवशमें प्रख्यात महाराज रामचन्द्रजी हुए । श्रीकृष्णचन्द्रजी युधिष्ठिर आदि चन्द्रवश में उत्पन्न हुए । मेवाडके शासक सूर्यवशी हैं । महाराज रामचन्द्र जी के दो पुत्र थे, जिनका नाम लव और कुश था । लवने लोह-कोटकी स्थापना की जो आजकल लाहौरके नामसे प्रसिद्ध है । इसी लोहकोटमें लवकी सन्तान बराबर शासन करती चली आयी । एक वशज कनकसेनने लगभग सन् १४४ ई० में लोहकोट से सौराष्ट्र प्रस्थान किया । सौराष्ट्र वर्तमान काठियावाड़ है । सौराष्ट्र पहुच कर उन्होंने विराटगढमें अपनी राजधानी बनायी । यह विराटगढ वही है जहा पच पाडवोंने द्रौपदी समेत एक वर्ष तक भेप बदल कर निवास किया था । इसके कई वर्ष बाद विजय-सेन नामक राजाने विजयपुर बसाया । विजयसेनने वल्लभीपुर भी

बसाया था, जहा पर उनके वंशके कई राजाओंने राज किया। यह कवियोंका कहना है कि बल्लभीपुरसे ही मेवाड़ राजवंश उत्पन्न हुआ। महाराज कनकसेनकी आठवीं पीढीमें बल्लभीपुरमें शिलादित्य नामक राजा गद्दी पर बैठे। म्लेच्छोंने उनपर आक्रमण किया और राज्यको तहस नहस कर दिया। महाराज शिलादित्यके कई रानिया थीं। महारानी पुष्पवतीके सिवा और सब रानिया उनके साथ सती हो गयीं। पुष्पवती चन्द्रावती नामक स्थानके परमारोंके घरानेकी थीं। शिलादित्यकी मृत्युके पहले ही रानीके गर्भ रह गया था। म्लेच्छोंके आक्रमणसे पूर्व वे अपने पिताके घर चली गयी थीं। एक दिन वे किसी दूसरे गावमें देवीकी पूजा करने गयी थीं। राहमें उन्होंने शिलादित्यकी मृत्युका समाचार सुना।

रानी सती होना चाहती थीं परन्तु गर्भवती होनेके कारण ऐसा न कर सकीं। रानीने अपने पिताके घर लौटना उचित न समझा और एक पहाड़की गुफामें रहने लगीं, जहा पर उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। गुफाके पास एक वीरनगर नामक एक गाव था जिसमें कमलावती नामक ब्राह्मणी रहती थी। रानीने उसको अपना पुत्र सौंप कर कहा कि तुम इसका लालन पालन करना और वह जब बडा हो जाये तो क्षत्रिय कन्यासे उसका विवाह कर देना। कमलावतीके कोई सन्तान न थी इसलिये उसने बच्चेको बड़े प्यारसे पाला। बच्चेका नाम गोह रखा गया क्योंकि वह गुफामें पैदा हुआ था। जब कुमारकी अवस्था बड़ी होने लगी तो वह बडी धूम मचाने लगा। वह भीलोंके साथ रह कर शिकार करता और जरा भी न डरता। जब वह ११ वर्षका हुआ तो मेवाड़के ईदर नामक स्थानके भील

राज मण्डलीकने उसे अपना सारा राज्य सौंप दिया क्योंकि भीलोंके बालकोंने खेलते हुए राजकुमारको अपना राजा चुन लिया था और राजा मण्डलीकके पुत्रने अपना अगूठा काट कर उसके माथे पर अपने रक्तसे तिलक कर दिया था। राजाने प्रसन्नता पूर्वक इस कार्यका समर्थन किया। गोहके वंशधर गहिलोतके नामसे पुकारे गये और गोहकी आठ पीढियां भीलों पर बराबर शासन करती रहीं। भील अपनी बातके इतने पक्के निकले कि उन्होंने अपनी परमप्रिय स्वाधीनताकी कुछ परवा न की। आठवीं पीढीमें राजा नागादित्य हुए। भीलों और नागादित्यके बीच कुछ मनमुटाव उत्पन्न हुआ। परिणाम यह हुआ कि भीलोंने उन्हें घेर कर एक दिन मार डाला जब कि वे एक हिरणका शिकार खेलनेके लिये जङ्गलमें निकले हुए थे। नागादित्यके तीन वर्षका एक लड़का था जो बप्पाके नामसे पुकारा जाता था। मन्त्रियोंको इस बालककी रक्षा की बडी चिन्ता हुई। बालक उपरोक्त कमलावती ब्राह्मणीके वंशधरोंको सौंप दिया गया जो गहिलोतोंके कुल पुरोहित बन गये थे। वह नागदानगरमें रखा गया जिसमें शिव उपासक ब्राह्मण अधिक रहते थे और जिसकी चारों ओर बड़ा घना जङ्गल था। पहाड़ी भील भी महादेवकी पूजा किया करते थे।

जब बालक बप्पाकी उम्र अधिक हुई तो वे जङ्गलमें जाकर गायें चराने लगे। सूर्यवंशी महाराज शिलादित्यके वंशधर आज ब्राह्मणोंकी गायें चरा रहे हैं। कौन कह सकता था कि इन्हीं गहिलोत कुल तिलक महाराज बपाके वंशधर राजपूतोंकी जीवन कहानी इतिहासमें प्रधान स्थान ग्रहण करेगी। मेवाड़में बप्पाके विषयमें चारणों और भाटोंने अनेक प्रकारकी अपूर्व

बातें लिख रखी हैं । कहा जाता है कि नागदानगरमें उस समय सोलकी वशीय कोई राजा राज्य किया करता था । जब बप्पा गौ चरानेके लिये जाया करते थे तो सावनके महीनेमें देखा करते थे कि बहुतसी बालिकाये जङ्गलमें झूलनोत्सव मनानेके लिये आया करती हैं । बप्पाका भी दिल इनके साथ खेलनेको चाहता था । एक दिन बप्पा उस ओर जा निकले जहा पर बालिकाओं की झुण्ड झूलनेकी तय्यारीमें लगा हुआ था । दैवयोगसे उस दिन बालिकाएं झूलनेके लिये लेनेके लिये घर जाना पडा तो खेलका समय न रहेगा । बप्पा एक जगह अपने कुछ साथियों समेत गौर चरा रहे थे । कुछ बालिकाए उनके पास गयीं और बोलीं कि हमारे लिये रस्सीका प्रबन्ध कर दो । बप्पाने उन्हें कृतज्ञ बनानेका अच्छा अवसर देखा । रस्सियोंकी कुछ कमी थी ही नहीं । बहुतसी गौओंके गलेमें रस्सिया पडी हुई थीं । बप्पाने कहा कि तुम मेरे साथ खेलो तो जितनी रस्सिया मागो उतनी ही दूगा । बालिकाए सब राजी हो गयी विवाह खेल आरम्भ किया गया । बालिकाओंमें सोलकी राजकुमारी भी थी । उसके वस्त्रका सिरा बप्पाके वस्त्रसे बाधा गया और सब लड़कियोंने मिल कर उन दोनोंके साथ एक आमके पेड़की परिक्रमा की । सयोगवश परिक्रमाए उतनी हुई जितनी कि वर वधूके विवाहके लिये यथेष्ट होती हैं । उस दिन इस बातकी किसीके मनमें कल्पना भी न थी कि आज खेलमें जो विवाह हो रहा है वह एक दिन सचा ही मान लिया जायेगा । इस विवाह खेलके कारण ही बप्पाका भाग चमक गया ।

बालिकाए राजकुमारीके साथ अपना खेल पूरा कर घर चली गयीं । एक दिन जब राजकुमारीके विवाहका प्रस्ताव

राज मण्डलीकने उसे अपना सारा राज्य सौंप दिया क्योंकि भीलोंके बालकोंने खेलते हुए राजकुमारको अपना राजा चुन लिया था और राजा मण्डलीकके पुत्रने अपना अंगूठा काट कर उसके माथे पर अपने रक्तसे तिलक कर दिया था। राजाने प्रसन्नता पूर्वक इस कार्यका समर्थन किया। गोहके वंशधर गहिलोतके नामसे पुकारे गये और गोहकी आठ पीढ़िया भीलों पर बराबर शासन करती रहीं। भील अपनी बातके इतने पक्के निकले कि उन्होंने अपनी परमप्रिय स्वाधीनताकी कुछ परवा न की। आठवीं पीढ़ीमें राजा नागादित्य हुए। भीलों और नागादित्यके बीच कुछ मनमुटाव उत्पन्न हुआ। परिणाम यह हुआ कि भीलोंने उन्हें घेर कर एक दिन मार डाला जब कि वे एक हिरणका शिकार खेलनेके लिये जङ्गलमें निकले हुए थे। नागादित्यके तीन वर्षका एक लडका था जो बप्पाके नामसे पुकारा जाता था। मन्त्रियोंको इस बालककी रक्षा की बड़ी चिन्ता हुई। बालक उपरोक्त कमलावती ब्राह्मणीके वंशधरोंको सौंप दिया गया जो गहिलोतोंके कुल पुरोहित बन गये थे। वह नागदानगरमें रखा गया जिसमें शिव उपासक ब्राह्मण अधिक रहते थे और जिसकी चारों ओर बड़ा घना जङ्गल था। पहाडी भील भी महादेवकी पूजा किया करते थे।

जब बालक बप्पाकी उम्र अधिक हुई तो वे जङ्गलमें जाकर गायें चराने लगे। सूर्यवंशी महाराज शिलादित्यके वंशधर आज ब्राह्मणोंकी गायें चरा रहे हैं। कौन कह सकता था कि इन्हीं गहिलोत कुल तिलक महाराज बपाके वंशधर राजपूतोंकी जीवन कहानी इतिहासमें प्रधान स्थान ग्रहण करेगी। मेवाड़में बप्पाके विषयमें चारणों और भाटोंने अनेक प्रकारकी अपूर्व

बातें लिख रखी हैं। कहा जाता है कि नागदानगरमें उस समय सोलकी वशीय कोई राजा राज्य किया करता था। जब वप्पा गौ चरानेके लिये जाया करते थे तो सावनके महीनेमें देखा करते थे कि बहुतसी बालिकाये जङ्गलमें झूलनोत्सव मनानेके लिये आया करती हैं। वप्पाका भी दिल इनके साथ खेलनेको चाहता था। एक दिन बप्पा उस ओर जा निकले जहा पर बालिकाओं की मुण्ड झूलनेकी तय्यारीमें लगा हुआ था। दैवयोगसे उस दिन बालिकाए' झूलनेके लिये लेनेके लिये घर जाना पडा तो खेलका समय न रहेगा। बप्पा एक जगह अपने कुछ साथियों समेत गौर चरा रहे थे। कुछ बालिकाए उनके पास गयीं और बोलीं कि हमारे लिये रस्सीका प्रबन्ध कर दो। बप्पाने उन्हे कृतज्ञ बनानेका अच्छा अवसर देखा। रस्सियोंकी कुछ कमी थी ही नहीं। बहुतसी गौओंके गलेमें रस्सिया पडी हुई थीं। बप्पाने कहा कि तुम मेरे साथ खेलो तो जितनी रस्सिया मागो उतनी ही दूगा। बालिकाए सब राजी हो गयीं विवाह खेल आरम्भ किया गया। बालिकाओमें सोलकी राजकुमारी भी थी। उसके वस्त्रका सिरा वप्पाके वस्त्रसे बाधा गया और सब लड़कियोंने मिल कर इन दोनोंके साथ एक आमके पेड़की परिक्रमा की। सयोगवश परिक्रमाए उतनी हुई जितनी कि वर वधूके विवाहके लिये यथेष्ट होती हैं। उस दिन इस बातकी किसीके मनमें कल्पना भी न थी कि आज खेलमें जो विवाह हो रहा है वह एक दिन सच्चा ही मान लिया जायेगा। इस विवाह खेलके कारण ही वप्पाका भाग चमक गया।

बालिकाए राजकुमारीके साथ अपना खेल पूरा कर घर चली गयीं। एक दिन [illegible] ारीके विवाहका प्रस्ताव

उठा तो एक ज्योतिषीकी यह बात सुन कर सबको आश्चर्यमें प
जाना पड़ा कि राजकुमारीका तो विवाह हो चुका है। राजा
क्रोधकी सीमा न रही। चारों ओर तलाशी होने लगी।
राजकुमारीके साथ किसने विवाह किया है। विवाह खेलकी ब
तो कई बालिकाओंको मालूम ही थी। सब भेद खुल गया।
बप्पाने अपने ऊपर राजक्रोध उपस्थित देख भाग जाना ही उचि
समझा। वे अपने साथ बाली और देव नामक दो भीलोंक
लेकर पहाड़ोंमें भाग गये। उन्होंने अपने साथियोंसे प्रतिज्ञा
करायी कि अन्त तक विपत्तिमें हम तुम्हारा साथ देंगे।

उन दिनों चित्तौड़में परमार वंशकी शाखा मौर्य वंशके एक
राजा राज्य करते थे जिनका नाम मान था। बप्पाकी माता प
मार वंशीय थीं इसलिये राजा मान बप्पाके मामा थे। बप्पा अपने
साथियों समेत राजाके पास चले आये। महाराज मानने उन्हें
अपना सामन्त बना कर उनके निर्वाहके लिये कुछ भूमि दे दी।
महाराजके पुराने सामन्त इस कार्यसे बड़े असन्तुष्ट हुए। उसी
समय एक मुसल्मान आक्रमणकारीने चित्तौड़ पर धावा किया।
यह बात प्राय निश्चित हो चुकी है कि आक्रमणकारी मुहम्मद
बिनकासिम था, जिसने सन् ७१२ ई० में सिन्ध पार कर चढ़ाई
की थी। आक्रमणके समय जब सहायताके लिये सब सामन्त
बुलाये गये तो उन्होंने ताना मार कर कहा कि आप अपने
भानजेसे सहायता लीजिये। सबने अपने पासकी भूमि भी
त्याग दी। बप्पा जरा भी हतोत्साह न हुए और अकेले सामना
करनेको तैयार हो गये। सामन्तोंने भूमि तो त्याग दी परन्तु
लज्जावश उन्होंने चित्तौड़की रक्षा करनी उचित समझी। सामन्त
आक्रमणकारीका सामना करने गये और बप्पाके साथ लड़े।

त्रु मार भगाया गया। वप्पा वीरता दिखा कर चित्तौड वापस लौटे। रणविजयोन्मत्त वीरने अपनी विजयी सेना खुरासान की ओर बढायी। उस समय गजनीमें सलीम नामक एक मुसल्मानका शासन था। वप्पाकी सेना आती देख वह घबराया। वप्पाने उस पर विजय प्राप्त की और उसकी लड़कीसे विवाह कर लिया। वहांसे बहुतसे खुराशानी सैनिक लेकर वे चित्तौड लौटे। इधर चित्तौड़के सामन्तोंने असन्तुष्ट होकर महाराज मानके विरुद्ध शिर उठाया। उन्होंने वीरशिरोमणि वप्पाको अपना सेनापति बना कर चित्तौड पर आक्रमण किया, और महाराज मानको गद्दीसे उतार कर वप्पाका राजतिलक किया। महाराज वप्पाका सोलकी राजकुमारीके साथ अन्तमें विवाह हो गया और सब बालिकायें भी उन्हींसे व्याही गयीं।

मेवाड वालोंने वप्पाको 'हिन्दू सूर्य' 'राजगुरु' और 'सार्वभौम' की उपाधियां प्रदान कीं। चित्तौडकी गद्दी पा जानेके बाद महाराज वप्पाने खुरासान आदि देशों पर आक्रमण किया और बहुतसी नयी स्त्रियोंसे विवाह किया। उनके कुल २२८ पुत्र हुए। जिस समय उनकी मृत्यु हुई पुत्रोंमें इस बातका विवाद हुआ कि उनकी लाश जलायी जाये या जमीनमें गाड़ दी जाये। परन्तु अन्तमें देखा गया कि लाशका कुछ पता ही नहीं। कपड़ेके नीचे कमलके फूल पडे हैं।

वप्पाकी मृत्युके बाद जो कोई राणा हुए उनका विशेष वर्णन नहीं पाया जाता। 'खोमान रासा' में महाराणा खोमानकी वीरताका वर्णन है। खोमान सन् ८१२ ई० में चित्तौड़की गद्दी पर बैठे। उनके शासनकालमें हेरूनुल रशीदके पुत्र मामूनने चित्तौड़ पर चढाई की। महाराणा खोमानने २८ बडे बड़े सर-

दारोंके साथ उनका बडी दिलेरीके साथ सामना करना नीं
किया। मुसल्मानोंको कर देना स्वीकार न कर वे म
रक्षाके लिये रणस्थलमें कूद पड़े। क्षत्रियोंने ऐसी वीरता
कि मुसल्मानोंको हार मान भाग जाना पडा। विजयी मा
मुसल्मान सेनापतिको गिरफ्तार कर लिया और उसे
चित्तौड ले आये। इसके बाद २० वर्ष तक चित्तौड पर
मुसल्मानी आक्रमण न हुआ। चित्तौड़की स्वतन्त्रता
रखनेके लिये महाराणा खोमानने चौबीस बार युद्ध किया। महा
राणाके पुत्र मङ्गलसिंह अपने पिताकी हत्या कर गद्दी पर बै
परन्तु वे इतना बडा पाप कर बहुत दिन राजसुख न भोग सके
सरदारोंने उन्हें शीघ्र ही गद्दीसे उतार दिया। महाराणा खोमान
के दूसरे पुत्र भर्तृभाट गद्दी पर बैठाये गये। इनके बाद पन्द्र
पीढ़ी तक जो मेवाड़ शासक हुए उनका विशेष वर्णन नहीं
मिलता। केवल इतना पता लगता है कि अजमेरके चौहानोंके
साथ मेवाड वालोंकी कई बार प्रीति और विवाहके सम्बन्ध हुआ
और कभी कभी दोनो रणभूमिमें एक दूसरेका सामना करनेके
लिये उतरे।

—:—

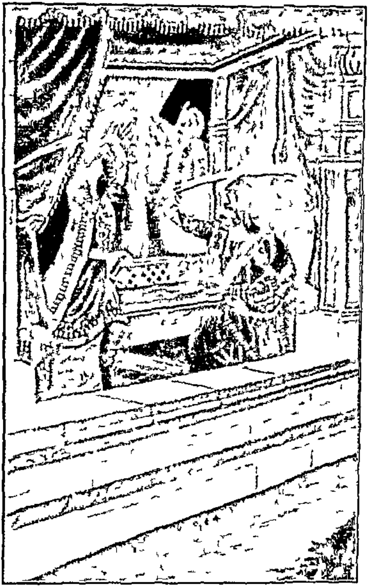
तृतीय-परिच्छेद ।

समरसिंह ।

१२ वीं शताब्दीमें चित्तौड़की गद्दी पर महाराणा समरसिंह बैठे जिनके जीवनकी घटनाएं विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं। जिस समय वे गद्दीपर बैठे उस समय भारतमें अनेक छोटे छोटे राज्य बन चुके थे, परन्तु दिल्लीकी गद्दी प्रधान मानी जाती थी। कुवर राशी महाराज अनङ्गपाल भारतके अन्तिम हिन्दू सम्राट दिल्लीके राजसिंहासन पर विराजमान होकर चल बसे थे। उनके कोई पुत्र न था, इस लिये इस बातकी बड़ी चिन्ता हुई कि उनका उत्तराधिकारी कौन हो। महाराजने अपनी दोनों कन्याओंका विवाह अपनी जीवित अवस्थामें ही कर दिया था। बड़ी राजकुमारीका विवाह कन्नौजके राठौर नरेशके साथ और छोटीका अजमेरके चौहान वंशमें किया गया। बड़ीसे जयचन्द और छोटीसे पृथ्वीराज उत्पन्न हुए। महाराज अनङ्गपालने जयचन्दको अपने राज्यका कुछ अंश और पृथ्वीराजके गुणोंसे मोहित होकर उन्हें दिल्लीकी गद्दीका उत्तराधिकारी बनाया। जयचन्द बड़ी राजकुमारीका पुत्र था और अवस्थामें भी बड़ा था, इस लिये उसे आशा थी कि दिल्लीका राजसिंहासन मुझे ही मिलेगा और इस तरह सारे भारतके शासनकी बागडोर मेरे हाथ आ जायेगी परन्तु जब उसकी सभी आशाओं पर पानी फिर गया तो वह पृथ्वीराजके प्रति ईर्ष्या दिखाने लग गया। जब पृथ्वीराज राज-

राजकुमारीने अपने प्रेमकी सूचना पृथ्वीराज तक पहुचा थी और उन्होंने भी अपना कर्तव्य निश्चत कर लिया था। कन्नौजमें जब स्वयम्बर-मण्डप तैयार हो गया और विभिन्न के राजाओंके लिये स्थान निर्दिष्ट कर दिये गये तो महाराज पृथ्वी राजकी मूर्ति दरवाजे पर द्वारपालके स्थान पर उनका करनेके लिये बैठायी गयी। महाराज पृथ्वीराज पहलेसे ही थे। जब राजकुमारीने चारों ओर घूम कर ृ िराजको गलेमें माला डाली, तो सारे मण्डपमें खलबली मच गयी। कहा जाता है कि महाराज पृथ्वीराज कन्नौज पहुच कर मण्डपके पास किसी स्थानमें छिपे हुए थे। अपनी प्रतिमाके गलेमें माला गिरते देख वे सहसा सामने आये और राजकुमारीको अपने घोड़े पर बैठा कर तुरन्त ही दिल्लीको रवाना हो गये। जयचन्दकी सेनाने उनका पीछा किया। पृथ्वीराज अपने साथ जो वीर लाये थे, उन्होंने जयचन्दके आदमियोंको राहमें अटकाये रक्खा और महाराज पृथ्वीराज सकुशल दिल्ली पहुच गये।

इस घटनासे जयचन्दके क्षुद्र हृदयमें विद्वेषकी ज्वाला और भी जोरोंसे भमक उठी। अबकी बार उसने शहाबुद्दीन गोरीको फिर भारत पर आक्रमण करनेके लिये बुला भेजा और अपनी ओरसे सहायताका वचन दिया। शहाबुद्दीन बड़े दलबलके साथ कुरुक्षेत्र के मैदानमें आ डटा। दिल्लीश्वरने इस विपत्तिमें फिर महाराणा समरसिहका स्मरण किया। महाराणा इस समय अपना जीवन राज्यकार्यों के किसी विशेष झमटोंमें न बिता कर धर्मकार्यमें ही लगे हुए थे। आज पर्यन्त भी मेवाड़में वे योगीश्वरके नामसे पुकारे जाते हैं। मेवाडके चारणोंका कहना है कि महाराणा समरसिंह हाथमें माला लेकर मृग-चर्मपर बैठ कर ही राज्यशासन करते थे।



संयुक्ता स्वयम्वरमें राणा संग्रामसिंह ।

जस समय पृथ्वीराजका निमन्त्रण उन्हें मिला तो महाराणी पृथाने कई बार उनसे कहा कि जब आप सब कार्यों से विरक्त हो चुके हैं, तो फिर युद्धमें भाग लेने क्यों जाते हैं ? महाराणाने इसके उत्तर में कहा कि यह आक्रमण मुझ पर नहीं सारे देश पर है। स्वदेशानुराग और स्वतन्त्रताके मोहिनी मन्त्रने महाराणाके हाथसे माला रखवाकर फिर उन्हें खड्ग धारण करनेके लिये बाध्य किया। महाराणा अपने सामन्त और इष्ट मित्रोंको साथ लेकर बडी भारी सेनाके साथ दिल्लीके लिये रवाना हुए, परन्तु अबकी बार चित्तौड़ छोड़ते हुए न जाने उनका हृदय क्यो कांपा। उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि कोई कानमें कह रहा है कि अबकी बार चित्तौड़को हृदय भर कर देख लो। कई प्रकारके अशकुन भी हुए। महाराणा समरसिंहने इन सब कारणोंसे राज्य शासनका भार अपने छोटे पुत्र कर्णसिंहके हाथमें दे दिया। महाराणीने अपने पतिको अकेला न भेजा। ये स्वय भी उनके साथ हो गयीं।
दिल्लीमें महाराजके स्वागतके लिये बड़ी धूम रही। महाराज पृथ्वीराज कविवर चन्दके साथ कई कोस चल कर उन्हें लेनेको पहुचे। ...हा जाता है कि संयुक्ताके विवाहके पश्चात् महाराज महलोंसे ...त कम बाहर निकलते थे। अपने हृदयसम्राट्के दर्शन कर ...की जनताने बड़ा आनन्द मनाया। जब महाराणाने प्रश्न ... कि शत्रुको नीचा दिखानेका क्या उपाय सोचा गया है, तो ...ह उत्तर सुनकर बड़ा दुःख हुआ कि अब तक कोई उपाय ...आ है। तब दिल्लीश्वरकी सेना एकत्र कर महाराणा स्वय ... बने।
...त्रके मैदानमें घग्गर ... महासमर आर...
... तीन दिन,तक बड़ा ... किये रहा

पहले दिन तो किसीकी जय न हुई, परन्तु तीसरे दिन भाग्याकाशमें घोर काली घटाए दिखाई देने लगी। शाहबुद्दीनको भारतसे भगानेके लिये सारे देशके हिन्दू एकत्र हुए थे, परन्तु इस बार शहाबुद्दीनका पक्ष लेकर भारतके पैरोंमें दासत्वकी बेड़िया पहनानेके लिये कुलकलङ्की जयचन्द और उसके सहायक मित्रोंने अपने कलुषित हृदयका परिचय दिया। जिस दिन जयचन्दके क्षुद्र हृदयमें द्वेषाग्नि प्रज्वलित हुई थी, उसी दिन निश्चय हो चुका था कि यह अग्नि भारतीय स्वतन्त्रताको भस्म कर देगी। कुरुक्षेत्रके युद्धके तीसरे दिन जो प्रात काल हुआ वह भारतके गौरवपूर्ण समयकी अन्तिम घडी थी। जिस समय महाराणा समरसिंह ईश्वरोपासना कर रहे थे, मुसलमानोंने हिन्दू सेना पर आक्रमण किया। भयानक युद्ध प्रारम्भ हो गया। महाराणा समरसिंह २३ हजार राजपूत सेना तैयार कर सके। इतनी अल्प सेनाके साथ ही हिन्दू कुल तिलक महाराणाने मातृभूमिकी स्वतन्त्रताके लिये दिल खोलकर अपनी वीरता दिखायी। अन्तमें मुसल्मानोंकी बढी हुई सेनाके सामने उनके पैर न जमे और वे रणक्षेत्रमें अपने पुत्र समेत काम आये। इधर मुसल्मानों ने महाराज पृथ्वीराजको भी बन्दी कर लिया। पृथ्वीराजके पुत्र रणसिंह भी मारे गये। चौहान कुलका प्रदीप बुझ गया, महाराज युधिष्ठिरकी लीलाभूमि श्मशान बन गयी। महाराणी पृथा और महाराणी सयुक्ताने चितामें भस्म होकर क्षत्रिय धर्मका पालन किया।

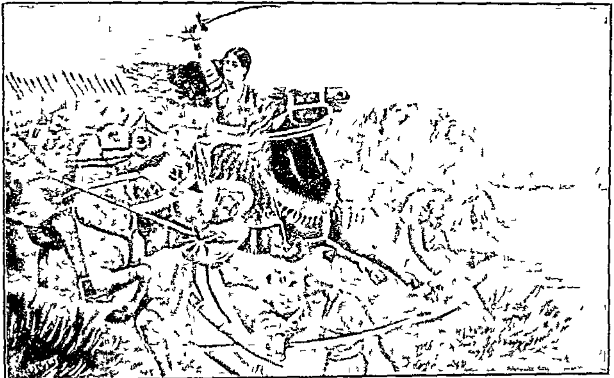
विश्वासघाती शहाबुद्दीन दिल्लीकी विजयसे उन्मत्त होकर अपने कर्त्तव्यको भूल गया और कन्नौजके राजा जयचन्द पर उसने चढाई कर दी। जयचन्द जरा भी तैयार न था। वह



राजपूत रमणीकी चिता प्रदक्षिणा।

हाबुद्दीनके भयसे एक नावमे सवार होकर भागा। नाव पानीमें व गयी और कलङ्की जयचन्द पानीमें डूब गया। यद्यपि उसकी ाकिर्ति सदाके लिये अमर हो गयी। कविवर चन्द देवीके न्दिरमें बैठे हुए 'रासे।' लिख रहे थे। उन्होंने स्वय इस बातका ल्लेख किया है कि पृथ्वीराजकी दोनों आखें फोड दी गयी और न्हें लोहेकी जञ्जीरे पहना कर शहाबुद्दीनने गजनीके जेलखाने को रवाना कर दिया। एक दिन था जब कि शहाबुद्दीनने महाराज पृथ्वीराजके सामने गौ बन कर प्राण भिक्षा मागी थी, परन्तु विजयी होने पर वह उस कृपाको भूल गया और महाराज के साथ उसने ऐसा नीचतापूर्ण वर्ताव किया।

कुछ दिनों बाद कविवर चन्दने विचारा कि गजनीके जेलसे महाराज पृथ्वीराजका उद्धार करना चाहिये। इसलिये वे गजनी पहुचे। बड़ी कठिनाईसे उन्हे महाराजसे मिलनेकी आज्ञा मिली। जब जेलखानेमें महाराज पृथ्वीराजने चन्दके आनेकी खबर पायी तो वे हर्षमें इतने उत्तेजित हो गये कि लोहेकी भारी जञ्जीरों समेत खडे हो गये। जब बादशाहको यह बात मालूम हुई तो उसने हुक्म दिया कि सौ मनकी लोहेकी साकल उनके गलेमें और डाल दी जाये। जब कविवरने देखा कि मेरे कारण महा राजका दु ख और भी बढ गया तो वे बडे दु खी हुए। उन्होंने बादशाहसे जाकर कहा कि महाराज पृथ्वीराजकी आखें चली गयी हैं। उन्हे विशेष कष्ट देना उचित नहीं। आपको उचित था कि उनके बहुतसे गुण देखते। शहाबुद्दीनको यह बात जच गयी और महाराज पृथ्वीराज द्वारा शब्द वेध किया जाना निश्चित हुआ। बड़े मोटे मोटे सात तवे बनवाये गये और दीवालमें जड़वा दिये गये। महाराज पृथ्वीराज दरबारमें लाग्ये



कर्णदेवीका युद्ध ।

भी पूर्ण हुई कि दोनों एक ही साथ मरेंगे। महाराज पृथ्वीराज के भक्तने जेलकी दारुण अवस्थासे अपने स्वामीका उद्धार किया।

महाराणा समरसिंह दिल्ली जानेके पूर्व यद्यपि राजकुमार करणसिंहको राजतिलक कर गये थे, परन्तु उनकी अवस्था छोटी होनेके कारण वे राज्य शासन न करते थे। उनकी माता कर्णदेवी सारा शासन कार्य किया करती थीं। चित्तौड़की गद्दी पर एक बालकको बैठा देख कर दिल्लीके मुसल्मान शासक कुतुबुद्दीन ऐबकने मेवाडकी पवित्र भूमि पर आक्रमण कर दिया। महारानी कर्णदेवीने इस आक्रमणको उपस्थित देख स्वयं रणस्थलमें जानेका विचार किया। सारे चित्तौड़में रणडङ्का पिटवाया गया। चित्तौडकी विपत्तिके समय सभी सामन्त अपनी अपनी फौजें सजा कर लाये। वीर माता कर्णदेवीने स्वयं लोहेका बख्तर पहना। जिन हाथोंमें सदा सोने और जवाहरातोंके कङ्कण पहने जाते थे, आज उन्हीं हाथोंमें देशकी स्वाधीनताके लिये लोहेके अस्त्र सुशोभित दिखायी देने लगे। महारानीने साक्षात रणचण्डीका वेष धारण कर स्वयं सेनाकी हिरौल (अगवानी) ग्रहण की। अम्बरके निकट जहां कुतुबुद्दीन छावनी डाले पडा हुआ था, महारानीकी वीर सेनाने आक्रमण किया। भयानक संग्राम प्रारम्भ हो गया। क्षत्राणीके प्रचण्ड तेजके सामने भला कौन ठहर सक्ता है। कुतुबुद्दीनकी सारी सेना मारी गयी। जा थोड़ेसे सैनिक बचे उन्होंने भाग कर अपनी जान बचायी। नवाब कुतुबुद्दीन भी बड़ी कठिनाईसे अपनी जान बचा कर भागा। मेवाडके चारण आज पर्यन्त भी इस युद्धका वर्णन बड़े सुन्दर कवित्तोंमें बना कर गाया करते हैं। महारानी कर्ण-

देवीने चित्तौडका शासन बड़ी बुद्धिमानीसे किया। सामन्तोंका परस्परका विरोध और ईर्षा उन्होंने मिटा दी। सन् ११९३ ई० मे राजकुमार कर्णने शासनका भार अपने हाथमें लिया। थोड़े ही दिनों बाद महाराणा कर्ण स्वर्ग सिधार गये। उनके पुत्र राहुरू सन् १२०१ में गद्दी पर बैठे। इनके समयमें यवन सेना पति शमशुद्दीनने चित्तौड़ पर चढाई की। वह चित्तौड तक पहुचने भी न पाया था कि नगरकोटके मैदानमें घेर लिया गया। उसकी सारी सेना महाराणा राहुकने काट डाली। शमशुद्दीनका कहीं पता तक न चला। महाराणाने इस विजयोपलक्षमें शिशोद नामक गाव बसाया। तभीसे मेवाड़के महाराणा शिशोदिया कहलाये। महाराणा राहुकने ३८ वर्ष तक राज कर स्वर्गयात्रा की। इनके नौ पीढी पीछे तक कोई विशेष उल्लेखनीय बात मेवाडके भट्ट ग्रन्थोंमें नही पायी जाती। कई बार विधर्मियोंके त्राससे काशी, गया आदि हिन्दूतीर्थोंका उद्धार करनेके लिये चित्तौडके महाराणाओंको खड्ग धारण करनी पड़ी। कई महाराणाओंने हिन्दू धर्मकी रक्षामें अपने प्राण गंवाये।

चतुर्थ-परिच्छेद ।

लक्ष्मणसिंह और पद्मिनी ।

सन् १२७५ ई० में क्षत्रियकुल चूडामणि वीरकेसरी महाराणा लक्ष्मणसिंह चित्तौड़की गद्दी पर बैठे। जिस समय आपका अभिषेक चित्तौड़के परम पवित्र राजसिंहासन पर हुआ, उस समय आपकी अवस्था कुछ कम थी, इसलिये गद्दी पर पूर्ण अधिकार होने पर भी आपके चाचा राणा भीमसिंह राज्यकी देख रेख किया करते थे। सिंहलनिवासी चौहान कुलोद्भूत हमीरशङ्खकी परम रूपवती कन्या पद्मिनीदेवीके साथ राणा भीमसिंहका विवाह हुआ था। रानी पद्मिनीकी सुन्दरता देश विदेशोंमें इतनी विख्यात थी कि वही सुन्दरता मेवाड़के गौरवको भस्म करनेके लिये अग्निके समान हो गयी। जब पद्मिनीजीके सौन्दर्यकी बात दिल्लीके अधिपति अलाउद्दीन खिलजीने सुनी तो वह उन्हें पानेके लिये विकल हो उठा। वह रातदिन इसी चिन्तामें रहने लगा कि पद्मिनी किस तरह दिल्लीके महलोंमें लायी जायें। अन्तमें उसने अपनी सेना सजा कर इस वीर हिन्दू रमणीको पानेके लिये चित्तौड़ पर चढ़ाई कर दी। अलाउद्दीनको कई दिन तक चित्तौड़के चारों ओर घेरा डाल कर पड़े रहना पड़ा। पद्मिनीजीको प्राप्त करनेके लिये उसने पूर्ण चेष्टा की, परन्तु जब कोई परिणाम न निकला तो अलाउद्दीनने ढिंढोरा पिटवा दिया कि पद्मिनीको पाते ही मैं चित्तौड़ त्याग कर जानेको तैयार हूं।

इस समाचारको पाते ही स्वाभिमानी क्षत्रिय वीर क्रोधसे उन्मत्त हो उठे। कई दिनों तक जब ढिढोरेका कोई परिणाम न हुआ, तो अलाउद्दीनने भीमसिंहजीके पास दूत भेज कर कहलाया कि एक जरासी बातके लिये इतने मनुष्योंकी हत्या दोनों ओर होनी उचित नहीं। मैंने राणीजीके रूपलावण्यकी प्रशंसा सुनी है। यदि मुझे किसी तरह वे एक बार दिखा दी जायें, तो मैं वापस लौट जानेको तैयार हूं। राणा भीमसिंहने यह समझ कर कि वृथा युद्धसे क्या लाभ है, तथा लक्ष्मणसिंहके राज्यशासन ग्रहण करनेके पूर्व कोई युद्ध न हो तो अच्छा है, यह बात सोच कर महाराणाजीके प्रतिवाद करने पर भी अलाउद्दीनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। महाराणा लक्ष्मणसिंहके महलके एक कमरेमें एक शीशा लगाया गया और इसी स्थान पर अलाउद्दीन के स्वागतकी सारी तैयारी की गयी। अलाउद्दीन भी यह बात अच्छी तरह जानता था कि राजपूत विश्वासघाती नहीं होते। एक बार जिस बातको कह देंगे, उसे वे अवश्य पूरा करेंगे। इसी धारणाके बलपर उसे शत्रु-नगरीमें कुछ थोड़ेसे सैनिक लेकर प्रवेश करनेका साहस हो सका। जिस अलाउद्दीनने पवित्र शिशोदिया कुलमें कलङ्क लगाना चाहा था, जिसके घृणित प्रस्ताव को सुन कर शिशोदिया जातिका रक्त उबल उठा था, वही शत्रु अतिथि होनेके कारण राजमहलमें बिना विरोध प्रवेश कर सका। भीमसिंहने उसका पूर्ण सत्कार किया। अलाउद्दीनने भी बहुतसी मीठी बातें बनायीं, अपराधोंके लिये क्षमा मांगी। दर्पणमें पद्मिनीजीकी प्रतिमूर्ति उसे दिखायी गयी। अनुपम जगद्विमोहिनी सुन्दरता देख कर अलाउद्दीन बेहोश हो गया। पास ही खड़े वीरवर गोरा और बादलने अच्छा अवसर समझ कर तल-

वार निकाली और अलाउद्दीनकी नीचताका अन्त कर देनेके लिये आगे बढे, परन्तु धर्मप्राण राणा भीमसिंहने उन्हें ऐसा करनेसे रोक दिया। गोरा और बादलकी तलवारें म्यानके भीतर चली गयीं। दुराचारी जब कुछ देर बाद होशमें आया तो उसे पद्मिनी की प्रतिमूर्तिके सिवा और कुछ नहीं दिखायी दे रहा था। अलाउद्दीनने चलनेकी तैयारी की। राणा भीमसिंह उसे पहुचाने के लिये अकेले ही चित्तौड़के बाहर तक आये। किलेके दरवाजेके बाहर बादशाहका इशारा पाते ही कुछ अस्त्रधारी सिपाही गुप्त स्थानसे बाहर निकल पडे और उन्होंने राणाको बन्दी कर लिया। विश्वासघातियोंने राणाजीकी धर्मपरायणता और अतिथि सत्कार का यह पुरस्कार दिया। राणाको बन्दी कर अलाउद्दीनने ढिंढोरा पिटवा दिया कि यदि मुझे पद्मिनी मिल जायेंगी तो मैं राणाको छोड़ दूगा। विश्वासघातका यह समाचार चित्तौड पहुच गया। जगह जगह चर्चा होने लगी। यदि युद्धमे राणा बन्दी हो जाते तो क्षत्रियोंको जरा भी द ख न होता। सब सोचने लगे कि अब क्या होगा। क्या राणाजीके बदले पद्मनीजीको दिया जायेगा या खड्गकी सहायतासे राणाका उद्धार किया जायगा। सारे मेवाड़में इस बातकी चर्चा फैल गयी और सब जनता महाराणा तथा पद्मिनीजीके निर्णयकी ओर बड़ी व्यग्रतासे देखने लगी। महाराणा लक्ष्मणसिंह, रानी पद्मिनी, गोरा और बादलने बैठ कर निश्चय किया कि कर्त्तव्य क्या है। शीघ्र ही लोगोंने सुना कि महाराणाके परामर्शसे निश्चय हो गया है कि राणाजीके उद्धारके लिये पद्मिनीजी स्वय बादशाहके पास चली जायेंगी।

इस बातसे चित्तौड और शिशोदिया वंशके कुछ क्षत्रियोंमें बड़ी अशान्ति उत्पन्न हुई। क्या यथार्थमें हिन्दू रमणियोंका आदर्श

इस समाचारको पाते ही स्वाभिमानी क्षत्रिय वीर क्रोधसे उन्मत्त हो उठे। कई दिनों तक जब ढिंढोरेका कोई परिणाम न हुआ, तो अलाउद्दीनने भीमसिंहजीके पास दूत भेज कर कहलाया कि एक जरासी बातके लिये इतने मनुष्योंकी हत्या दोनों ओर होनी उचित नहीं। मैंने राणीजीके रूपलावण्यकी प्रशंसा सुनी है। यदि मुझे किसी तरह वे एक बार दिखा दी जायें, तो मैं वापस लौट जानेको तैयार हूं। राणा भीमसिंहने यह समझ कर कि वृथा युद्धसे क्या लाभ है, तथा लक्ष्मणसिंहके राज्यशासन ग्रहण करनेके पूर्व कोई युद्ध न हो तो अच्छा है, यह बात सोच कर महाराणाजीके प्रतिवाद करने पर भी अलाउद्दीनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। महाराणा लक्ष्मणसिंहके महलके एक कमरेमें एक शीशा लगाया गया और इसी स्थान पर अलाउद्दीन के स्वागतकी सारी तैयारी की गयी। अलाउद्दीन भी यह बात अच्छी तरह जानता था कि राजपूत विश्वासघाती नहीं होते। एक बार जिस बातको कह देंगे, उसे वे अवश्य पूरा करेंगे। इसी धारणाके बलपर उसे शत्रु-नगरीमें कुछ थोड़ेसे सैनिक लेकर प्रवेश करनेका साहस हो सका। जिस अलाउद्दीनने पवित्र शिशोदिया कुलमें कलङ्क लगाना चाहा था, जिसके घृणित प्रस्ताव को सुन कर शिशोदिया जातिका रक्त उबल उठा था, वही शत्रु अतिथि होनेके कारण राजमहलमें बिना विरोध प्रवेश कर सका। भीमसिंहने उसका पूर्ण सत्कार किया। अलाउद्दीनने भी बहुतसी मीठी बातें बनायीं, अपराधोंके लिये क्षमा मांगी। दर्पणमें पद्मिनीजीकी प्रतिमूर्ति उसे दिखायी गयी। अनुपम जगद्विमोहिनी सुन्दरता देख कर अलाउद्दीन बेहोश हो गया। पास ही खड़े वीरवर गोरा और बादलने अच्छा अवसर समझ कर तल-

वार निकाली और अलाउद्दीनकी नीचताका अन्त कर देनेके लिये आगे बढे, परन्तु धर्मप्राण राणा भीमसिंहने उन्हें ऐसा करनेसे रोक दिया। गोरा और बादलकी तलवारें म्यानके भीतर चली गयीं। दुराचारी जब कुछ देर बाद होशमें आया तो उसे पद्मिनी की प्रतिमूर्तिके सिवा और कुछ नहीं दिखायी दे रहा था। अलाउद्दीनने चलनेकी तैयारी की। राणा भीमसिंह उसे पहुचाने के लिये अकेले ही चित्तौड़के बाहर तक आये। किलेके दरवाजेके बाहर बादशाहका इशारा पाते ही कुछ अस्त्रधारी सिपाही गुप्त स्थानसे बाहर निकल पडे और उन्होंने राणाको बन्दी कर लिया। विश्वासघातियोंने राणाजीकी धर्मपरायणता और अतिथि सत्कार का यह पुरस्कार दिया। राणाको बन्दी कर अलाउद्दीनने ढिंढोरा पिटवा दिया कि यदि मुझे पद्मिनी मिल जायेंगी तो मैं राणाको छोड़ दूगा। विश्वासघातका यह समाचार चित्तौड़ पहुच गया। जगह जगह चर्चा होने लगी। यदि युद्धमें राणा बन्दी हो जाते तो क्षत्रियोंको जरा भी द ख न होता। सब सोचने लगे कि अब क्या होगा। क्या राणाजीके बदले पद्मनीजीको दिया जायेगा या खड्गकी सहायतासे राणाका उद्धार किया जायगा। सारे मेवाड़में इस बातकी चर्चा फैल गयी और सब जनता महाराणा तथा पद्मिनीजीके निर्णयकी ओर बड़ी व्यग्रतासे देखने लगी। महाराणा लक्ष्मणसिंह, रानी पद्मिनी, गोरा और बादलने बैठ कर निश्चय किया कि कर्त्तव्य क्या है। शीघ्र ही लोगोंने सुना कि महाराणाके परामर्शसे निश्चय हो गया है कि राणाजीके उद्धारके लिये पद्मिनीजी स्वय बादशाहके पास चली जायेंगी।

इस बातसे चित्तौड और शिशोदिया वशके कुछ क्षत्रियोंमें बड़ी अशान्ति उत्पन्न हुई। क्या यथार्थमें हिन्दू रमणियोंका आदर्श

सतीत्व एक विश्वासघाती विधर्मीको अर्पण कर दिया जायेगा! क्या राणीजी इस घृणित प्रस्तावको मान चुकी हैं इत्यादि इस प्रकारके बहुतसे प्रश्न सबके मनमें उठने लगे। जो हो, महाराणा और राणीजीके निश्चयके विरुद्ध किसीको कुछ बोलनेका साहस न हुआ। शीघ्र ही अलाउद्दीनके पास दूत भेजा गया और सूचना दी गयी कि पतिकी रक्षाके लिये हिन्दू स्त्रिया सब कुछ कर सकती हैं, इस लिये राणाजीने निश्चय कर लिया है कि राणा जीको छोड़कर जिस रोज आप चित्तौडका घेरा उठाकर जानेकी तैयारी करने लगेंगे, उसी दिन राणीजी आपके यहा आ जायेंगी। दूसरी बात यह है कि पद्मिनीजी उच्च वशकी हैं और चित्तौडमें उनकी बहुतसी सखी सहेलिया हैं। वे सब उन्हें विदा करने आयेंगी। इस लिये आपको अपनी सेनामें यह हुक्म करा देना होगा कि स्त्रियोंके जो डोले आवें, उनका कोई स्पर्श तक न करे। यदि उनके सम्मानमे किसी तरहका फर्क पड़ेगा तो राणीजीको बडा दु ख होगा। अलाउद्दीनने प्रसन्न होकर तमाम सेनामें ढिढोरा पिटवा दिया कि स्त्रियोंके डोलोंके साथ जो कोई जरा भी छेड छाड करेगा उसे बड़ा कड़ा दण्ड दिया जायेगा। तमाम सेनामें रोशनी करायी गयी और पद्मिनी जीके स्वागतके लिये खूब तैयारी की गयी। मूर्ख अलाउद्दीनने एक बार भी यह न सोचा कि हिन्दू कुलकामिनिया हसते हसते अग्निचितामें प्रवेश कर सकती हैं, तेज छुरिया कलेजामे भोंक सकती हैं, किन्तु परपुरुष कामनाकी पूर्ति प्राण रहते नहीं कर सकती।

निश्चित दिन निकट आया। चित्तौड़में सातसौ पालकिया सजायी गयी। प्रत्येक पालकीको चित्तौडके छ छ राजपूत

वीरोंने कहार बनकर कन्धों पर रखा और एक एक राजपूत वीर स्त्रीका भेष बना कर पालकीके भीतर हथियारबन्द होकर बैठा। अलाउद्दीनके खीमेमें हल्ला मच गया। बादशाहने पहलेसे ही एक अलग तम्बू तनवा रखा था। सारे डोले उसके भीतर पहुचाये गये। दूतने बादशाहके पास जाकर कहा कि राणीजी को राणासे मिलनेके लिये आज्ञा दीजिये। पद्मिनीजीको भीमसिहजीसे अन्तिम मुलाकात करनेके लिये आधा घण्टा दिया गया। राणा भीमसिह उसी स्थान पर लाये गये। चित्तौड़का एक वीर पालकीके भीतरसे निकला और उसने भीमसिहजीसे कहा कि आप तुरन्त पालकीमें बैठ कर चित्तौड चले जाइये। राणाजीकी पालकीके साथ उनकी रक्षाके लिये और भी कई पालकिया हो लीं। जब आधा घण्टा हो गया और भीमसिह पद्मिनीजीके पाससे वापस न लौटे तो अलाउद्दीनके क्रोधकी सीमा न रही। वह कामान्ध मूस खीमेके भीतर चला गया और उसने पालकीका पर्दा ऊचा कर दिया। बस, राजपूत वीरोंने युद्ध आरम्भ कर दिया। कई वीरोंने अलाउद्दीन पर आक्रमण किया, परन्तु वह सुरक्षित था इस लिये बच गया। इधर भीमसिहजी थोडी दूर जाकर घोडेपर सवार हो गये और सकुशल चित्तौड़ पहुच गये। राजपूत सेनाके प्रधान नायक वीरवर गोरा और बादलने अलाउद्दीनसे लड़नेमें बड़ी वीरता दिखायी। इन दो साहसी वीरोंका ही काम था कि उन्होंने इतनी बडी मुगल सेनाको उस समय तक रोक रखा, जब तक भीमसिहजी चित्तौड़ न पहुच गये। ग्यारह बारह वर्षके वीर बालक बादलकी रणनिपुणता देखकर अलाउद्दीनको बडा आश्चर्य हुआ। इसी समरमें वीर गोरा पाच हजार राजपूतोंके साथ धराशायी

राजपूत सरदारोंको निमन्त्रित कर कहा कि मेवाडकी अधिष्ठात्री देवी राजकुमारोंके बलिदानसे सन्तुष्ट होंगी। सरदार इस बात को सुनकर अवाक् रह गये। अन्तमें यही निश्चय किया गया कि प्रत्येक दिन एक एक राजकुमारका राज्याभिषेक किया जाये। महाराणी स्वय उनकी आरती उतारें। तीन दिन तक उनकी आज्ञा मानी जाये। चौथे दिन एक एक राजकुमार रणस्थलमें कूदकर भाग्यका लेख पूरा करें। महाराणीजी बुलायी गयीं और उन्होंने मेवाडकी स्वाधीनताके लिये अपने प्राणप्यारे पुत्रोंका बलिदान सहर्ष स्वीकार कर लिया। महाराणीजीके बारह पुत्रोंमें इस बातका तर्क वितर्क होने लगा कि स्वाधीनता की वेदी पर बलिदान होनेके लिये सबसे पहले किसे गौरव प्राप्त होगा। सबसे बडे कुमार अरिसिंह थे। वे पहले राजसिंहासन पर बैठाये गये। तीन दिन तक यथायोग्य राज्यकी सारी प्रथाएं पूर्ण कर चौथे दिन बड़ी वीरतापूर्वक वे रणस्थल में लडे और वीर गतिको प्राप्त हुए। दूसरे दिन छोटे भाई अजयसिंहकी बारी आयी। उन्होंने बहुतेरा चाहा कि मैं भी अपने भाईका अनुकरण करूं, परन्तु वे महाराणाको सब पुत्रोंसे अधिक प्यारे थे। साथ ही वंशरक्षाके लिये एक पुत्रका जीवित रहना आवश्यक था, इसलिये सबके परामर्शसे वे कुछ सरदारोंके साथ कैलवाड़ा भेज दिये गये। इसके बाद क्रम क्रमसे अन्य १० राजकुमार रणस्थलमें भेज दिये गये और वे मातृभूमिकी रक्षा करनेमें अपने प्राणोंकी आहुति दे बैठे। राजमहलमे शोकका नामोनिशान भी न दिखायी देता था। चारों ओर मङ्गलगान हुआ करते थे। एक राजकुमारकी मृत्यु होने पर जब दूसरा कुमार राजसिंहासन पर बैठता था तो उनका



पद्मिनीका जौहार-व्रत।

मता शृङ्गार कर मङ्गल द्रव्य हाथमें लेकर आरती उतारा करतीं थी। इस आरतीके समय यदि आखोंसे एक भी आसू निकल पडेगा तो व्रत भङ्ग हो जायेगा इस विचारसे मङ्गलगान हुआ करते थे। यह कैसा स्मरणीय व्रत था जो मेवाडकी क्षत्राणीके भाग्यमें लिखा हुआ था जिसकी तुलना ससारके इतिहासमें कहीं पर नहीं मिलता। जब इस तरह स्वाधीनताके यज्ञमें ११ पुत्रोंकी आहुति हो चुकी, तो महाराणाजीने स्वय सग्राम भूमिमें जाकर प्राण निछावर करनेके अभिप्रायसे सरदारोंको एकत्र किया। रणस्थलमे जानेके पूर्व एक और भी भयानक व्रत उपस्थित हुआ। बडे बडे अग्नि कुण्ड जलाये गये। विजयी शत्रुओंके हाथसे राजपूत महिलाओंके सतीत्व पर कलङ्क कालिमा न लगे, इसलिये राजपूत ललनाए दल बाध कर उन जलते हुए अग्नि कुण्डोंमे हसती हसती कूद पड़ीं। इस प्रथाका नाम 'जुहार व्रत' है। जब शत्रुसे रक्षाकी कोई आशा न रहती थी, तो इसी प्रथाका पालन किया जाता था। महाराणी पद्मिनीके महलके पीछे एक अन्धकारमय सुरङ्ग थी उसीमें अग्नि कुण्ड जलाये गये थे। महाराणी पद्मिनी सब राजपूत बालाओंको एकत्र कर बाल खोले हुए शोक सङ्गीत गाती हुई चितामें कूद पड़ी। जिस रूप लावण्यको देख कर अलाउद्दीनके हृदयमें पापवृत्ति जागृत हो उठी थी और जो रूपलावण्य बादशाह अलाउद्दीनको महारानी पद्मिनीका गुलाम बना सकता था, वही रूपलावण्य कुलगौरवकी रक्षाके लिये जलती हुई अग्निमें समा गया। सभी राजपूत अपनी प्यारी बहनों, बेटियों, माताओं और स्त्रियोंको अग्निमे कूदते देखते रहे। वीरोंका हृदय इस दृश्यको देख कर जरा भी विचलित न हुआ और मातृभूमिकी

स्वाधीनता ही उन्हें सब कुछ दिखायी दी ।

महाराणा लक्ष्मणसिंह स्त्रियोंके सम्बन्धमें निश्चिन्त हो अपने सरदारोंके साथ चित्तौड़गढका दरवाजा खोल कर बाहर निकले। उन्होंने इस वीरताके साथ युद्ध किया, जिसका वर्णन स्वयं भट्ट कवि भी नहीं कर सके । भीषण संग्रामके बाद महाराणा अपने सरदारों समेत रणस्थलमें वीरगतिको प्राप्त हुए। इधर बादशाह अलाउद्दीनने चित्तौड पर अधिकार कर महाराणी पद्मिनीकी खोज की। जब उसे मालूम हुआ कि सती शिरोमणि पद्मिनी पहले ही चितामें भस्म हो गयी हैं, तो उसकी निराशा और सन्तापका ठिकाना न रहा । वह कई दिन तक चित्तौड़मे रहा । इसके बाद झालोरके सोनगढ वंशीय सरदार मालदेवको चित्तौडका शासक बना कर अपनी राजधानीको लौट गया। वह जाते समय पद्मिनीके महलको छोड़ कर अन्य महलों और भवनोंको जमीनमे मिला गया ।

यह चित्तौड़का पहला 'साका' था। मेवाड़के इतिहासमें चित्तौड़के साढे तीन 'साका' माने जाते हैं। आधा 'साका' वह माना जाता है, जिसमें पद्मिनीजीकी रक्षाके लिये पाच हजार चुने हुए वीरोंकी प्राणाहुति दी गयी थी। 'साका' का अर्थ नाश माना जाता था। राजपूत आपसमें इस शपथका प्रयोग भी करते थे कि 'चित्तौडके साकाका पाप' हो।

—— o ——

पंचम-परिच्छेद ।

अजयसिंह ।

चित्तौडके पहले 'साके' के बाद महाराणाके वशमें पितरोंके पिण्ड देनेके लिये केवल अजयसिंह रह गये । महाराणा लक्ष्मण-सिंहके यही उत्तराधिकारी थे। महाराणा अजयसिंहको रात दिन इसी बातकी चिन्ता रहती थी कि जो चित्तौड हमारे पूर्वजोंकी लीलाभूमि है वह एक मुसलमान दासके अधीन है। महाराणा लक्ष्मणसिंहने अजयसिंहजीको विदा करते हुए कह दिया था कि तुम्हारे बाद तुम्हारा उत्तराधिकारी तुम्हारे बडे भाई अरिसिंहका पुत्र होगा। अजसिंहने बहुत खोज करायी परन्तु अरिसिंहके पुत्र हमीरका पता न लगा।

महाराणा अजयसिंहके दो पुत्र थे। बडेका नाम अजीतसिंह और छोटेका नाम सुजनसिंह था। महाराणा इन दोनों पुत्रोंसे विशेष प्रसन्न न थे। अजयसिंह जिन पहाडी प्रदेशोंमें रहते थे, उसके पासके स्थानोंका शासक भीलोंका सरदार मुंज था। उसने कई बार महाराणाके साथ लडाई लडी। महाराणा उसे अपना बडा भारी शत्रु समझा करते थे। कई दिनोंके बाद महाराणा अजयसिंहने पता लगा कर कुमार हमीरसिंहको उनके मामाके यहांसे बुला लिया। कुमार हमीरने आते ही महाराणासे भील सरदार पर चढाई करनेकी आज्ञा पायी। कुमार थोड़ेसे सर-दारोंको लेकर मुंजसे लड़नेके लिये चल पडे। चलते समय

महाराणाके चरण छूकर उन्होंने प्रतिज्ञा की कि यदि शत्रुका शिर काट कर आपके चरणोंमें अर्पित कर सकूंगा, तो लौटूंगा अन्यथा नहीं। थोडे ही दिनोंके पीछे कुमारने भालेकी नोक पर मुञ्जका कटा हुआ शिर लाकर महाराणाके चरणों पर रख दिया। महाराणा इस भेटमे बडे प्रसन्न हुए और उन्हें निश्चय हो गया कि मेवाडका उद्धार हमीर करेगा। भीलके कटे हुए शिरसे रुधिर लेकर महाराणाने राजकुमारका तिलक कर दिया। महाराणाकी इस कार्यवाहीसे उनके दोनों पुत्र बडे खिन्न हुए। उन्हें मालूम हो गया कि मेवाड़की राजगद्दी हमारे भाग्यमें नहीं। अजीतसिंह तो शोकमें ही स्वर्गवासी हो गये और सुजनसिंह महाराणाकी आज्ञा लेकर दक्षिणकी तरफ चले गये। दक्षिणमें उनका वंश चला जिसमें छत्रपति शिवाजीका जन्म हुआ।

महाराणा अजयसिंहकी मृत्युके बाद सन् १३०१ ई० में वीर हमीर महाराणा बने। वे वीरमाताके वीर पुत्र थे। एक समय स्वर्गीय अरिसिंह जो हमीरके पिता थे, कई सरदारोंके साथ वनमें शिकार खेलने गये थे। एक जङ्गली शूकरके पीछे उन्होंने अपना घोडा छोडा। शूकर जुआरके एक खेतमे घुस गया। उसे खेतमें जाता देख अरिसिंहको बड़ी निराशा हुई। एक मञ्च पर एक राजपूत पुत्री बैठी खेतकी रक्षा कर रही थी। उसने अरिसिंहसे निराश न होनेको कहा। जुआरके एक पेड़को उखाड़ कर उसकी नोक तेज कर उसने मञ्च परसे ऐसा निशाना मारा कि सुअर तुरन्त ही मर गया। अरिसिंहको इस वीरता पर बडा आश्चर्य हुआ। वे थोड़ी दूर जाकर एक नदीके किनारे ठहरे। इतनेमें उनके घाड़ेकी टांगमें एक ढेला लगा जिससे घोड़ा गिर पडा। पता लगानेसे मालूम हुआ कि वही राजपूत

कन्या ढला मार कर पशुओंसे खेतकी रक्षा कर रही है। कन्या ने अरिसिंहसे क्षमा प्रार्थना की। उसी समयसे वह कन्या उनकी स्नेहभाजन बन गयी। जब वे शिकार खेल कर राजमहलको लौट रहे थे, उन्होंने वही कन्या देखी जो शिर पर दूधका बर्तन रखे हुए दो भैंसोंको हाकती जा रही थी। अरिसिंहके एक मित्रने हंसीमें अपना घोड़ा कन्याकी तरफ बढाया। कन्याने भैंसको घोडेकी टागमें इस तरह अड़ा दिया कि सवार नीचे गिर पड़ा। अरिसिंह घर लौट आये और कन्याकी खोज करने लगे। उन्होंने कन्याके पिताको बुला कर कहा कि अपनी लड़की का विवाह मेरे साथ कर दो, पिताने यह प्रस्ताव न माना। जब वह घर लौटा तो उसकी स्त्रीने उसके इस कार्यकी बड़ी निन्दा की। दूसरे ही दिन राजपूतने अरिसिंहके पास जाकर क्षमा मागी और उनके साथ अपनी कन्याका विवाह कर दिया जिससे वीरवर हमीरकी उत्पत्ति हुई।

यद्यपि हमीरका जन्म चित्तौड़में हुआ था, परन्तु किसी कारण वश वे अपनी माताके साथ अनने मामाके यहा रहा करते थे। अलाउद्दीनकी चढाईके समय उनकी मा तो चित्तौड़ चली आयी परन्तु वे अपने मामाके पास ही बने रहें। जिस दिनसे हमीर महाराणा हुए और उनके द्वारा चित्तौड़का उद्धार हो गया। उनकी तलवार म्यानके भीतर न गयी। महाराणा होते ही उन्हे चित्तौडके उद्धारकी प्रबल इच्छा हुई उन्होंने सारे मेवाडमें इस बातका ढिढोरा पिटवा दिया कि जो लोग महाराणा हमीर को अपना स्वामी मानते हों वे अपने अपने निवास स्थानोंको छोड़ कर परिवार समेत पूर्व और पश्चिमके पहाडोंमें आ बसे, नहीं तो वे शत्रु समझे जायेंगे। जिन नगरोंमें प्राचीर थे, उन्हे छोड़

महाराणाके चरण छूकर उन्होंने प्रतिज्ञा की कि यदि शत्रुका शिर काट कर आपके चरणोंमें अर्पित कर सकूंगा, तो लौटूंगा अन्यथा नहीं । थोडे ही दिनोंके पीछे कुमारने मालेकी नोक पर मुञ्जका कटा हुआ शिर लाकर महाराणाके चरणों पर रख दिया। महाराणा इस भेटसे बड़े प्रसन्न हुए और उन्हे निश्चय हो गया कि मेवाडका उद्धार हमीर करेगा। भीलके कटे हुए शिरसे रुधिर लेकर महाराणाने राजकुमारका तिलक कर दिया। महाराणा की इस कार्यवाहीसे उनके दोनों पुत्र बडे खिन्न हुए। उन्हें मालूम हो गया कि मेवाड़की राजगद्दी हमारे भाग्यमें नहीं। अजीतसिह तो शोकमें ही स्वर्गवासी हो गये और सुजनसिंह महाराणाकी आज्ञा लेकर दक्षिणकी तरफ चले गये। दक्षिणमें उनका वंश चला जिसमे छत्रपति शिवाजीका जन्म हुआ।

महाराणा अजयसिहकी मृत्युके बाद सन् १३०१ ई० में वीर हमीर महाराणा बने। वे वीरमाताके वीर पुत्र थे। एक समय स्वर्गीय अरिसिह जो हमीरके पिता थे, कई सरदारोंके साथ वनमें शिकार खेलने गये थे। एक जङ्गली शूकरके पीछे उन्होंने अपना घोडा छोड़ा। शूकर जुआरके एक खेतमें घूस गया। उसे खेतमें जाता देख अरिसिंहको वड़ी निराशा हुई। एक मञ्च पर एक राजपूत पुत्री वैठी खेतकी रक्षा कर रही थी। उसने अरिसिहसे निराश न होनेको कहा। जुआरके एक पेड़को उखाड़ कर उसकी नोक तेज कर उसने मञ्च परसे ऐसा निशाना मारा कि सुअर तुरन्त ही मर गया। अरिसिहको इस वीरता पर वडा आश्चर्य हुआ। वे थोड़ी दूर जाकर एक नदीके किनारे ठहरे। इतनेमें उनके घोडेकी टागमें एक ढेला लगा जिससे घोड़ा गिर पड़ा। पता लगानेसे मालूम हुआ कि वही राजपूत

कन्या ढला मार कर पशुओंसे खेतकी रक्षा कर रही है। कन्याने अरिसिंहसे क्षमा प्रार्थना की। उसी समयसे वह कन्या उनकी स्नेहभाजन बन गयी। जब वे शिकार खेल कर राजमहलको लौट रहे थे, उन्होंने वही कन्या देखी जो शिर पर दूधका वर्तन रखे हुए दो भैसोंको हाकती जा रही थी। अरिसिंहके एक मित्रने हसीमें अपना घोडा कन्याकी तरफ बढाया। कन्याने भैंसको घोड़ेकी टागमें इस तरह अड़ा दिया कि सवार नीचे गिर पडा। अरिसिंह घर लौट आये और कन्याकी खोज करने लगे। उन्होंने कन्याके पिताको बुला कर कहा कि अपनी लड़की का विवाह मेरे साथ कर दो, पिताने यह प्रस्ताव न माना। जब वह घर लौटा तो उसकी स्त्रीने उसके इस कार्यकी बडी निन्दा की। दूसरे ही दिन राजपूतने अरिसिंहके पास जाकर क्षमा मागी और उनके साथ अपनी कन्याका विवाह कर दिया जिससे वीरवर हमीरकी उत्पत्ति हुई।

यद्यपि हमीरका जन्म चित्तौड़में हुआ था, परन्तु किसी कारण वश वे अपनी माताके साथ अपने मामाके यहा रहा करते थे। अलाउद्दीनकी चढाईके समय उनकी मा तो चित्तौड़ चली आयी परन्तु वे अपने मामाके पास ही बने रहे। जिस दिनसे हमीर महाराणा हुए और उनके द्वारा चित्तौड़का उद्धार हो गया। उनकी तलवार म्यानके भीतर न गयी। महाराणा होते ही उन्हे चित्तौडके उद्धारकी प्रबल इच्छा हुई उन्होंने सारे मेवाडमें इस बातका ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो लोग महाराणा हमीर को अपना स्वामी मानते हों वे अपने अपने निवास स्थानोंको छोड़ कर परिवार समेत पूर्व और पश्चिमके पहाडोंमे आ बसे, नहीं तो वे शत्रु समझे जायेंगे। जिन नगरोंमें प्राचीर थे, उन्हे छोड़

कर मेवाडके सभी स्थान नष्ट कर दिये गये। महाराणा हमीरने जब जब मौका पाया मुसलमानोंकी सेना पर आक्रमण किया और उसे काट कर पहाड़ी स्थानोंमें जा छिपे। मेवाड़के सारे बाजार, हाट, चौक खण्डहर हो गये। महाराणाने कैलवाडेको बसाया और वहां बहुतसी प्रजा जाकर रहने लगी। कैलवाडेमें किले भी बनाये गये। चित्तौड़का मुगल प्रतिनिधि मालदेव हमीरके इस पराक्रमसे घबड़ा उठा। यदि महाराणाके पास कुछ द्रव्य और युद्धसामग्री होती तो वे चित्तौड़ पर धावा किये बिना न रहते, परन्तु वे इस बातकी प्रतीक्षामें अपने दिन काटते रहे।

इसी बीचमें मालदेवने उन्हें सन्तुष्ट करनेके लिये अपनी पुत्रीका विवाह उनके साथ कर देना चाहा। सगाईका नारियल महाराणा ने मन्त्रियोंके प्रतिवाद करने पर भी स्वीकार कर लिया। यह शर्त तय हुई कि बारातके साथ पांचसौसे ज्यादा सवार न लाये जायँ। महाराणाने अपने मन्त्रियोंसे कहा कि विवाहके बहाने चित्तौड़के दर्शन तो अवश्य हो जायेंगे। विवाहकी तैयारी हुई। महाराणा चित्तौडकी ओर रवाना हुए। महाराणाने प्रतिज्ञा की कि या तो पितृ भूमिका उद्धार किया जायेगा या उसके आगनमें प्राण दे दूंगा। बारात चित्तौड पहुची। सिंहद्वार पर तोरण या विवाहका कोई मङ्गल चिन्ह दिखायी न दिया। महाराणाको बड़ा आश्चर्य हुआ परन्तु उन्होंने उस समय कुछ भी बोलना उचित न समझा।

माल्देवकी पुत्रीके साथ उनका विवाह हो गया। विवाहमें मङ्गल-गान इत्यादि कुछ न हुआ। सुहागरात्रिके लिये महाराणा महलमें पधारे। नववधूने चरणोंमें गिर कर कहा कि इस दासीका अपराध क्षमा कीजिये। मैं आपकी विकलताका कारण जानती

हू । यह भी जानती हू कि पिताने गुप्त रीतिसे मेरा विवाह क्यों किया। निरीह बालिकाके मुखसे ये बाते सुन कर महाराणा हमीरका दिल पिघल गया। राजपूत बालाने उन्हे बताया कि मैं विधवा हू, इसीसे मेरा विवाह गुप्त रीतिसे किया गया है। आप मुझसे घृणा न करे। मेरी बहुत ही छोटी अवस्थामें एक राजकुमारके साथ मेरा विवाह हुआ था, उसकी मृत्यु हो गयी। मैंने जो कुछ अपनी माताके मुखसे सुना है आपसे कह दिया। मैंने अपने स्वामीका मुख-दर्शन तक नहीं किया। नववधू यह कह कर रोने लगी। मालदेवके इस अपमानसे यद्यपि हमीरका हृदय जल उठा था, परन्तु अबलाके अश्रुजलने उसे शान्तकर दिया था। महाराणाने अपनी नवविवाहिता स्त्रीसे प्रतिज्ञा करायी कि मैं चित्तौड़के उद्धारमें आपकी पूर्ण सहायता करूगी। इसके बाद उन्होंने उसे स्वीकार किया। हमीरसे राजकुमारीने कहा कि आप दहेजमें चतुर राजकर्मचारी जलधरको माग लेना। महाराणाने ऐसा ही किया और वे केलवाड़ा लौट आये।

कुछ दिनोंके बाद मालदेवकी स्त्रीने पुत्ररत्न उत्पन्न किया। इस आनन्दोत्सवमें मालदेवने महाराणा हमीरको अपने कुछ पहाडी देश दे दिये। लडकेका नाम क्षेत्रसिंह रखा गया। क्षेत्रसिंह पर चित्तौड़के देवताओंके कोपकी धूम मचायी गयी। मालदेवको सूचना दी गयी कि चित्तौडके देवताओंको क्षेत्रसिंहकी रक्षाके लिये 'जात' देनी होगी। मालदेवने कुछ सरदारोंको भेजकर अपनी कन्या और नातीको चित्तौड बुला भेजा। मालदेवकी पुत्रीने जलधरकी सहायतासे चित्तौड़के सरदारोंको अपनी ओर मिला लिया। जब मालदेव चुने हुए सरदारोंको लेकर मदेरियाकी ओर चले गये तो हमीरके आगमनका यही उपयुक्त समय समझा गया।

क्षेत्रसिंहकी माताने पतिको इस सुअवसरकी सूचना दे दी। हमीर ने शीघ्र ही चित्तौड पर धावा कर उसे वशमें कर लिया। जैसे ही चित्तौड उनके अधिकारमें आया चित्तौड़ निवासियोंने उनकी अधीनता स्वीकार कर ली। जब मालदेव शत्रु जीत कर चित्तौड़ पहुचा तो उसका होश बिगड गया । वह निरुपाय होकर अल्ला-उद्दीनके उत्तराधिकारीके पास दिल्ली पहुचा। बादशाह यह सुनकर बड़ा क्रुद्ध हुआ और उसने चित्तौड़ पर धावा करनेकी तैयारी कर दी। इधर जब महाराणाको खबर मिली कि चढाई होनेवाली है तो उन्होंने सामन्त आदिको एकत्र किया और बादशाहका सामना करनेके लिये वे आगे बढे । जिस दिन महाराणाने चित्तौड पर अधिकार किया था चित्तौडके सभी पुराने सामन्त वापस आ गये थे। महाराणा दिल्लीके आक्रमणका अनुमान पहले से ही कर चुके थे । बादशाह सी मार्गसे चित्तौड़ न आया। पहाड़ी-प्रदेशोंको पार करनेमे उसकी बहुतसी सेना पानी आदिके कष्टसे नष्ट हो गयी। बादशाहने सिंगोलीमें डेरा डाला और महाराणाकी सेनाने वहीं पर आक्रमण किया। भयङ्कर युद्ध छिड़ गया और महाराणाने अपने हाथसे मालदेवके पुत्र हरिसिंहको मारा। कई दिनोंके युद्धके बाद बादशाह कैद हो गया। वह चित्तौड़के जेलखानेमें लाया गया और तीन महीने तक उसे बन्द रहना पड़ा। अन्तमें अजमेर, रणथभोर, नागोर, शिवपुर तथा पचास लाख रुपये और एकसौ हाथी महाराणाको देकर उसने छुटकारा पाया। विदाईके समय महाराणा हमीरने कहा कि आप यह न समझना कि दिल्लीके बादशाह होनेके कारण आप छोडे गये हैं। आप सरीखे शत्रुओंका सामना करनेके लिये हमीर सदा तैयार हैं। आपने चित्तौड़को अपनी जायदाद समझ चढाई

की थी, इसीसे आपकी यह हालत हुई। यदि आपमें कुछ भी वीरत्व है तो फिर आक्रमण करना। हमीर चित्तौडके द्वार पर नङ्गी तलवार लिये हुए आपको दिखायी देगा। बादशाहसे कुछ भी उत्तर देते न बना। उसने यह प्रतिज्ञा की कि जीवित रहते मैं चित्तौड़ पर कभी चढाई न करूंगा। इसके बाद वह छुटकारा पाकर भागा।

जब मालदेवने देखा कि सारा श्रम विफल हुआ तो उसके बडे पुत्र बनवीरने अधीनता स्वीकार कर ली। महाराणाजीने भी अपने ससुरालवालोंको कई स्थान निर्वाहके लिये दे दिये। भूमि देते हुए महाराणाने कहा कि एक दिन आप तुर्कों के दास थे, परन्तु अब स्वधर्मी हिन्दुओंके भाई हो। यद्यपि तुम्हे अपने राज्यके खोनेका दुःख होगा, परन्तु जरा विचार कर तो देखो कि वास्तवमें यह राज्य किसका है। जिस मेवाडको मेरे पूर्व पुरुषोंने अपने रुधिर से सींचा है उसीको मैंने बाहुबलसे फिर पाया है। बनवीरने अपने बहनोईके उपदेश वाक्य ध्यानपूर्वक सुने। इसके बाद उसने स्वयं कई देशों पर चढाई कर उन्हे मेवाड़के अधीन बनाया। उस समय सारे राजपूतानेमें महाराणा हमीरकी दुहाई फिर रही थी। मारवाड, जयपुर, बून्दी, चन्देरी, सीपरी, कालपी और आबूके राजा महाराणाकी कृपाका अपना बड़ा सौभाग्य समझा करते थे और कार्य पडने पर अपनी अपनी सेना सजा कर महाराणाको सहायता दिया करते थे।

इस महायुद्धके बाद मेवाड़में कई वर्षो तक शान्ति रही। मुसलमानोंका कोई आक्रमण नहीं हुआ। महाराणाने नगरकोट और दिल्लीके द्वार तक अपनी विजयका डङ्का बजाया। कई वर्षोंकी शान्तिके कारण मेवाडके निवासी अत्यन्त सम्पन्न

हो गये । चित्तौड और मेवाड़में कई महल, मन्दिर और विजयस्तम्भ बनाये गये । महाराणा हमीरके परलोकवासी होने पर उनके पुत्र क्षेत्रसिंह संवत् १३६५ ई० में चित्तौड़के सिंहासन पर बैठे । उन्होंने शीघ्र ही मण्डलगढ़, जहाजपुर, चप्पन आदिको अपने राज्यमें मिला लिया । बकरोल नामक स्थानमें नसीरुद्दीन तुगलकका बड़ा बेटा हुमायूं महाराणाके साथ लड़ा। दिल्लीकी सेना हरा दी गयी । थोड़े ही दिनोंमें मेवाड़के बनोदा नामक प्रदेशके शासक हाड़ावंशीय क्षत्रियकी पुत्रीके साथ क्षेत्रसिंहकी सगाई हुई । पीछेसे हाडा सरदारने क्षत्रसिंहकी छातीमें तलवार भोंक दी । महाराणाकी अकाल मृत्यु होने पर सन् १३८३ ई० में महाराणा लाखा गद्दी पर बैठे ।

बिदनौरका प्रसिद्ध किला इन्हींने ही बनवाया था । चप्पन देशकी चांदी और टीनकी खानें इन्हींके समयमें निकलीं, जिनसे राज्यको बड़ी भारी आमदनी हुई । दिल्लीके बादशाह मुहम्मद शाह लोदीके साथ महाराणा बिदनौरके पास लड़े । बादशाह हार कर मुंह छिपा कर भागा । कुछ ही दिनों बाद खबर आयी कि विधर्मियोंने हिन्दूतीर्थ गया पर आक्रमण किया है । महाराणा शीघ्र ही अपनी सेना सजा कर गयाके रणस्थलमें पहुंचे। और भी देशोंके राजा वहां पहुंचे । प्रधान सेनापति महाराणा लाखा ही बनाये गये । वहां व[illegible] लड़[illegible]महाराणा

ठ सके, इसका कारण यह था कि एक दिन महाराणा लाखा दरबारमें बैठे हुए थे, उसी समय मारवाडके राठोर राजा रणमलका भेजा हुआ एक दूत राठोर राजकुमारीकी सगाई का नारियल लेकर आया। महाराणाने दूतका यथोचित सम्मान कर उससे आनेका कारण पूछा। दूतने कहा कि युवराज चण्डके साथ अपनी कन्याका विवाह करनेके लिये महाराज रणमलने नारियल भेजा है। चण्ड इस समय दरबारमें न था। उन्हें बुलानेके लिये आदमी भेज दिया गया। महाराणा दूतसे बातें करने लगे। बातोंमें उन्होंने उपहास पूर्वक कहा कि ऐसी खेल-सामग्री मुझ सरीखे सफेद दाढी मूछ वालोंके लिये राठोरके महाराज क्यों नहीं भेजते। दरबारके सब लोग हस पडे और सभी उस दूतसे हंसी मजाक करने लगे। जब युवराज चण्ड सभामें आये और उन्होंने सुना कि ऐसी बातें हो रही हैं, तो उनके मनमें यह बात उत्पन्न हुई कि जिस सम्बन्ध को पिताने किसी भी भावसे एक वार अपने साथ करनेको कहा है, उसे मैं कैसे स्वीकार कर सकता हू। महाराणाजीके पूछने पर चण्डने प्रस्ताव अस्वीकार किया। महाराणा और दरबारियोंने उन्हें बहुत समझाया, परन्तु चण्डके दृढ सङ्कल्पको कोई न डिगा सका। महाराणाजीको बडी चिन्ता हुई। एक ओर युवराज चण्डका हठ और दूसरी ओर मारवाड नरेशका घोर अपमान सामने था। महाराणाजी बड़े रुष्ट हुए। उन्होंने अपने लिये ही नारियल स्वीकार करते हुए कहा कि तिलक तो लौटाया नहीं जा सकता, यह बात याद रखनी होगी कि इस विवाह सम्बन्धसे जो पुत्र होगा, वही चित्तौडकी गद्दी पर बैठेगा। चण्ड इस कठोर वचनसे जरा भी दु खी न हुए और उन्होंने

हो गये। चित्तौड़ और मेवाड़में कई महल, मन्दिर विजयस्तम्भ बनाये गये। महाराणा हमीरके परलोकवासी पर उनके पुत्र क्षेत्रसिंह सवत् १३६५ ई० में चित्तौड़के सिंहा पर बैठे। उन्होंने शीघ्र ही मण्डलगढ़, जहाजपुर, चम्पन ... अपने राज्यमें मिला लिया। बकरोल नामक स्थानमें नसी दीन तुगलकका बड़ा बेटा हुमायूं महाराणाके साथ लड़ा। दिल्लीकी सेना हरा दी गयी। थोड़े ही दिनोंमें मेवाड़के बनोल नामक प्रदेशके शासक हाड़ावंशीय क्षत्रियकी पुत्रीके साथ क्षेत्र सिंहकी सगाई हुई। पीछेसे हाडा सरदारने क्षत्रसिंहकी छातीमें तलवार भोंक दी। महाराणाकी अकाल मृत्यु होने पर सन १३८३ ई० में महाराणा लाखा गद्दी पर बैठे।

विदनौरका प्रसिद्ध किला इन्होंने ही बनवाया था। चम्पन देशकी चांदी और टीनकी खाने इन्हींके समयमें निकलीं, जिनसे राज्यको बड़ी भारी आमदनी हुई। दिल्लीके बादशाह मुहम्मद शाह लोदीके साथ महाराणा विदनौरके पास लड़े। बादशाह हार कर मुंह छिपा कर भागा। कुछ ही दिनों बाद खबर आयी कि विधर्मियोंने हिन्दूतीर्थ गया पर आक्रमण किया है। महा राणा शीघ्र ही अपनी सेना सजा कर गयाके रणस्थलमें पहुंचे। और भी देशोंके राजा वहां पहुंचे। प्रधान सेनापति महाराणा लाखा ही बनाये गये। बड़ी वीरताके साथ लड़ कर महाराणा उसी तीर्थक्षेत्रमें स्वर्गवासी हुए। अलाउद्दीनने चित्तौड़के जो महल और मन्दिर नष्ट कर दिये थे, वे महाराणा लाखाने फिर ठीक करा दिये थे। पद्मिनीजीके महलके समान एक दूसरा महल चित्तौड़में बनवाया गया। महाराणाके सबसे बड़े पुत्र चण्ड थे। महाराणा लाखाकी मृत्युके बाद वे गद्दी पर न

ठ सके, इसका कारण यह था कि एक दिन महाराणा लाखा
रबारमें वैठे हुए थे, उसी समय मारवाड़के राठोर राजा
ग़मलका भेजा हुआ एक दूत राठोर राजकुमारीकी सगाई
ा नारियल लेकर आया। महाराणाने दूतका यथोचित सम्मान
र उससे आनेका कारण पूछा। दूतने कहा कि युवराज
एडके साथ अपनी कन्याका विवाह करनेके लिये महाराज
ग़मलने नारियल भेजा है। चण्ड इस समय दरबारमें न
।। उन्हें बुलानेके लिये आदमी भेज दिया गया। महाराणा
तसे बातें करने लगे। बातोंमें उन्होंने उपहास पूर्वक कहा
के ऐसी खेल-सामग्री मुझ सरीखे सफेद दाढी मूछ वालोंके
लिये राठोरके महाराज क्यों नहीं भेजते। दरबारके सब लोग
स पडे और सभी उस दूतसे हसी मजाक करने लगे। जब
युवराज चण्ड सभामें आये और उन्होंने सुना कि ऐसी बातें
ो रही हैं, तो उनके मनमें यह बात उत्पन्न हुई कि जिस सम्बन्ध
को पिताने किसी भी भावसे एक बार अपने साथ करनेको
कहा है, उसे मैं कैसे स्वीकार कर सकता हूं। महाराणाजीके
पूछने पर चण्डने प्रस्ताव अस्वीकार किया। महाराणा और
रबारियोंने उन्हें बहुत समझाया, परन्तु चण्डके दृढ सकल्पको
कोई न डिगा सका। महाराणाजीको बडी चिन्ता हुई। एक
ओर युवराज चण्डका हठ और दूसरी ओर मारवाड नरेशका
ओर अपमान सामने था। महाराणाजी बडे रुष्ट हुए। उन्होंने
अपने लिये ही नारियल स्वीकार करते हुए कहा कि तिलक तो
लौटाया नहीं जा सकता, यह बात याद रखनी होगी कि इस
विवाह सम्बन्धसे जो पुत्र होगा, वही चित्तौडकी गद्दी पर बैठेगा।
चण्ड इस कठोर वचनसे जरा भी दु खी न हुए और उन्होंने

महाराणाकी बात सहर्ष मान ली। उन्होंने एकलिंगेश्वरकी शपथ खाकर महाराणाको विश्वास दिलाया। कहा तो राणा संसार छोड कर चण्डको गद्दी देकर धर्म जीवन ... की चिन्तामें थे और कहा उन्हे पचास वर्षकी अवस्थामें बारह की एक कुमारीसे विवाह करना पडा। इस विवाहसे मुकुल उत्पन्न हुए। जिस समय मुकुल ५ वर्षके थे, गया पर मियोंके आक्रमणकी बात सुनी गयी। महाराणाने जब गया जानेकी तैयारी की तो उन्होंने चण्डको बुला कर कहा कि मैं जिस कठोर व्रतके साधनके लिये जा रहा हू, उसे पूरा कर वापस लौटनेकी आशा नही। यदि मैं न लौटा तो मुकुलकी जीविका का क्या प्रबन्ध किया जायेगा? तेजस्वी चण्ड अपनी भीष्म प्रतिज्ञाको तो भूले ही न थे। उन्होंने बड़ी गम्भीरतासे उत्तर दिया, पिताजी, मुकुलकी जीविका चित्तौड़का राजसिंहासन है। चण्डने जब देखा कि मेरे कथनमात्रसे पिताजीको शायद सन्तोष न हो इसलिये उन्होने उनके सामने ही मुकुलका अभिषेक करानेका निश्चय किया। पांच वर्षके बालक मुकुल राजगद्दी पर बैठे। सबसे पहले त्यागवीर चण्डने उन्हे 'महाराणा' कह कर अभिवादन किया। पिताके चरण और चित्तौडका राज सिंहासन छू कर चण्डने प्रतिज्ञा की कि मैं शुद्ध मनसे शासनकी देख भाल करूगा, जब तक कि मुकुल पूर्ण अवस्था न प्राप्त कर ले। चण्ड मन्त्रिसभाके प्रधान बने और यह भी निश्चय हुआ कि यदि किसी सामन्तको भूमि दी जायेगी तो दानपत्र पर महाराणाके हस्ताक्षरके ऊपर चण्डकी तलवारका चिन्ह रहा करेगा।

राठोर कुमारी चाहती थी कि जब तक मुकुल बडा न हो,

राज्य शासन में स्वय करू । चण्डको राज्यशासन करते देख उनके मनमें द्वेष उत्पन्न हुआ और वे चण्डके प्रत्येक कार्यको गुणित सकमने लगीं । थोड़े ही दिनों बाद उन्होंने लोगोंसे कहा कि चण्ड स्वय राज्य कार्य करते हुए महाराणा बनते चले जा रहे हैं । क्या मेरा पुत्र उपाधिमात्र ही धारण किये रहेगा । चण्डने जब यह बात सुनी तो उनके दिल पर बडी चोट पहुची । उन्होंने राठोर कुमारीसे एक दिन मिलकर कहा कि माताजी आपके मनमें कुधारणा उत्पन्न हुई है । यदि मैं चित्तौडकी गद्दीका अभिलाषी होता तो आज आप राजमाता न बनतीं । खैर, कुछ भी हो, मैं चित्तौड छोड कर जा रहा हू । आप ही शासनभार ग्रहण करें । मेरी अन्तिम प्रार्थना यह है कि शिशोदिया कुलकी अपूर्व कीर्तिमें धब्बा न लगे ।—वे चित्तौड छोड़कर मन्दूर चले गये तथा वहाके राजासे भूमि पाकर वहीं रहने लगे ।

मारवाड़के राठोरोंने जब चण्डके चले जानेकी बात सुनी तो उनके आनन्दका ठिकाना न रहा । वे मारवाडकी सूखी भूमि छोड कर मेवाडमें आ बसे । सबसे पहले मुकुलके मामा जोधाजीने चित्तौड़मे आकर डेरा जमाया । कुछ ही दिन पीछे जोधाजीके पिता अपनी सेना और नौकर-चाकरोंको लेकर चित्तौड आ गये । रणमल मुकुलको गोदीमें लेकर मेवाड़के राजसिहासन पर बेठा करते थे । नाम यद्यपि मुकुलका था परन्तु राजकार्य रणमल और उनके पुत्र जोधाजी ही चलाया करते थे । जब मुकुल गोदसे उठकर इधर उधर चले जाते तो रणमल अकेले राजसिहासन पर बैठे रहते, महाराणाके छत्र-चवर उन पर डुला करते । यह बात मेवाड़के सरदारोंके

महाराणाकी बात सहर्ष मान ली। उन्होंने
शपथ खाकर महाराणाको विश्वास दिलाया। कहा तो महा
राणा ससार छोड़ कर चण्डको गद्दी देकर धर्म जीवन बिताने
चिन्तामें थे और कहा उन्हें पचास वर्षकी अवस्थामे बारह
की एक कुमारीसे विवाह करना पडा। इस विवाहसे
उत्पन्न हुए। जिस समय मुकुल ५ वर्षके थे, गया पर
मियोंके आक्रमणकी बात सुनी गयी। महाराणाने जब
जानेकी तैयारी की तो उन्होंने चण्डको बुला कर कहा
जिस कठोर व्रतके साधनके लिये जा रहा हू, उसे पूरा कर वापस
लौटनेकी आशा नही। यदि मैं न लौटा तो मुकुलकी जीविका
का क्या प्रबन्ध किया जायेगा? तेजस्वी चण्ड अपनी भीष्म
प्रतिज्ञाको तो भूले ही न थे। उन्होंने बड़ी गम्भीरतासे उत्तर
दिया, पिताजी, मुकुलकी जीविका चित्तौड़का राजसिहासन है।
चण्डने जब देखा कि मेरे कथनमात्रसे पिताजीको शायद सन्तोष
न हो इसलिये उन्होने उनके सामने ही मुकुलका अभिषेक
करानेका निश्चय किया। पाच वर्षके बालक मुकुल राजगद्दी पर
बैठे। सबसे पहले त्यागवीर चण्डने उन्हें 'महाराणा' कह
कर अभिवादन किया। पिताके चरण और चित्तौड़का राज
सिहासन छू कर चण्डने प्रतिज्ञा की कि मैं शुद्ध मनसे शासनका
देख माल करूगा, जब तक कि मुकुल पूर्ण अवस्था न प्राप्त कर
ले। चण्ड मन्त्रिसभाके प्रधान बने और यह भी निश्चय हुआ
कि यदि किसी सामन्तको भूमि दी जायेगी तो दानपत्र
पर महाराणाके हस्ताक्षरके ऊपर चण्डकी तलवारका चिन्ह
रहा करेगा।

राठोर कुमारी चाहती थी कि जब तक मुकुल बडा न हो,



मीराबाईकी ईश्वर-भक्ति ।

गया, जिसे तैयार करानेमें १० वर्ष लगे। कुछ दिनोंके मालवाका शासक महाराणाका मित्र बन गया। जब ने महाराणा पर चढ़ाई की थी तो मालवारका शासक महारा की सहायताके लिये भुनभुनूके मैदानमें पहुचा। बादशाह बु तरह हार गया और उसकी शक्ति इतनी क्षीण हो गयी कि कई बरसों तक आक्रमणकी बात किसी स्थानके सम्बन्धमें भी सोच सका। महाराणाने कमलवीर दुर्ग खड़ा किया। आबू पहाड़ पर एक महल बनवाया गया जिसमें गर्मीके दिनोंमें महा राणा रहा करते थे। महाराणा अच्छे लेखक और कवि भ थे। उन्होंने 'गीतगोविन्द' नामक सस्कृत पुस्तककी टीका लिखी है महाराणाकी रानियोंमें सबसे प्रसिद्ध मीराबाई हुई हैं।

मीराबाईके पिता राठोर वशीय थे। उनका नाम महारा रत्नसिह था। महाराणी जितनी सुन्दरी थीं उतनी ही धर्मपर यणा भी थीं। उनका स्वर बड़ा ही सुरीला था। उन्हों कृष्ण-गुण गान तैयार किये, जो आज भी सर्वत्र गाये जाते हैं मीराबाई बडी ही कृष्णभक्त थीं और बचपनसे ही उनके हृदय इस भगवद्भक्तिने स्थान पालिया था। वे बचपनसेही कृष्णकी मूर्ति की पूजा किया करती थीं और कहती थीं कि कृष्णजी ही म पति हैं। जब वे चित्तौड़ आयीं, तो अपने साथ कृष्ण मूर्ति ले आयी थीं। उनकी सास इस अधिक भक्तिसे असन्तुष्ट हुई जब मीराबाईने अपना मत जरा भी न बदला तो उनके रहने लिये अलग प्रबन्ध कर दिया गया और कुम्भको आज्ञा हुई कि वे मीराबाईके पास न जायें। मीराबाई रातको कृष्णमूर्ति सज कर उससे पतिकी तरह बातें किया करती थीं, जिससे लोगोंके उनके चरित्रके सम्बन्धमें सन्देह हुआ। एक रातको कुम्भ

नके निवास स्थानके पास पहरा दिया। जब उनके कानमें ीराबाईकी बातें पड़ीं तो वे नङ्गी तलवार लेकर कमरेमें पहुचे। न्होंने पूछा कि किससे बातें हो रही थीं। मीराबाईने अपने रल स्वभावसे उत्तर दिया कि मैं अपने पतिसे बातें कर रही थी। कमरेमें कृष्णमूर्तिके सिवा और कोई पाया न गया। इस घटना का प्रभाव कुम्भ पर पड़ा और मीराबाईको खर्च वगैरहका कुछ भी कष्ट न रहा। मीराबाई रात्रिके समय अकेली गाया बजाया करती थीं। यह बात रनवासकी स्त्रियोंको भद्दी मालूम हुई। कुम्भने मीराबाईको अपने हाथसे विषका प्याला भर कर पिलाया, परन्तु वह हलाहल विष उनके लिये अमृत हो गया। जब मीराबाईको दूर करनेका उपाय काममें न आ सका, तो वे स्वय ही वृन्दावन चली गयीं। वहा उन्होंने मन्दिर बनवाये। महाराणा कुम्भ उन्हे वापस लानेके लिये स्वय वृन्दावन गये, परन्तु मेवाड़वासी फिर उनके दर्शन न कर सके, क्योंकि मीराबाईने द्वारकामें जाकर द्वारकानाथकी मूर्तिके सामने आवेशमें आकर अपने प्राण त्याग दिये। मीराबाईका नाम ससारमें अमर हो गया।

महाराणा कुम्भका विवाह मालवा गांवकी एक राठोर राजकुमारीके साथ भी हुआ था। उस कन्याकी सगाई महाराणाके साथ हो जाने पर वह किसी दूसरेको व्याही जाने वाली थी, परन्तु महाराणा इसमें अपना अपमान समझ उसका अपहरण कर लाये। महाराणा कुम्भने ५० वर्षसे अधिक शासन किया। उनके पुत्र उदयसिहने उन्हे मार डाला। इस हत्यारेका चरित्र जैसा कलङ्कित है, वैसा मेवाड़के इतिहासमें और किसीका नहीं।

पिताको मार कर भी जब उदयसिहको गद्दी पानेकी आशा न हुई तो उसने मेवाड राज्यके बहुतसे भाग राठोर तथा

नके निवास स्थानके पास पहरा दिया। जब उनके कानमें
राबाईकी बातें पड़ीं तो वे नङ्गी तलवार लेकर कमरेमें पहुचे।
न्होंने पूछा कि किससे बातें हो रही थीं। मीराबाईने अपने
रल स्वभावसे उत्तर दिया कि मैं अपने पतिसे बातें कर रही थी।
मरेमें कृष्णमूर्तिके सिवा और कोई पाया न गया। इस घटना
ा प्रभाव कुम्भ पर पड़ा और मीराबाईको खर्च वगैरहका कुछ
भी कष्ट न रहा। मीराबाई रात्रिके समय अकेली गाया बजाया
करती थीं। यह बात रनवासकी स्त्रियोंको भद्दी मालूम हुई।
कुम्भने मीराबाईको अपने हाथसे विषका प्याला भर कर
पिलाया, परन्तु वह हलाहल विष उनके लिये अमृत हो गया।
जब मीराबाईको दूर करनेका उपाय काममें न आ सका, तो वे
स्वय ही वृन्दावन चली गयीं। वहां उन्होंने मन्दिर बनवाये।
महाराणा कुम्भ उन्हें वापस लानेके लिये स्वय वृन्दावन गये, परन्तु
मेवाड़वासी फिर उनके दर्शन न कर सके, क्योंकि मीराबाईने
द्वारकामें जाकर द्वारकानाथकी मूर्तिके सामने आवेशमें आकर
अपने प्राण त्याग दिये। मीराबाईका नाम ससारमें अमर हो गया।

महाराणा कुम्भका विवाह मालवा गांवकी एक राठोर राजकुमारीके साथ भी हुआ था। उस कन्याकी सगाई महाराणाके साथ हो जाने पर वह किसी दूसरेको व्याही जाने वाली थी, परन्तु महाराणा इसमें अपना अपमान समझ उसका अपहरण कर लाये। महाराणा कुम्भने ५० वर्षसे अधिक शासन किया। उनके पुत्र उदयसिहने उन्हें मार डाला। इस हत्यारेका चरित्र जैसा कलङ्कित है, वैसा मेवाड़के इतिहासमें और किसीका नहीं।

पिताको मार कर भी जब उदयसिहको गद्दी पानेकी आशा न हुई तो उसने मेवाड़ राज्यके बहुतसे भाग राठोर तथा आस-

सूरजमल दक्षिणमें कई स्थानोंको जीतनेमें समर्थ हुआ और उसने चित्तौड पर भी धावा कर दिया। महाराणा उससे लड़े और दोनों भाइयोंमें खूब युद्ध हुआ। पहिले दिन युद्ध हो चुकने पर महाराणाके पुत्र पृथ्वीराज अपने चाचा सूरजमलके पास गये। दोनोंमें प्रेम सवाद हुआ और दोनोंने एक साथ भोजन भी किया। इसके बाद निश्चय हुआ कि दूसरे दिन सवेरे दोनोंमें लडाई हो। इस लडाईमें सूरजमल मारे गये।

सिरोही वालोंके साथ पृथ्वीराजकी बहनका विवाह हुआ था। उसके साथ बहुत बुरा वर्ताव किया जाता था, इसलिये पृथ्वीराजने सिरोही पर चढाई की और अपनी बहनके भिक्षा मागने पर सिरोही वालोंकी जान तो न ली, परन्तु उनके शिर पर अपनी बहनकी जूतिया रखायीं। जब वे शान्त होकर लौटे तो उनके खानेके लिये विप मिश्रित लड्डु बाध दिये गये थे, जिन्हें खाते ही वे राहमें मर गये।

कुछ ही कालमें महाराणा रायमलकी मृत्यु हो गयी और संग्रामसिह उनके स्थान पर चित्तौडके शासक हुए।

—·—

पासके राजाओंमें सहायता पानेके लिये बाट दिये। जब इससे भी उसका उद्देश्य सिद्ध न हुआ, तो वह दिल्ली चला गया और अपनी कन्याका विवाह कर देनेकी बात कह कर बादशाहकी सहायताका प्रार्थी हुआ। ईश्वरको यह बात स्वीकार न थी कि स्वर्गीय वप्पाके वंशका गौरव इस तरह धूलमें मिले, इसलिये उदयसिंहकी पापेच्छा पूर्ण न हो सकी। वह बादशाहसे मिल कर ज्यों ही लौटा, उसके शिर पर अकस्मात् बिजली गिरी और वह वहीं मर गया।

सन् १४७६ ई० में कुम्भके द्वितीय पुत्र रायमल चित्तौड़के सिंहासन पर बैठे। गद्दी पर बैठते ही इन्हें दिल्लीके बादशाहके आक्रमणका सामना करना पड़ा। भीषण सग्रामके बाद महाराणाकी विजय हुई। मालवाके शासक गयासुद्दीनके साथ कई वार युद्ध हुआ, जिसमें महाराणाकी ही विजय हुई। अन्तमें मालवाके साथ सन्धि हो गयी। महाराणा जयमलके शासनमें घरेलू युद्धके लक्षण दिखायी दिये। इनके तीनों पुत्र और भाई सूरजमल गद्दी पानेके लिये आपसमें लड़ने लगे। परस्परका विरोध देखकर महाराणाने अपने दो पुत्र निकाल दिये और तीसरा मर गया। दोनों पुत्र पृथ्वीराज, सग्रामसिंह मेवाड़से चले गये। सग्रामसिंह भीलोंमें जा मिले और उन्हींके साथ भेड़ बकरी चराते रहे। उन्होंने श्रीनगरके एक राठोर कर्मचन्द्रकी पुत्रीसे अपना विवाह किया और वे अपने ससुरके साथ रहने लगे। महाराणा जयमलने पृथ्वीराजको बुलाकर खूब धमकाया और उन्हे फिर देशसे निकलवा दिया। पृथ्वीराजने जब देशसे निकल कर कई स्थान जीते तो महाराणा उनकी वीरतासे बड़े सन्तुष्ट हुए और उन्हे वापस बुला लिया। महाराणाका भा

प्रशंसा सुन कर फरवरी १५२७ में उसने मेवाड़ पर चढाई की। उसके साथ बहुत बड़ी सेना थी । इधर राजपूत कुलकेसरी वीर-शिरोमणि महाराणा सग्रामसिंह भी अपनी सेना और सामन्तोंको लेकर उसका सामना करनेके लिये बढे । बियानामें बादशाहकी अग्रसेनाके साथ महाराणाकी मुठभेड़ हुई और वह एकदम नष्ट कर दी गयी। और भी सैनिक सहायताके लिये आये और वे भी काट डाले गये। इस पराजयसे बादशाहकी प्रधान सेनामें बड़ा क्षोभ और निरुत्साह उत्पन्न हुआ । बादशाह भी बड़ा दु खी हुआ।

बाबरने अपने डेरेके चारों ओर बडी बड़ी खाइया खुदार्यी और मिट्टीके ऊ चे बाध तैयार कराकर उन पर तोपे लगवा दीं। इससे भी कुछ फल न हुआ। बादशाहकी सेनामें राजदूतोंका डर बहुत बुरी तरहसे समाया हुआ था। बाबरने अपनी सेनाको उत्साहित करनेका बड़ा प्रयत्न किया, परन्तु उसका साहस न हुआ। बाबरने अपने पुराने पापोंके प्रायश्चित्तके लिये ईश्वरसे प्रार्थना की और शराबकी बोतले तथा सोने-चादीके शराब पीने के बर्तन नष्ट करा कर उनके टुकड़े भिखारियों और फकीरोंको बाट दिये। नमाजके बाद बादशाहने अपने सैनिकोंके हाथमें कुरान देकर उनसे शपथ करायी कि या तो इस युद्धमें विजय प्राप्त करेंगे या यहीं पर लड कर मर जायेंगे । इस कार्यका यथोचित फल हुआ। यदि निरुत्साहके समय महाराणा आक्रमण कर देते तो भारतका इतिहास ही बदल कर न जाने क्या हो जाता। विपत्तिके समय शत्रु पर आक्रमण करना रणनिपुण महाराणाने अपने धर्म और नीतिके विरुद्ध समझा। बादशाह बाबरने एक और चाल चली थी। महाराणाके पास उन्होंने एक दूत भेजा और उसके

सप्तम-परिच्छेद ।

राणा संग्रामसिंह ।

सन् १५०९ ई० मे महाराणा सग्रामसिहको चित्तौड़की राज गद्दी मिली। ये बडे भारी राजनीतिज्ञ थे। मेवाड़की बड़ी भारी उन्नति हुई। महाराणा सग्रामसिह यदि अपने समयके छत्रपति राजा कहे जायें, तो कोई अत्युक्ति नहीं, क्योंकि प्राय सभी देशोंके राजा उनका लोहा मान गये थे, उस समय भी मेवाड़में घरेलू युद्ध जारी था। इस सुयोगको पाकर गुजरात और मालवाके शासकोंने विद्रोहियोंको बहुत कुछ सहायता देनी चाही, परन्तु महाराणाकी राजनीतिज्ञताके कारण उनका उद्देश्य पूरा न हुआ। महाराणाने घरेलू झगड़ा दबा कर दोनोंको इस तरह शक्तिहीन बनाया कि वे बहुत दिनों तक शिर न उठा सके। महाराणाने दिल्ली और मालवाके साथ १८ बार युद्ध किया। दिल्लीके बादशाह इब्राहीम लोदीने दो बार चित्तौड पर चढाई की। एक बार तो बादशाहके दो चार सिपाही ही बच कर वापस गये। दूसरी बार महाराणा बादशाहके किसी सम्बन्धीको पकड़ लाये थे जिसके लिये उन्हे बहुतसी भेट दी गयी, उत्तरमें बीनाके पास पीलाखाल नदी, पूर्वमे सिन्धु, दक्षिणमें मालवा और पश्चिम में मेवाड़के पहाड़ महाराणाकी शासन-सीमा थे।

सन् १५२६ में मुगल खान्दानका बाबर इब्राहीम लोदीको मार कर दिल्लीमें तख्त पर बैठा और मेवाडकी समृद्धि तथा सौन्दर्यकी

प्रशंसा सुन कर फरवरी १५२७ में उसने मेवाड़ पर चढाई की। उसके साथ बहुत बड़ी सेना थी । इधर राजपूत कुलकेसरी वीर-शिरोमणि महाराणा सग्रामसिंह भी अपनी सेना और सामन्तोंको लेकर उसका सामना करनेके लिये बढे । बियानामें बादशाहकी अग्रसेनाके साथ महाराणाकी मुठभेड़ हुई और वह एकदम नष्ट कर दी गयी। और भी सैनिक सहायताके लिये आये और वे भी काट डाले गये। इस पराजयसे बादशाहकी प्रधान सेनामें बड़ा क्षोभ और निरुत्साह उत्पन्न हुआ । बादशाह भी बडा दुःखी हुआ।

बाबरने अपने डेरेके चारों ओर बडी बड़ी खाइयां खुदायीं और मिट्टीके ऊंचे बांध तैयार कराकर उन पर तोपे लगवा दीं। इससे भी कुछ फल न हुआ। बादशाहकी सेनामें राजदूतोंका डर बहुत बुरी तरहसे समाया हुआ था। बाबरने अपनी सेनाको उत्साहित करनेका बडा प्रयत्न किया, परन्तु उसका साहस न हुआ। बाबरने अपने पुराने पापोंके प्रायश्चित्तके लिये ईश्वरसे प्रार्थना की और शराबकी बोतले तथा सोने-चांदीके शराब पीने के बर्तन नष्ट करा कर उनके टुकड़े भिखारियों और फकीरोंको बांट दिये। नमाजके बाद बादशाहने अपने सैनिकोंके हाथमें कुरान देकर उनसे शपथ करायी कि या तो इस युद्धमें विजय प्राप्त करेंगे या यहीं पर लड कर मर जायेंगे । इस कार्यका यथोचित फल हुआ। यदि निरुत्साहके समय महाराणा आक्रमण कर देते तो भारतका इतिहास ही बदल कर न जाने क्या हो जाता। विपत्तिके समय शत्रु पर आक्रमण करना रणनिपुण महाराणाने अपने धर्म और नीतिके विरुद्ध समझा। बादशाह बाबरने एक और चाल चली थी। महाराणाके पास उन्होंने एक दूत भेजा और उसके

द्वारा सन्धिका प्रस्ताव किया। जब महाराणाने दूतसे पूछा कि वादशाह किन शर्तों पर सन्धि करना चाहते हैं तो उसने उत्तर दिया कि सन्धिकी शर्तें आप पर ही छोड़ दी गयी हैं। शिलादित्य नामक एक तूवरवंशीय राजपूत महाराणाके अधीन काम किया करता था, जिस पर महाराणाजीका पूर्ण स्नेह और विश्वास था। महाराणाने उसे ही सन्धिकी शर्तें समझा कर बादशाहके पास भेज दिया। सन्धि स्वीकृत न हुई। देशद्रोही राजपूतने विश्वासघात किया। उसने सन्धिमें वाधा उपस्थित की। १६ मार्चको दोनों ओरसे युद्धकी घोषणा की गयी। कई दिनों तक दोनों दलोंमें घोर संग्राम होता रहा। अबकी वार बाबरके पास कई तोपें थीं, जिन्हें दागने वाले फिरङ्गी थे। तोपोंके गोलोंके कारण हजारों राजपूत मारे गये।

महाराणाने शिलादित्यको सेनाके सम्मुख-भागकी रक्षा करने के लिये रणक्षेत्रमें भेजा। जब तक महाराणा पास रहे, उसने शत्रु पर वीरतापूर्वक आक्रमण किये, परन्तु महाराणाके कुछ अलग होते ही वह बाबरसे जा मिला। जब महाराणाने विश्वास घातकी बात सुनी तो उनका दिल एकदम टूट गया। महाराणाके बहुतसे सहायक युद्धमें काम आये। इब्राहीम लोदीके इकलौते पुत्र भी महाराणाकी सहायता करने आये थे, वे भी मारे गये। बाबर की सेनाके भी बहुतसे आदमी काम आये। महाराणा इस युद्धमें हार कर चित्तौड लौटे। वे मेवाडके पहाड़ी स्थानोंमें चले गये। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि यदि मैं मुसलमानोंका गर्व चूर न कर सका। तो चित्तौड न लौट सकूंगा। यदि वे जीवित रहते तो अपनी प्रतिज्ञा अवश्य ही पूरी करते, परन्तु मन्त्रियोंने उन्हें विष देकर मार डाला। कई युद्धोंमें लड़नेके कारण महाराणाकी एक आंख

जाती रही थी। एक हाथ और एक पांव भी कट गया था और शरीरमें सैकड़ों घाव थे।

महाराणा बड़े प्रजासक्त थ। एक समय देशमें बड़ा भीषण अकाल पड़ा। लोग वृक्षोंकी छाल और घास उबाल कर खाने लगे। एक दिन जब महाराणा भोजन कर रहे थे, तो सागकी कमी होने पर रसोई बनाने वालेने कहा कि देशमें बड़ा अकाल है और प्रजा भूखों मर रही है। महाराणा यह सुन कर बडे दु खी हुए। उन्होंने कहा कि प्रजाके कष्टकी बात मुझसे क्यों नहीं कही गयी। यदि प्रजा पत्तिया और घास खाती है, तो मैं किस तरह उत्तमोत्तम भोजन कर सकता हू। उन्होंने आज्ञा दी कि जब तक अकाल न मिटे मेरे लिये भी वृक्षोंकी घास उबाली जाया करे। महाराणाने अपनी इस प्रतिज्ञाके अनुसार तीन चार महीने तक उबले हुए पत्ते और घास खाया।

महाराणासग्राम सिंहकी सेनाके अध्यक्ष सेलम्ब्राके सरदार थे। उनके अनूपसिंह नामक पुत्र थे। अनूपसिंह भी महाराणाकी सेनामें रहकर बाहरसे लड़े थे। पहले युद्धके बाद वे गिरफ्तार कर लिये गये। उनसे बाबरने पूछा कि चित्तौडके किलेके भीतर जानेका सुगम मार्ग क्या है और महाराणाक पास कितनी सेना है। इसके उत्तरमें अनूपसिंहने कहा कि यदि आप ससारका सुगम मार्ग जान जायें तो चित्तौडके किलेका भी मार्ग जान सकेंगे और यदि आकाशके तारे गिन सकें तो आपको यह भी पता लग जायगा कि महाराणाके पास कितनी सेना है। जब उनसे राजपूत महिलाओंके सम्बन्धमें पूछा गया तो वे क्रोधमें लाल हो गये। उन्होंने देश और धर्मके सामने अपने छुटकारे की जरा भी परवा न की। उनके मित्र जाजसिंह जो एक दूसरे

द्वारा सन्धिका प्रस्ताव किया। जब महाराणाने दूतसे पूछा कि वादशाह किन शर्तों पर सन्धि करना चाहते हैं तो उसने उत्तर दिया कि सन्धिकी शर्तें आप पर ही छोड़ दी गयी हैं। शिलादित्य नामक एक तूबरवंशीय राजपूत महाराणाके अधीन काम किया करता था, जिस पर महाराणाजीका पूर्ण स्नेह और विश्वास था। महाराणाने उसे ही सन्धिकी शर्तें समझा कर बादशाहके पास भेज दिया। सन्धि स्वीकृत न हुई। देशद्रोही राजपूतने विश्वासघात किया। उसने सन्धिमें वाधा उपस्थित की। १६ मार्चको दोनों ओरसे युद्धकी घोषणा की गयी। कई दिनों तक दोनों दलोंमें घोर सग्राम होता रहा। अबकी वार बावरके पास कई तोपे थीं, जिन्हे दागने वाले फिरङ्गी थे। तोपोंके गोलोंके कारण हजारों राजपूत मारे गये।

महाराणाने शिलादित्यको सेनाके सम्मुख-भागकी रक्षा करने के लिये रणक्षेत्रमें भेजा। जब तक महाराणा पास रहे, उसने शत्रु पर वीरतापूर्वक आक्रमण किये, परन्तु महाराणाके कुछ अलग होते ही वह बावरसे जा मिला। जब महाराणाने विश्वास घातकी बात सुनी तो उनका दिल एकदम टूट गया। महाराणाके बहुतसे सहायक युद्धमें काम आये। इब्राहीम लोदीके इकलौते पुत्र भी महाराणाकी सहायता करने आये थे, वे भी मारे गये। बाबर की सेनाके भी बहुतसे आदमी काम आये। महाराणा इस युद्धमें हार कर चित्तौड लौटे। वे मेवाडके पहाड़ी स्थानोंमें चले गये। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि यदि मैं मुसल्मानोंका गर्व चूर न कर सका। तो चित्तौड़ न लौट सकूंगा। यदि वे जीवित रहते तो अपनी प्रतिज्ञा अवश्य ही पूरी करते, परन्तु मन्त्रियोंने उन्हें विष देकर मार डाला। कई युद्धोंमें लडनेके कारण महाराणाकी एक आंख

फासी चढ गये। जब अनूपसिंह घर आये तो अपनी स्त्रीके
से सब बातें सुन कर जाजसिंहकी रक्षाके लिये चले। जाज-
ह तो फासी पर लटक ही चुके थे। अनूपसिंह भी गिरफ्तार
लिये गये। उनकी स्त्री पतिकी मृत्यु सुन कर चितामें भस्म
गयी।

महाराणा सग्रामसिंहके सात पुत्र थे, जिनमेंसे दो तो अल्पा-
थामें ही मृत्युको प्राप्त हुए और तृतीय पुत्र रत्नसिंह गद्दी पर
ि। राजसिंहासन पर बैठते ही उन्होंने आज्ञा निकाली कि
चौडका द्वार सदा खुला रखा जाये। महाराणाके अम्बरके
जा पृथ्वीराजकी पुत्रीके साथ गुप्त विवाह किया था। स्वय
थ्वीराजको यह बात न मालूम थी। उन्होंने हाडावशीय सर-
र सूरजमलके साथ अपनी पुत्रीका विवाह कर दिया। जब
हाराणाको इस विवाहकी खबर लगी तो उन्हें बडा दु ख
आ। राजा सूरजमलकी बहन महाराणाको ब्याही हुई थीं,
सलिये महाराणा उनसे कुछ न कह सके, परन्तु उनके दिलमें
दला लेनेकी इच्छा दिन पर दिन बढती चली गयी। थोड़े दिनमें
हेरियाका दिन आया, जिस दिन महाराणा शिकार खेलने
नेकलते हैं। सूरजमल यद्यपि महाराणाके अधीन न थे, परन्तु
े महाराणाको बडा समझ उनके साथ युद्ध-उत्सवोंमें सामन्तोंके
समान सम्मिलित होते थे। सूरजमल महाराणाके साथ शिकार
खेलनेको निकले। महाराणाने अवसर देख कर सूरजमलको
ललकारा। दोनोंने हाथमें तलवारें ले ली। खूब युद्ध हुआ
और दोनों काम आये।

महाराणा रत्नसिंहके एक ही पुत्र था जो महाराणाकी आज्ञा
से पन्द्रह सोलह वर्षकी अवस्थामें ही फासी पर लटका दिया गया

राजपूत सरदारके पुत्र थे, बाबरके विरुद्ध महाराणाकी सेनामें लड़े थे। अनूपसिंह अपनी स्त्री और पुत्रका भार इनके ही सुपुर्द कर गये थे। अनूपसिंहसे जो कन्या व्याही गयी थी, उसे बचपनमें जाजसिंह भी बहुत चाहते थे, क्योंकि वह अत्यन्त सुन्दरी थी। अनूपसिंह भी उसे चाहते थे, परन्तु एक दूसरेको इस प्रेमकी बात न मालूम थी। अन्तमें जब अनूपसिंहके साथ विवाह हो गया तो जाजसिंहने अनूपसिंसे अपने प्रेमकी बात कही और प्रतिज्ञा की कि अब मैं इस कन्याको अपनी बहन समझूंगा और आजीवन विवाह न करूंगा। अनूपसिंह इस प्रतिज्ञा और प्रेमरहस्यको सुन कर बड़े दुःखी हुए।

जब अनूपसिंह युद्धमें बन्दी हो गये और जाजसिंह उनकी स्त्रीके पास आये तो उन्हें अकेला देख राजपूत महिला समझी कि मेरा पति मारा गया। जाजसिंहने कहा कि वे मारे तो नहीं गये, परन्तु कैद कर लिये गये हैं। उन्होंने मुझ पर आपकी रक्षाका भार सौंपा है इसलिये आप चित्तौड़में न रह कर मेरे साथ चलें। जाजसिंहकी यह बात सुन कर महिला क्रुद्ध हुई और उनसे कहने लगी कि अपनी पापेच्छा पूर्ण करनेके लिये तूने मेरे पतिको कैद कराया है। तू मेरे सतीत्वको नष्ट करनेकी कुत्सित इच्छा रखता है। जाजसिंहने अपने हृदयकी पवित्रताकी बहुत सफाई दी, परन्तु जब अनूपसिंहकी स्त्री सन्तुष्ट न हुई तो वे उसके पाससे चले गये और प्रतिज्ञा कर गये कि अनूपसिंह तुम्हारे पास आयेंगे। बादशाहके कर्मचारियोंसे प्रार्थना कर वे वहां पहुंचे जहां पर अनूपसिंह कैद थे। उन्होंने अनूपसिंहके कपड़े पहने और अनूपसिंहसे कहा कि महाराणाने तुम्हें शीघ्र ही बुलाया है। अनूपसिंहको कैदसे बाहर कर वे उनकी जगह

फासी चढ गये। जब अनूपसिंह घर आये तो अपनी स्त्रीके
से सब बातें सुन कर जाजसिंहकी रक्षाके लिये चले। जाज-
ह तो फासी पर लटक ही चुके थे। अनूपसिंह भी गिरफ्तार
लिये गये। उनकी स्त्री पतिकी मृत्यु सुन कर चितामें भस्म
गयी।

महाराणा संग्रामसिंहके सात पुत्र थे, जिनमेंसे दो तो अल्पा-
थामें ही मृत्युको प्राप्त हुए और तृतीय पुत्र रत्नसिंह गद्दी पर
ठे। राजसिंहासन पर बैठते ही उन्होंने आज्ञा निकाली कि
चित्तौडका द्वार सदा खुला रखा जाये। महाराणाके अम्बरके
जा पृथ्वीराजकी पुत्रीके साथ गुप्त विवाह किया था। स्वय
थ्वीराजको यह बात न मालूम थी। उन्होंने हाडावशीय सर-
ार सूरजमलके साथ अपनी पुत्रीका विवाह कर दिया। जब
हाराणाको इस विवाहकी खबर लगी तो उन्हें बडा दुःख
ुआ। राजा सूरजमलकी बहन महाराणाको ब्याही हुई थीं,
सलिये महाराणा उनसे कुछ न कह सके, परन्तु उनके दिलमें
दला लेनेकी इच्छा दिन पर दिन बढती चली गयी। थोडे दिनमें
अहेरियाका दिन आया, जिस दिन महाराणा शिकार खेलने
निकलते हैं। सूरजमल यद्यपि महाराणाके अधीन न थे, परन्तु
वे महाराणाको बडा समझ उनके साथ युद्ध-उत्सवोंमें सामन्तोंके
समान सम्मिलित होते थे। सूरजमल महाराणाके साथ शिकार
खेलनेको निकले। महाराणाने अवसर देख कर सूरजमलको
ललकारा। दोनोंने हाथमें तलवारें ले लीं। खूब युद्ध हुआ
और दोनों काम आये।

महाराणा रत्नसिंहके एक ही पुत्र था जो महाराणाकी आज्ञा
से पन्द्रह सोलह वर्षकी अवस्थामें ही फासी पर लटका दिया गया

था। महाराणा सग्रामसिहने मालवा और गुजरातके मुसलमान शासकोंको बुरी तरह हराया था। वे दोनों इस पराजयसे दुःखी होकर मेवाड़ पर सदा दृष्टि लगाये रहते थे। जब महाराणा रत्नसिहके समयमें सामन्तों और सरदारोंके बीच कुछ फूट दिखायी दी तो मेवाड़ पर आक्रमण किया गया। महाराणा आक्रमणकी बात सुन और घरमें फूट देख बड़े दुःखी हुए, परन्तु मन्त्रियोंने उन्हें समझाया कि मेवाड़की रक्षा आपसमें मेल न रहने पर भी अवश्य की जायगी इसलिये रणभेरी बजायी जाये।

महाराणाने रणभेरी बजवा कर हुक्म दिया कि मेवाड़की रक्षाके लिये सब सामन्त और सरदार कराला देवीके मन्दिर में ठीक १२ बजे उपस्थित हों। सामन्त और सरदार ठीक समय पर पहुच गये, परन्तु जिस समय मन्दिरमें बारहका घण्टा बजा, युवराज वहा पर उपस्थित न थे। उनका एक भीलिनीसे स्नेह था, इसलिये वे उससे मुलाकात करने चले गये थे कि इतनेमें ही घण्टा बज गया। घण्टा बजते ही सरदारोंमें कानाफूसी होने लगी कि युवराज तो अभी तक नहीं आये। यदि हम लोगोंमें से कोई समय पर न आता तो देशद्रोही कहलाता और सम्भव था कि वह फासी पर भी लटका दिया जाता, परन्तु युवराज किस तरह फासी पर लटकाये जा सकते हैं। जब महाराणाने पूछा कि सब सरदार सामन्त आ गये तो एक सरदारने खडे होकर ताना मारा कि सब तो आ गये, परन्तु युवराज नहीं आये। महाराणाने यह बात सुन कर अपने मन्त्रीसे कहा कि फासी तैयार करो। मन्त्री यह बात सुन कर डर गया और बोला कि महाराज, चित्तौड़के कुलका दीपक न बुझना चाहिये

महाराणाने उत्तर दिया कि युवराजकी जगह पर यदि और कोई होता तो उसे भी यही दण्ड दिया जाता। मैं कोई दूसरी बात नहीं सुन सकता। युवराज, मन्दिरमें बारहका घण्टा बजता सुन भीलिनीके पाससे दौड़ कर मन्दिरमें पहुच गये थे और उन्हे कुछ ही मिनटका विलम्ब हुआ था। लोगोंने कहा कि महाराणाजी, युवराज तो उपस्थित हैं। महाराणाने कहा कि समय पर उपस्थित नही हुए। जब महाराणाका विचार दृढ़ देखा गया तो मन्दिरमें भीलिनीको बुला कर उसके साथ कचे बासोंसे युवराजका विवाह कराया गया और मन्दिरमें ही सुहाग रात्रि मनवायी गयी। दूसरे दिन सवेरे चित्तौड़के युवराज न्यायके नाम पर फासी पर लटका दिये गये।

महाराणा रत्नसिहके कोई पुत्र न होनेके कारण उनके भाई विक्रमादित्य चित्तौडकी गद्दी पर बैठे। इनके शासनकालमें घरेलू विरोधकी आग बडे जोरसे भभकी। भील भी उनसे नाराज रहने लगे। गुजरातके शासकने अच्छा मौका देख कर फिर चढाई की। महाराणा बून्दी राज्यमें शिकार खेलने गये हुए थे। उनपर वही आक्रमण किया गया। यद्यपि वे बड़ी वीरतासे लड़े, परन्तु सैन्य सहायता न रहनेके कारण कुछ न कर सके। उनके साथ जो सरदार थे, वे भी चित्तौड़ और सग्राम सिहके पुत्र उदयसिहकी रक्षा करने चले गये। गुजरातका सुल्तान बहादुरशाह महाराणा पर विजय पाकर चित्तौड़ पर आ धमका।

महाराणा सग्रामसिह और बाबरके बीच जो भीषण सग्राम देशके गौरवकी रक्षाके लिये हुए थे, उनमें बहुतसे राजपूतवीर रणशय्यापर लेट गये थे, जिससे इस युद्धमें चित्तौड़ प्राय. वीरशून्य

दिखायी देता था, परन्तु मेवाडकी तो यह प्राचीन परिपाटी थी कि यदि देशमें एक वालक भी बचेगा तो वह भी देशकी स्वाधीनताके लिये प्राण त्याग करेगा। महाराणा विक्रमादित्यके आचरणसे जो राजपूत सरदार असन्तुष्ट हो गये थे, वे सकटके समय उस असन्तोपको भूलकर शिशोदिया-कुलके गौरवकी रक्षाके लिये तैयार हो गये। मध्यभारतके मुसल्मान शासकोंने पहले जितनी वार चित्तौड पर चढाई की, उन सबसे यह चढ़ाई भयानक थी। वहादुरशाह, फिरङ्गी गोलन्दाज तथा कई तोपें अपने साथ लाया था। चित्तौड़के जो वीर आक्रमणकारीका सामना करने पहुचे, उनकी सख्या वहुत ही कम थी। मुसल्मान सेनापर वडी वीरतासे आक्रमण किया गया और मुसल्मानोंकी तोपें भीपण अग्निवर्षा करने लगीं। कई वार वहादुरशाहने चित्तौडके दरवाजो पर आक्रमण किया, परन्तु वीर राजपूतोंने उन्हें पीछे हटाया। कई दिनों तक यह युद्ध चला। फिरङ्गी गोलन्दाजने एक नयी युक्ति सोची। उसने पहाड़ीके नीचे सुरङ्ग खोद कर उसमें वारूद भर दी। सुरङ्गमें आग लगाने पर वड़ा भयानक शब्द हुआ और इस शब्दके होते ही किलेकी ५० हाथ जमीन एक साथ उड़ गयी। उसी स्थान पर हाडावीर राजकुमार अर्जुनराव अपने पाचसौ वीरों समेत युद्ध कर रहे थे, वे सेना समेत जमीनके अन्दर धस गये। किलेकी दीवारोंमें भी कई स्थानो पर छेद हो गये। जिस किलेके अन्दर मनुष्य तो क्या एक चींटी भी प्रवेश न कर सकती थी, उसके भीतर वहादुरशाहकी आज्ञासे हजारों सैनिक घुसनेको तैयार हुए। वीरवर, दुर्गाराव और दो चन्द्रावत अपनी थोड़ीसी सेना लेकर किलोंपर आ डटे। ऐसा भीपण युद्ध हुआ और मुसल्मानोंकी इतनी सेना मरी कि लाशों

ऊंचे ढेर पर चढनेसे चित्तौडके भीतरकी कितनी ही चीजें दिखाई पड़ती थीं।

जब बहादुरशाह इस युद्धसे वापस गया और उसने अपने सैनिकोंकी गिनती की तो उसे बडा भय हुआ। उसका भय किस कामका था। इधर चित्तौडके वीरोंकी सख्या भी बहुत थोड़ी रह गयी।

अगले दिन बहादुरशाहने किलेमें प्रवेश करनेके लिये बडा भीषण प्रयत्न किया। छिद्रोंके रक्षक वीर दुर्गाराव आदि युद्धमें काम आ चुके थे, इसलिये किलेकी रक्षाकी चिन्ता तमाम चित्तौड में होने लगी। महारानी जवाहरबाईने कहा कि द्वारोंकी रक्षा का प्रबन्ध मैं कर लूगी। लड़नेवाले निश्चिन्त होकर रणस्थलको जायें। जब मुसल्मानोंने छिद्रोंपर धावा किया तो उन्होंने देखा कि महारानी कई वीर नारियोंको साथ लिये बाल खोले हुए, हाथमें नङ्गी तलवार लिये घोड़े पर रणचण्डीकी मूर्ति बनी बैठी हैं और छिद्रोकी रक्षा कर रही हैं। मुसल्मानोंको आगे बढ़ता देख महारानी और उनके साथकी अन्य वीरागनाओंने तिनकेकी तरह हजारों मुसल्मानोंको काट डाला। मुसल्मानोंकी सेना एक साथ सन्ध्या होते होते महारानीकी छोटोसी सेना पर टूट पडी। उसी समय लोगोंने देखा कि एक भीलकुमार पाचसौ भील बालकोंको लिये घोडे पर चढ़ा हुआ तीर छोड़ता चला आता है। पहले तो महारानीको इस बातकी बड़ी चिन्ता हुई कि यह नया शत्रु कौन आया, परन्तु जब आने वाले सैनिकोंके मुखसे 'मेवाडकी जय' 'बप्पारावल और शिशोदियोंकी जय' सुनी तो महारानीजीका उत्साह कई गुना बढ गया। बहादुरशाहके सब सिपाही मार कर खतम कर दिये गये।

र चुनी हुई सेना साथ लेकर आक्रमण करने पहुचा। वीर त्राणीके साहसको देख कर उसका दिल टूट गया। परन्तु सने तैयारी पूरी कर रखी थी। जब महाराणीने चित्तौड़ रक्षाका ोई उपाय न देखा तो वे अपने दल समेत मुसल्मान सेनाके ीतर चली गयी। कुछ देर तक तो वे घायल होनेपर और शिरके पर तलवारें नाचने पर भी भीषण युद्ध करती रहीं। अन्तमें जब न्हें और कोई सहायता न मिली तो धीरता, दृढता और त्याग ा सच्चा आदर्श दिखाकर वे वीरगतिको प्राप्त हुईं। उनका मस्त दल भी उसी दिन रणशायी बना।

इस दुर्घटनाके बाद सरदारोंने आपसमें विचार किया कि व क्या होना चाहिये। सभामें आवाज उठी कि 'जुहार-व्रत' ौर 'राजबलि' की तैयारी करनी चाहिये। राजबलि किस तरह ोती। महाराणाका खोज करने पर कहीं पता ही न लगा। महा-ाणा सग्रामसिहका एक छोटा बालक ही मौजूद था। वह केस तरह खड्ग धारण करता। जब यह चिन्ता हो रही थी तो वलाके सामन्त बाघाजीने आकर कहा कि मेरी नसोंमें बप्पा-ावलका रक्त बह रहा है। मै इस व्रतका पालन करूगा। सबकी चेन्ता दूर हुई। बाघाजी सिंहासन पर बैठाये गये और उन्होंने णमें जानेकी तैयारी की। सब सरदारोंने पीले कपड़े पहने। आपसमें एक दूसरेसे मिलकर सबने अन्तिम भेट की। सग्राम-सिहके बालक उदयसिहकी रक्षाका भार बूदीके विश्वासी राजाके ाथ सौंपा गया। युद्धके पहले 'जुहार-व्रत' का कार्य सम्पन्न ुआ। चिताए तैयार करनेके लिये जब समय न दिखायी देया तो किलेके भीतर एक बडा गढा खोदा गया और वह ारूद आदिसे भरा गया। कुछ ही देरमें महाराणी कर्णावती

महाराणी जब विजय दुन्दुभि बजाकर चित्तौड़ वापस लौटीं। तो शिशोदियावीरोंने देखा कि भीलकुमार चित्तौड वापस न आकर अपने बचे हुए साथियोंको लेकर दूसरी तरफ जा रहा है। महाराणीने उसका परिचय पानेके लिये उसे बुलवा भेजा। भीलकुमारने आकर महाराणीके चरण छुए। महाराणीने अपने हाथसे भीलकुमारके मस्तक पर तिलक खींच दिया। उस समय तक महाराणीके कोई पुत्र न था। महाराणी जवाहरबाईको जब यह मालूम हुआ कि कुमार महाराणा रत्नसिंहके पुत्रके वीर्यसे उत्पन्न हुआ भीलनीका बालक है, तो उसे शिशोदिया वंशका समझ उनके हर्षका कोई ठिकाना न रहा। भीलकुमारने अपने नानाके यहा जब यह सुना कि मातृभूमि चित्तौड़ पर आक्रमण हुआ है, तो उसने नानासे इस युद्धमें भाग लेनेकी आज्ञा मागी। नानाने कहा कि हम भील हैं इस लिये हमे महाराणाकी सेनामें कोई उच्च स्थान सामन्त रूपसे नहीं मिल सकता। मैं इसी कारण युद्धमें नहीं गया। कुमारने उत्तेजित होकर उत्तर दिया कि क्या चित्तौडपुरी महाराणाकी ही है। जिस मनुष्यने मेवाडमें जन्म लिया है और उसका अन्न खाया है उसका कर्त्तव्य है कि देश पर सकट आने पर उसकी रक्षा करे। नानाका हृदय कुमारकी यह बात सुन कर प्रेमपूर्ण हो गया और उसने कुमारके साथ पाचसौ भील देकर उसे देशरक्षाके लिये रणस्थलमें भेज दिया। वीर बालकने महाराणी जवाहरबाईकी सहायता बड़े ही जटिल समयमें की।

पिछले दिन विजय प्राप्त कर महाराणीजी अगले दिन फिर अपनी सखी सहेलियों और भीलकुमारको लेकर चित्तौड़की रक्षाके लिये जा डटीं। इस दिन स्वय बहादुरशाह हाथी पर चढ़

र चुनी हुई सेना साथ लेकर आक्रमण करने पहुंचा। वीर ाणीके साहसको देख कर उसका दिल टूट गया। परन्तु सने तैयारी पूरी कर रखी थी। जब महारणीने चित्तौड़ रक्षाका ई उपाय न देखा तो वे अपने दल समेत मुसलमान सेनाके तर चली गयी। कुछ देर तक तो वे घायल होनेपर और शिरके पर तलवारें नाचने पर भी भीषण युद्ध करती रहीं। अन्तमें जब न्हें और कोई सहायता न मिली तो वीरता, दृढता और त्याग ा सच्चा आदर्श दिखाकर वे वीरगतिको प्राप्त हुई। उनका मस्त दल भी उसी दिन रणशायी बना।

इस दुर्घटनाके बाद सरदारोंने आपसमें विचार किया कि ब क्या होना चाहिये। सभामें आवाज उठी कि 'जुहार-व्रत' ौर 'राजबलि' की तैयारी करनी चाहिये। राजबलि किस तरह ोती। महाराणाका खोज करने पर कहीं पता ही न लगा। महा-ाणा सग्रामसिंहका एक छोटा बालक ही मौजूद था। वह कस तरह खड्ग धारण करता। जब यह चिन्ता हो रही थी तो वलाके सामन्त बाघाजीने आकर कहा कि मेरी नसोंमें बप्पा-ावलका रक्त बह रहा है। मैं इस व्रतका पालन करूंगा। सबकी चेन्ता दूर हुई। बाघाजी सिंहासन पर बैठाये गये और उन्होंने णमें जानेकी तैयारी की। सब सरदारोंने पीले कपड़े पहने। आपसमें एक दूसरेसे मिलकर सबने अन्तिम भेट की। सग्राम-सिंहके बालक उदयसिंहकी रक्षाका भार बूंदीके विश्वासी राजाके ाथ सौंपा गया। युद्धके पहले 'जुहार-व्रत' का कार्य सम्पन्न ुआ। चिताएं तैयार करनेके लिये जब समय न दिखायी देया तो किलेके भीतर एक बड़ा गढा खोदा गया और वह ारूद आदिसे भरा ... ही देरमें महारणी कर्णावती

महाराणी जब विजय दुन्दुभि बजाकर चित्तौड़ वापस लौटीं, तो शिशोदियावीरोंने देखा कि भीलकुमार चित्तौड़ आकर अपने बचे हुए साथियोंको लेकर दूसरी तरफ जा रहा है। महाराणीने उसका परिचय पानेके लिये उसे बुलवा भेजा। भीलकुमारने आकर महाराणीके चरण छुए। महाराणीने अपने हाथसे भीलकुमारके मस्तक पर तिलक खींच दिया। उस समय तक महाराणाके कोई पुत्र न था। महाराणी जवाहरबाईको जब यह मालूम हुआ कि कुमार महाराणा रत्नसिंहके पुत्रके वीर्यसे उत्पन्न हुआ भीलनीका बालक है, तो उसे शिशोदिया वंशका समझ उनके हर्षका कोई ठिकाना न रहा। भीलकुमारने अपने नानाके यहा जब यह सुना कि मातृभूमि चित्तौड पर आक्रमण हुआ है, तो उसने नानासे इस युद्धमें भाग लेनेकी आज्ञा मागी। नानाने कहा कि हम भील हैं इस लिये हमें महाराणाकी सेनामें कोई उच्च स्थान सामन्त रूपसे नही मिल सकता। मैं इसी कारण युद्धमें नहीं गया। कुमारने उत्तेजित होकर उत्तर दिया कि क्या चित्तौड़पुरी महाराणाकी ही है। जिस मनुष्यने मेवाड़में जन्म लिया है और उसका अन्न खाया है उसका कर्तव्य है कि देश पर सकट आने पर उसकी रक्षा करे। नानाका हृदय कुमारकी यह बात सुन कर प्रेमपूर्ण हो गया और उसने कुमारके साथ पाचसौ भील देकर उसे देशरक्षाके लिये रणस्थलमें भेज दिया। वीर बालकने महाराणी जवाहरबाईकी सहायता बड़े ही जटिल समयमें की।

पिछले दिन विजय प्राप्त कर महाराणीजी अगले दिन फिर अपनी सखी सहेलियों और भीलकुमारको लेकर चित्तौड़की रक्षाके लिये जा डटीं। इस दिन स्वय बहादुरशाह हाथी पर चढ़

ी चुनी हुई सेना साथ लेकर आक्रमण करने पहुंचा। वीर राणीके साहसको देख कर उसका दिल टूट गया। परन्तु उसने तैयारी पूरी कर रखी थी। जब महाराणीने चित्तौड़ रक्षाका कोई उपाय न देखा तो वे अपने दल समेत मुसलमान सेनाके भीतर चली गयी। कुछ देर तक तो वे घायल होनेपर और शिरके ऊपर तलवारें नाचने पर भी भीषण युद्ध करती रहीं। अन्तमें जब उन्हे और कोई सहायता न मिली तो धीरता, दृढ़ता और त्याग का सच्चा आदर्श दिखाकर वे वीरगतिको प्राप्त हुई। उनका समस्त दल भी उसी दिन रणशायी बना।

इस दुर्घटनाके बाद सरदारोंने आपसमें विचार किया कि अब क्या होना चाहिये। सभामें आवाज उठी कि 'जुहार-व्रत' और 'राजबलि' की तैयारी करनी चाहिये। राजबलि किस तरह होती। महाराणाका खोज करने पर कहीं पता ही न लगा। महाराणा संग्रामसिंहका एक छोटा बालक ही मौजूद था। वह किस तरह खड्ग धारण करता। जब यह चिन्ता हो रही थी तो देवलाके सामन्त बाघाजीने आकर कहा कि मेरी नसोंमे बप्पा-रावलका रक्त बह रहा है। मैं इस व्रतका पालन करूंगा। सबकी चिन्ता दूर हुई। बाघाजी सिंहासन पर बैठाये गये और उन्होंने रणमें जानेकी तैयारी की। सब सरदारोंने पीले कपड़े पहने। आपसमें एक दूसरेसे मिलकर सबने अन्तिम भेट की। संग्राम-सिंहके बालक उदयसिंहकी रक्षाका भार बूंदीके विश्वासी राजाके हाथ सौंपा गया। युद्धके पहले 'जुहार-व्रत' का कार्य सम्पन्न हुआ। चिताए तैयार करनेके लिये जब समय न दिखायी दिया तो किलेके भीतर एक बड़ा गढा खोदा गया और वह बारूद आदिसे भरा गया। कुछ ही देरमें महाराणी कर्णावती

तेरह हजार राजपूत बालाओंको अपने साथ लकर जलती हुई अग्निमे कूद पडी। किसीका कोई चिन्ह तक शेष न रहा। रूप, यौवन लावण्य सबकी आहुति क्षण भरमें दे दी गयी।

राजपूत-सरदार निश्चिन्त होकर चित्तौडका द्वार खोलकर रणोन्मत हो बाहर निकले। बाघाजीने थोडेसे सरदारोंको लेकर मुसल्मानी सेनामें प्रवेश किया, परन्तु फल कुछ भी न हुआ। सारे राजपूत वीर बहादुरशाहके सैन्यसागर में लीन हो गये। बहादुरशाहने श्मशान समान चित्तौड़में प्रवेश किया, उसे स्थान स्थान पर कटे हुए अगणित मनुष्य शरीर तथा रक्त मासके ढेर दिखायी दिये। घायल मनुष्य अपने ही हाथसे अपनी छुरिया पेटमें घुसेड़ते देखे गये। इस युद्धमें चित्तौड़के बत्तीस हजार वीरोंने प्राणाहुति दी। पन्द्रह दिन तक बहादुरशाह चित्तोडमें विजयोत्सव मनाता रहा। जब उसने सुना कि दिल्लीके बादशाह हुमायू चित्तौडके उद्धारके लिये बहुत बडी सेना लिये आ रहे हैं, तो वह फौरन चित्तौड त्याग कर अपने देशको चला गया।

यह चित्तौडका दूसरा 'साका' माना जाता है। हुमायूने मालवेकी राजधानी माण्डूको अपने अधिकारमे कर लिया क्योंकि मालवेके शासकने चित्तौडकी चढाईमें बहादुरशाहकी मदद की थी। इसके बाद विक्रमादित्य चित्तौडकी गद्दी पर फिर बैठा दिये गये।

विक्रमादित्यके गद्दीपर बैठनेसे सरदार फिर असन्तुष्ट हुए। उन्होंने विचार किया कि विक्रमादित्यको गद्दीसे उतार कर पृथ्वीराजकी उपपत्नीके गर्भसे उत्पन्न हुए बनवीरको राजगद्दी देनी चाहिये। बनवीरने पहले तो गद्दी स्वीकार न की परन्तु पीछेसे उसने उसे स्वीकार कर लिया।

अष्टम-परिच्छेद ।

उदयसिंह ।

जब सरदारोंने विक्रमादित्यको गद्दीसे उतार कर बनवीरको गद्दी पर बैठाया तो जिस वनवीरने एक दिन चित्तौड़की गद्दी पर बैठनेके लिये बहुत आनाकानी की थी, वही गद्दी पर बैठ कर इस चिन्तामें पड़ा कि चित्तौड़की गद्दी उसके लिये किस तरह सुरक्षित हो। उसने एक बार भी न सोचा कि यह राजसिंहासन जिसका है वह उससे एक दिन वापस मांगेगा। उसने अपना मार्ग साफ करनेका उपाय सोच निकाला। उसने निश्चित किया कि यदि बालक उदयसिंहको इस संसारसे विदा कर दिया जाये, तो मेरे वंशधर निश्चिन्त होकर राज्य कर सकेंगे। उदयसिंहकी अवस्था उस समय केवल ६ वर्षकी थी और उनका लालन पालन एक खीची वंशीय राजपूत धायके हाथमें था। एक दिन रातको दुष्ट वनवीरने राणा विक्रमादित्यको मार डाला। रनवासमें घोर आर्त-नाद हुआ। जब उदयसिंहकी दाई पन्नाने महलोंसे रोनेकी आवाज सुनी तो उसे आश्चर्य हुआ और वह सब हाल जाननेके लिये महलमें जाना ही चाहती थी कि इतनेमें एक बारी जो राजकुमारका जूठन उठाया करता था दौड़ा हुआ आया और बोला कि बहुत बुरा हुआ। वनवीरने राणा विक्रमादित्यको मार डाला। पन्ना पहलेसे ही इस बातको कुछ कुछ जानती थी। उसे निश्चय हो गया कि वनवीर केवल विक्रमादित्यको मार कर ही चुप न होगा, वह

तेरह हजार राजपूत बालाओंको अपने साथ लकर जलती हुई अग्निमें कूद पडी। किसीका कोई चिन्ह तक शेष न रहा। रूप, यौवन लावण्य सबकी आहुति क्षण भरमें दे दी गयी।

राजपूत-सरदार निश्चिन्त होकर चित्तौडका द्वार खोलकर रणोन्मत हो बाहर निकले। बाघाजीने थोडेसे सरदारोंको लेकर मुसल्मानी सेनामें प्रवेश किया, परन्तु फल कुछ भी न हुआ। सारे राजपूत वीर बहादुरशाहके सैन्यसागर में लीन हो गये। बहादुरशाहने श्मशान समान चित्तौडमें प्रवेश किया, उस स्थान स्थान पर कटे हुए अगणित मनुष्य शरीर तथा रक्त मासके ढेर दिखायी दिये। घायल मनुष्य अपने ही हाथसे अपनी छुरिया पेटमें घुसेड़ते देखे गये। इस युद्धमें चित्तौड़के बत्तीस हजार वीरोंने प्राणाहुति दी। पन्द्रह दिन तक बहादुरशाह चित्तौड़में विजयोत्सव मनाता रहा। जब उसने सुना कि दिल्लीके बादशाह हुमायू चित्तौडके उद्धारके लिये बहुत बडी सेना लिये आ रहे हैं, तो वह फौरन चित्तौड त्याग कर अपने देशको चला गया।

यह चित्तौडका दूसरा 'साका' माना जाता है। हुमायूने मालवेकी राजधानी माण्डूको अपने अधिकारमें कर लिया क्योंकि मालवेके शासकने चित्तौड़की चढाईमें बहादुरशाहकी मदद की थी। इसके बाद विक्रमादित्य चित्तौडकी गद्दी पर फिर बैठा दिये गये।

विक्रमादित्यके गद्दीपर बैठनेसे सरदार फिर असन्तुष्ट हुए। उन्होने विचार किया कि विक्रमादित्यको गद्दीसे उतार कर पृथ्वीराजकी उपपत्नीके गर्भसे उत्पन्न हुए बनवीरको राजगद्दी देनी चाहिये। बनवीरने पहले तो गद्दी स्वीकार न की परन्तु पीछेसे उसने उसे स्वीकार कर लिया।

अष्टम-परिच्छेद।

उदयसिंह।

जब सरदारोंने विक्रमादित्यको गद्दीसे उतार कर बनवीरको गद्दी पर बैठाया तो जिस वनवीरने एक दिन चित्तौड़की गद्दी पर बैठनेके लिये बहुत आनाकानी की थी, वही गद्दी पर बैठ कर इस चिन्तामें पड़ा कि चित्तौड़की गद्दी उसके लिये किस तरह सुरक्षित हो। उसने एक बार भी न सोचा कि यह राजसिंहासन जिसका है वह उससे एक दिन वापस मांगेगा। उसने अपना मार्ग साफ करनेका उपाय सोच निकाला। उसने निश्चित किया कि यदि बालक उदयसिंहको इस संसारसे विदा कर दिया जाये, तो मेरे वंशधर निश्चिन्त होकर राज्य कर सकेंगे। उदयसिंहकी अवस्था उस समय केवल ६ वर्षकी थी और उनका लालन पालन एक खीची वंशीय राजपूत धायके हाथमें था। एक दिन रातको दुष्ट वनवीरने राणा विक्रमादित्यको मार डाला। रनवासमें घोर आर्त-नाद हुआ। जब उदयसिंहकी दाई पन्नाने महलोंसे रोनेकी आवाज सुनी तो उसे आश्चर्य हुआ और वह सब हाल जाननेके लिये महलमें जाना ही चाहती थी कि इतनेमें एक बारी जो राजकुमारका जूठन उठाया करता था दौड़ा हुआ आया और बोला कि बहुत बुरा हुआ। वनवीरने राणा विक्रमादित्यको मार डाला। पन्ना पहलेसे ही इस बातको कुछ कुछ जानती थी। उसे निश्चय हो गया कि वनवीर केवल विक्रमादित्यको मार कर ही चुप न होगा, वह

राजकुमार पर भी हाथ साफ करेगा । दाईने राजकुमारको एक टोकरीके अन्दर रख कर उसके उपर पत्ते बिछा दिये और वारीके हाथमें उस टोकरेको देकर कहा कि इसे अभी लेकर किलेसे चला जा। नदीके किनारे पर ठहरना, वहीं मैं तुमसे मिलूगी। राजकुमारके स्थानमें पन्नाने अपने लडकेको सुला दिया जिससे वनवीर को किसी तरहका सन्देह न हो। वह बाहर जाना ही चाहती थी कि वनवीर हाथमें रुधिरसे सनी नङ्गी तलवार लिये पहुचा और उसने पूछा कि उदयसिह कहा है ? स्वामिभक्त पन्नाने अपनी अगुली के इशारेसे अपने पुत्रको दिखा दिया। निर्दयी वनवीरने उसका तुरन्त ही काम तमाम कर दिया। छोटा बालक थोड़ासा चिल्ला कर समाप्त हो गया, दाईके सामने उसके पुत्रकी हत्या हुई, परन्तु वह उसके लिये रो तक न सकी। पुत्रका अन्तिम सत्कार कर वह किलेसे बाहर निकली। रनवासमे रानियोंने और उदयपुरके सब सरदारोंने यही समझा कि वनवीरने सग्रामसिहके पुत्र उदयसिह को मार डाला। पन्ना वारीकी तलाशमें घूमने लगी। चित्तौडकी पश्चिम ओर वेरिस नदीके किनारे वह मिल गया। पन्ना राजकुमार को लेकर वाघाजीके पुत्र सिहरावके पास पहुची, परन्तु उन्होंने वनवीरके भयसे राजकुमारकी रक्षाका भार अपने ऊपर न लिया। इसके बाद पन्ना डूङ्गरपुरके रावल यशकर्णके पास पहुची, परन्तु उन्होंने भी उसकी बात न सुनी। कई दिन पहाडोंके अन्दर और ईदरके आसपासके गावोंमें भीलोंके साथ पन्ना घूमती रही। उन दिनों आशाशाह नामक एक जैन राजपूत कमलमीरके दुर्गमें राज प्रतिनिधि होकर शासन किया करता था। पन्नाने उनसे जाकर प्रार्थना की कि अपने भावी नरेशके प्राण बचाइये। आशाशाहकी ।। उनके पास रही हुई थी। जब आशाशाहने कुछ आनाकानी

थी तो उनकी माताने कहा कि समरसिंहका पुत्र तुम्हारा स्वामी है। यदि इसे भी आश्रय न दोगे, तो फिर किसे दोगे ? कुमारका वहां रहना निश्चित हुआ और आशाशाह उसे अपना भतीजा बना कर प्रयत्नसे रखने लगे।

आशाशाहके यहां किसी उत्सव पर जब बाहरके बहुतसे लोग भोजन करने आये, तो उदयसिंहका ढङ्ग देखकर बहुतसे राजपूतोंके हृदयमें सन्देह हो गया। झलोरके सोनगडे सरदार किसी कार्यवश आशाशाहसे मिलने गये। उनके स्वागतका भार उदयसिंहको मिला। सरदारोंने उदयसिंहको देख कर निश्चय किया कि यह किसी तरह भी आशाशाहका भतीजा नहीं हो सकता। उन्हीके द्वारा सर्वत्र यह समाचार फैला और मेवाडके सभी सामन्त और सरदार, स्वर्गीय राणाके वीरपुत्रका अभिवादन करने पहुचने लगे। चण्डनशीय सालम्ब्रापति साईदास, कैलवापति जागो, क्टोरिया और वेदलाके चौहान आदि कमलमीर पहुचे। दाई पन्ना और बारी बुलाया गया। कमलमीरके सभागृहमें बडा भारी दरबार हुआ। आशाशाहने राजकुमारका सारा वृत्तान्त प्रकट किया, दाई और बारीने समर्थन किया। मेवाडके वृद्ध चौहान सरदारने राजकुमारके साथ बैठ कर एक ही थालमें भोजन किया। जब यह समाचार चित्तौड पहुचा तो वनवीरका हृदय काप उठा। थोडे ही दिनोंके बाद सोनगडे सरदार अखिलरायने अपनी कन्याके साथ उदयसिंहका विवाह कर दिया। विवाह होने पर महाराणा कुम्भकी राजसभामें उदयसिंहके मस्तक पर चित्तौडके सरदारोंने राजतिलक कर दिया। चित्तौड़के सभी सामन्त वनवीरसे अप्रसन्न थे क्योंकि उसने उनके साथ अनेक प्रकारके अत्याचार आरम्भ कर दिये थे। मेवाड़में प्रथा है कि राणाके थालसे दौना निकाल

राजकुमार पर भी हाथ साफ करेगा । दाईने राजकुमारको एक टोकरीके अन्दर रख कर उसके ऊपर पत्ते बिछा दिये और बारीके हाथमें उस टोकरेको देकर कहा कि इसे अभी लेकर किलेसे चला जा। नदीके किनारे पर ठहरना, वहीं मैं तुमसे मिलूगी। राजकुमारके स्थानमें पन्नाने अपने लडकेको सुला दिया जिससे वनवीर को किसी तरहका सन्देह न हो। वह बाहर जाना ही चाहती थी कि वनवीर हाथमें रुधिरसे सनी नङ्गी तलवार लिये पहुचा और उसने पूछा कि उदयसिह कहा है ? स्वामिभक्त पन्नाने अपनी अगुली के इशारेसे अपने पुत्रको दिखा दिया। निर्दयी वनवीरने उसका तुरन्त ही काम तमाम कर दिया। छोटा बालक थोड़ासा चिल्ला कर समाप्त हो गया, दाईके सामने उसक पुत्रकी हत्या हुई, परन्तु वह उसके लिये रो तक न सकी। पुत्रका अन्तिम सस्कार कर वह किलेसे बाहर निकली। रनवासमें रानियोंने और उदयपुरके सब सरदारोंने यही समझा कि वनवीरने सग्रामसिहके पुत्र उदयसिह को मार डाला। पन्ना बारीकी तलाशमें घूमने लगी। चित्तौडकी पश्चिम ओर वेरिस नदीके किनारे वह मिल गया। पन्ना राजकुमार को लेकर बाघाजीके पुत्र सिहरावके पास पहुची, परन्तु उन्होंने बनवीरके भयसे राजकुमारकी रक्षाका भार अपने ऊपर न लिया। इसके बाद पन्ना डूङ्गरपुरके रावल यशकर्णके पास पहुंची, परन्तु उन्होंने भी उसकी बात न सुनी। कई दिन पहाडोंके अन्दर और ईदरके आसपासके गावोंमें भीलोंके साथ पन्ना घूमती रही। उन दिनों आशाशाह नामक एक जैन राजपूत कमलमीरके दुर्गमें राज प्रतिनिधि होकर शासन किया करता था। पन्नाने उनसे जाकर प्रार्थना की कि अपने भावी नरेशके प्राण बचाइये। आशाशाहकी माता उनके पास खड़ी हुई थी। जब आशाशाहने कुछ आनाकानी

तो उनको माताने कहा कि समरसिंहका पुत्र तुम्हारा स्वामी। यदि इसे भी आश्रय न दोगे, तो फिर किसे दोगे? कुमारका रहना निश्चित हुआ और आशाशाह उसे अपना भतीजा बना प्रयत्नसे रखने लगे।

आशाशाहके यहा किसी उत्सव पर जब बाहरके बहुतसे लोग जन करने आये, तो उदयसिंहका ढङ्ग देखकर बहुतसे राजपूतों हृदयमें सन्देह हो गया। झलोरके सोनगडे सरदार किसी कार्य- आशाशाहसे मिलने गये। उनके स्वागतका भार उदयसिंहको ला। सरदारोंने उदयसिंहको देख कर निश्चय किया कि यह सी तरह भी आशाशाहका भतीजा नहीं हो सकता। उन्हींके द्वारा वत्र यह समाचार फैला और मेवाडके सभी सामन्त और सर- र, स्वर्गीय राणाके वीरपुत्रका अभिवादन करने पहुचने गे। चण्डवशीय सालम्ब्रापति साहीदास, कैलवापति जागो, डोरिया और वेदलाके चौहान आदि कमलमीर पहुचे। दाई पन्ना और बारी बुलाया गया। कमलमीरके सभागृहमें बडा भारी दर- र हुआ। आशाशाहने राजकुमारका सारा वृत्तान्त प्रकट किया, ई और बारीने समर्थन किया। मेवाड़के वृद्ध चौहान सरदारने जकुमारके साथ बैठ कर एक ही थालमें भोजन किया। जब यह माचार चित्तौड पहुचा तो वनवीरका हृदय काप उठा। थोडे ही नोंके बाद सोनगडे सरदार अखिलरायने अपनी कन्याके साथ दयसिंहका विवाह कर दिया। विवाह होने पर महाराणा कुम्भ ी राजसभामें उदयसिंहके मस्तक पर चित्तौड़के सरदारोंने राज- ाभिषेक कर दिया। चित्तौडके सभी सामन्त वनवीरसे अप्रसन्न थे योंकि उसने उनके साथ अनेक प्रकारके अत्याचार आरम्भ कर िये थे। मेवाड़में प्रथा है कि राणाके थालसे दौना निकाल कर

जिसके पास भेजा जाता, वह बड़े सम्मानकी बात समझी जाया करती थी। एक दिन चण्डके वंशधर सालुम्ब्राधिपतिने वनवीरका दौना लेना अस्वीकार किया। यह कह कर दौना फेर दिया गया कि बप्पारावलके सच्चे वंशधरका ही दौना लिया जा सकता। दासीपुत्रका नहीं लिया जा सकता। इसी कारण वनवीरने जब सभामें उनका अपमान किया तो सारे सरदार बिगड उठे। जब सब सरदार कमलमीर उदयसिंहके राजतिलकमें सम्मिलित होने लिये जा रहे थे, तो वनवीरकी लडकीके दहेजका जो सामान जा रहा था, वह सरदारोंने लूट लिया। लूटकी सब सामग्री उदयसिंह को भेंट की गयी। चित्तौडमें वनवीरने युद्धकी तैयारी आरम्भ कर दी। उसके मन्त्रीने राजकुमारके पक्षके एक हजार सिपाही नगरमें घुसा दिये। उन्होंने तुरन्त ही आक्रमण कर दिया। सन् १५४२ ई० में सरदारोंने वनवीरको गद्दीसे उतारकर उदयसिंहको राजगद्दी पर बैठा दिया। वनवीरकी सन्तान नागपुरके भोंसले हुए।

जिस वर्ष उदयसिंह चित्तौड़की राजगद्दी पर बैठे, उसी साल अमरकोटकी मरुभूमिमें अकबरका जन्म हुआ, जिसने कालान्तरमें चित्तौडका ध्वंस कर हिन्दू स्वतन्त्रता पर पदाघात किया। अकबरका पिता हुमायूं दिल्ली छोड़ कर भागा था, परन्तु पीछे सुअवसर पाकर वह फिर दिल्ली लौट आया और और अपने पुत्र अकबरकी सहायतासे राजसिंहासन पानेमें समर्थ हुआ। अकबरने बारह वर्षकी अल्पावस्थामें जो वीरता और साहस दिखाया, उसे देख कर उसका पिता परम सन्तुष्ट हुआ। हुमायूंकी मृत्युके बाद सन् १५५६ ई० में अकबर १४ वर्षकी अवस्थामें दिल्लीके तख्त पर बैठा। कुछ दिनों तक राज्यकार्य वैरामखाने चलाया और फिर

अकबर ही सब काम देखने लगे। अकबरने अपने बाहुबलसे बहुतसे स्थान जीते और अपना राज्य चारों ओर बढाया, परन्तु राजपूताना और विशेष कर मेवाडको जीते बिना उनकी उच्चाभिलाषा पूर्ण न हुई। वे राजपूतानाके राजाओंको जीत कर उनकी कन्याओंसे विवाह भी करना चाहते थे। यही कारण था कि मेवाड़के कुलाभिमानी राजपूतोंने बड़ी वीरतासे उनका सामना किया। राजपूताना जीतनेके लिये अकबरने सबसे पहले मारवाड़के राठोरों पर चढ़ाई की और मेरता नगर विध्वस कर दिया। इस विजयने अम्बरके राजा भरमल्ल और उनके पुत्र भगवानदासके दिलमें बडी खलबली पैदा कर दी। अन्तमें उन्होंने अपने कुल-गौरव और प्राचीन स्वाधीनताके बदलेमें अकबरकी प्रसन्नता और शान्ति माल ले ली। भरमल्लने अपनी कन्याका विवाह अकबरके साथ कर दिया। इस आक्रमणके बाद अकबरका ध्यान विद्रोही उजबक सरदारोंकी ओर गया। उन्हे दबा कर अकबरने चित्तौड पर चढाई की। पहले तो उदयसिंहने अकबरसे लड़नेमें आनाकानी की, परन्तु जब वीर सरदारों और चारणोंने उनकी बहुत निन्दा की तो उन्हे लड़ाईके लिये तैयार होना पडा।

युद्ध आरम्भ हो गया, परन्तु राणाके हृदयमें साहस और दृढ़ताका अभाव था। उनकी सेना पीछे हटी और मुगलसेनाने उसका पीछा किया। अन्तमे अकबरने उदयसिंहको कैद कर लिया। चारणोंका कहना है कि उदयपुरके मस्तक पर यह सर्व प्रथम कलङ्कका टीका लगा। जब उदयसिंहके पकडे जानेका समाचार चित्तौड़ पहुचा तो वहांके वीर सरदारोंने सुनी हुई अनसुनी कर दी। उदयसिंहकी उपपत्नीके हृदयमें दारुण

जिसके पास भेजा जाता, वह बड़े सम्मानकी बात समझी जाया करती थी। एक दिन चण्डके वंशधर सालम्ब्राधिपतिने बनवीरका दौना लेना अस्वीकार किया। यह कह कर दौना फेर दिया गया कि वप्पारावलके सच्चे वंशधरका ही दौना लिया जा सकता है दासीपुत्रका नहीं लिया जा सकता। इसी कारण बनवीरने सभामें उनका अपमान किया तो सारे सरदार बिगड़ उठे। जब सब सरदार कमलमीर उदयसिंहके राजतिलकमें सम्मिलित होनेके लिये जा रहे थे, तो बनवीरकी लड़कीके दहेजका जो सामान जा रहा था, वह सरदारोंने लूट लिया। लूटकी सब सामग्री उदयसिंहको भेट की गयी। चित्तौड़में बनवीरने युद्धकी तैयारी आरम्भ कर दी। उसके मन्त्रीने राजकुमारके एक पक्षके एक हजार सिपाही नगरमें घुसा दिये। उन्होंने तुरन्त ही आक्रमण कर दिया। सन् १५४२ ई० में सरदारोंने बनवीरको गद्दीसे उतारकर उदयसिंहको राजगद्दी पर बैठा दिया। बनवीरकी सन्तान नागपुरके भोंसला हुए।

जिस वर्ष उदयसिंह चित्तौड़की राजगद्दी पर बैठे, उसी साल अमरकोटकी मरुभूमिमें अकबरका जन्म हुआ, जिसने कालान्तरमें चित्तौड़का ध्वंस कर हिन्दू स्वतन्त्रता पर पदाघात किया। अकबरका पिता हुमायूं दिल्ली छोड़ कर भागा था, परन्तु पीछे सुअवसर पाकर वह फिर दिल्ली लौट आया और और अपने पुत्र अकबरकी सहायतासे राजसिंहासन पानेमें समर्थ हुआ। अकबरने बारह वर्षकी अल्पावस्थामें जो वीरता और साहस दिखाया, उसे देख कर उसका पिता परम सन्तुष्ट हुआ। हुमायूंकी मृत्युके बाद सन् १५५६ ई० में अकबर १४ वर्षकी अवस्थामें दिल्लीके तख्त पर बैठा। कुछ दिनों तक राज्यकार्य बैरामखाने चलाया और फिर

अकबर ही सब काम देखने लगे। अकबरने अपने बाहुबलसे बहुतसे स्थान जीते और अपना राज्य चारों ओर बढाया, परन्तु राजपूताना और विशेष कर मेवाडको जीते बिना उनकी उच्चाभिलाषा पूर्ण न हुई। वे राजपूतानाके राजाओंको जीत कर उनकी कन्याओंसे विवाह भी करना चाहते थे। यही कारण था कि मेवाड़के कुलाभिमानी राजपूतोंने बड़ी वीरतासे उनका सामना किया। राजपूताना जीतनेके लिये अकबरने सबसे पहले मारवाड़के राठोरो पर चढाई की और मेरता नगर विध्वस कर दिया। इस विजयने अम्बरके राजा भरमल्ल और उनके पुत्र भगवानदासके दिलमें बडी खलबली पैदा कर दी। अन्तमें उन्होंने अपने कुल-गौरव और प्राचीन स्वाधीनताके बदलेमें अकबरकी प्रसन्नता और शान्ति मोल ले ली। भरमल्लने अपनी कन्याका विवाह अकबरके साथ कर दिया। इस आक्रमणके बाद अकबरका ध्यान विद्रोही उजबक सरदारोंकी ओर गया। उन्हें दबा कर अकबरने चित्तौड पर चढाई की। पहले तो उदयसिंहने अकबरसे लड़नेमें आनाकानी की, परन्तु जब वीर सरदारों और चारणोंने उनकी बहुत निन्दा की तो उन्हे लड़ाईके लिये तैयार होना पड़ा।

युद्ध आरम्भ हो गया, परन्तु राणाके हृदयमें साहस और दृढ़ताका अभाव था। उनकी सेना पीछे हटी और मुगलसेनाने उसका पीछा किया। अन्तमें अकबरने उदयसिंहको कैद कर लिया। चारणोंका कहना है कि उदयपुरके मस्तक पर यह सर्व-प्रथम कलङ्कका टीका लगा। जब उदयसिंहके पकड़े जानेका समाचार चित्तौड पहुचा तो वहाके वीर सरदारोंने सुनी हुई बात अनसुनी कर दी। उदयसिंहकी उपपत्नीके हृदयमें दारुण क्रोध

उत्पन्न हुआ । उसने गहने उतार कर हाथमें तलवार ली और मेवाड़की बची हुई सेना लेकर युद्धस्थलकी ओर रवाना हुई। उपपत्नी द्वारा चढाई होनेकी बात सुन कर सरदार भी सुसज्जित होकर उसके साथ लड़ने पहुचे । वीर महिलाने अकबरसे लड़ने मे बड़ा परिश्रम दिखाया । अकबरकी सेनाके पाव उखड़ गये। राजपूतोंने भागती हुई सेनाका पीछा कर बहुतसे सैनिक मारे और वीर रमणी अपने पतिको छुड़ा कर चित्तौड लौटी । उदय सिहने अपनी उपपत्नीकी बड़ी प्रशंसा की और उसे बहुत कुछ इनाम दिया । राणा बहुधा कहा करते थे कि वीराकी बहादुरीसे मेरा छुटकारा हुआ । सरदार यह बात सुन कर बडे क्रुद्ध होते थे । अन्तमें उन्होंने षड्यन्त्र रचकर वीराको मरवा डाला । इस हत्यासे चित्तौडमें बडी अशान्ति फैली, घरेलू झगडोंने फिर जोर पकडा । अकबरने इस झगड़ेकी खबर पाकर चित्तौड़ पर फिर चढ़ाई कर दी ।

चित्तौडके पडोली गावमें मुगल सेनाने डेरा डाला । अकबरके आक्रमणको देखकर उदयसिह चित्तौड छोड भागे । उनके भाग जानेपर भी चित्तौड वीरशून्य न था । अगणित वीर नङ्गी तलवारें लेकर अकबरका सामना करने पहुचे । अनेक राजाओं ने मेवाडकी पतितावस्थामें भी मेवाड़की रक्षाके लिये सहायता दी । सूर्यपोलद्वारकी रक्षाका भार चन्द्रावत शाहीदासके हाथ सौंपा गया । मन्दोरियाके शेखावत, बिजोलीके परमोर, मादीके झलावत आदि बहुतसे सरदार चित्तौडके रणस्थलमें एकत्र हुए । अकबरके पास इस बार भी कई तोपें थीं, परन्तु द्वितीय पक्षके पास तीर-कमान बर्छा और भालोंके सिवा और कुछ न था । मुसल्मानोंने सूर्यपोल पर बडा भयानक आक्रमण किया

और शाहीदासके साथ कई घण्टे तक भीषण युद्ध हुआ। शाहीदासकी वीरताने राजपूतोंको दूना उत्साहित किया, परन्तु वे बहुत देर तक उस स्थान पर न टिक सके और वहीं पर काम आये। बिदनोरके राजा जयमल और कैलवाडाके चन्द्रावत फतेहसिंह (फत्ता) ने युद्धमें बडी बहादुरी दिखायी। दोनोंकी वीरताका इतिहास स्वयं अकबरने लिखा है। बादशाहने दोनोंकी प्रतिमूर्ति अपने दरबारमें बनवायी थी। जब सरदार शाहीदासके बाद वीरवर फत्ताने सूर्यद्वारकी रक्षाका भार अपने ऊपर लिया उनकी आयु केवल १६ वर्षकी थी। उनकी माता और धर्मपत्नी भी घोड़ेपर सवार होकर निकली और अकबरकी सेना पर आक्रमण कर अपनी वीरताका परिचय दे वीर गतिको प्राप्त हुई। अपनी माताओं और स्त्रियोंको इस प्रकार लडते देख राजपूत अपनी सुध भूलकर बडी भीषणतासे लड़े। अन्तमें फत्ता भी रणशायी हुए। जयमल उनके स्थानपर डटकर सूर्यद्वारकी रक्षा करने लगे, परन्तु वे बडी बुरी तरह घायल हुए। जब उन्हें विजयकी कोई आशा न दिखायी दी, तो उन्होंने 'जुहार-व्रत' के उद्यापनकी घोषणा की। आठ हजार राजपूतोंने पीले वस्त्र धारण कर अन्तिम बीडा उठाया। चित्तौडका द्वार खोलकर वे बाहर निकले। परन्तु मुगल सेनाके सामने उनके पैर न जमे। अगणित सेनाका सामना कर एक भी वीर राजपूत वापस न लौटा और किसीने जुहार-व्रत और केसरिया वस्त्र पर धब्बा नहीं लगाया। इस युद्धमें महाराणाके बहुत ही निकट सम्बन्धी सत्तरहसौकी संख्यामें काम आये। राजमहलकी नौ रानिया और राजकुमारिया सामन्त सरदारों और अन्य राजपूत[illegible] लेकर जीवित [illegible]

नवम-परिच्छेद।

महाराणा प्रताप।

सन् १५७२ ई० मे महाराणा प्रताप मेवाडके महाराणा बने, परन्तु महाराणाके पास न तो पुरानी राजधानी ही थी, न पुराना सैन्यदल और न कोष ही था। महाराणाजी रातदिन इसी चिन्तामें रहने लगे कि चित्तौडका उद्धार किस तरह किया जाये। वे इस बातको अच्छी तरह जानते थे कि अकबरकी सेना और शक्तिके सामने हमारी शक्ति कुछ भी नही। चारण और भट्टोंके मुखसे अपने पूर्वजोंकी कीर्ति और वीरता सुन कर प्रतापके हृदयमें देशोद्धार और स्वाभिमानने पूरा स्थान पा लिया। मेवाडके सभी सरदारोंने महाराणाजीकी उच्चाभिलाषाका हृदयसे समर्थन किया। अकबरने मेवाडके सारे सरदारोंको धन-दौलत और राज्यका लोभ देकर अपनी ओर मिलानेकी चेष्टा की, परन्तु चण्ड जयमल और फत्तेके वशधरोंने किसी भी लोभमें पडकर महाराणाका साथ नहीं छोडा। अकबरने भी स्वय महाराणाको कई बार लिखा कि यदि आप मेरे दरबारमें आकर एक बार आकर भारतेश्वर कह कर पुकारे तो मैं अपने राजसिहासनकी दाहिनी और आपको स्थान देनेको तैयार हू। परन्तु महाराणाने किसी भी प्रलोभनमें आकर अपना प्राचीन गौरव न घटाया। वे सदा कहा करते थे कि बप्परावलका वशज मुगलोंके सामने शिर नहीं झुका सकता। एक दिन अपने सरदारोंके साथ बैठे हुए महाराणाने इस बातकी



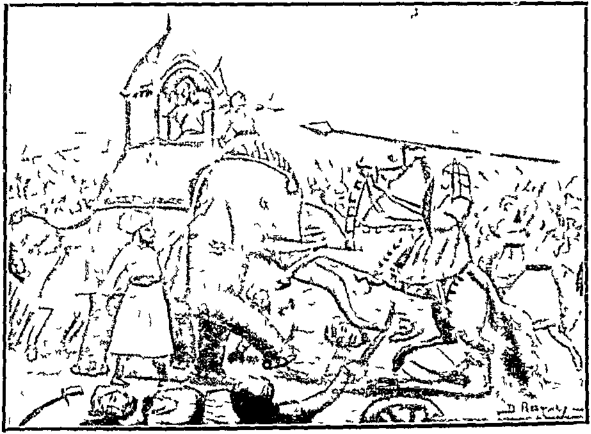
महाराणा प्रतापकी प्रतिज्ञा।

प्रतिज्ञा करायी कि जब तक मेवाड़का गौरवोद्धार न हो, मेवाड सन्तान सोने चादीके थालोमें भाजन न कर पेडके पत्तों पर भोजन किया करे, कोमल शय्याके स्थानमें घास पर सोया जाये, महलोंकी जगह घास और पत्तोंकी कुटियोंमें निवास किया जाये। राजपूत अपनी दाढी मूछों पर छुरा न चलवायें। रण डङ्का फौज के पीछे बजा करे। वीरवर प्रताप सदा कहते थे कि मेरे दादा और मेरे बीचमें यदि मेरे पिता उदयसिह न हुए होते, तो चित्तौड़ का सिहासन शिशोदिया कुलके हाथसे न जाता। महाराणाने जब सबसे प्रतिज्ञा करायी तो स्वय भी इस प्रतिज्ञाका पालन करने लगे।

मुगल-सेनाके विरुद्ध लडनेके लिये महाराणाने एक उपाय सोच निकाला। उन्होंने राज्यमें आज्ञा निकाली कि मेवाड़की सारी प्रजा बस्ती और नगरोंको छोडकर परिवार समेत अरावली-पर्वतोंके बीच रहने लगे। जो इस आज्ञाका पालन न करेगा, वह शत्रु समझा जायेगा और उसे प्राणदण्ड होगा। इस आज्ञाका पालन उन्होंने बडी कठोरतासे किया। जिसने आज्ञा पालन न की, वही मार डाला गया। एक चरवाहेको भी प्राणदण्ड भोगना पडा था। सामन्तोंने धन सग्रहका एक और मार्ग निश्चित किया। उन दिनों सूरत बन्दरसे सारे भारतको मेवाड़ होकर व्यापर-सामग्री जाया करती थी। सरदारोंने दल बाध कर वह सामग्री और खजाने लूटने शुरू कर दिये। इस लूटसे महाराणाके पास बहुतसा धन आ गया। अकबरने जब महाराणाकी सब बातें सुनी, तो वह बडा क्रुद्ध हुआ और वह अपनी सारी सेना सजा कर अजमेरके पास डेरा डाल बैठा। अकबरके पास कई लाख सेना थी। मारवाड़के राव मालदेवने

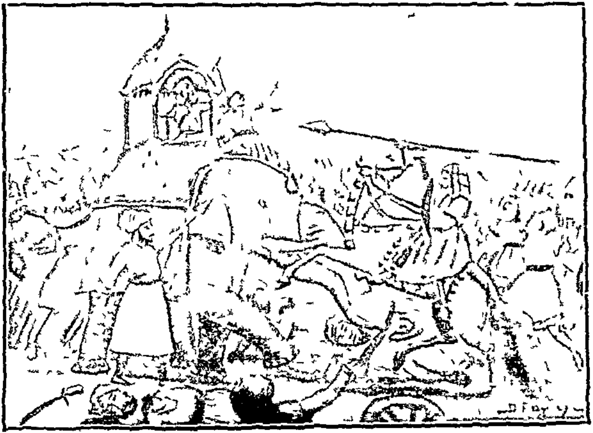
से वह स्थान पवित्र किया गया। राजा मानसिंह उदयपुरसे प्रस्थान कर अकबरके पास पहुचे और उन्होंने अपने अपमानकी सारी बातें उनसे कहीं। बादशाह बडा क्रुद्ध हुआ और कई लाख सेना सजाकर मानसिंह, उनके भानजेने सलीम और सगर के पुत्र मुहव्वतखांको साथ देकर महाराणा-प्रतापके विरुद्ध चढाई कर दी। मुहव्वतखा सगरजीका पुत्र था जो महाराणा प्रतापके भाई थे। वह किसी मुसल्मान स्त्रीके प्रेममें फस कर मुसल्मान हो गया था। जब महाराणा पर चढ़ाई करनेके लिये घरका भेदी भेजा गया तो, उसने अपने देशद्रोहका पूरा परिचय दिया। वह गिरि-मार्गोंसे परिचित था, इसलिये उदयपुरके पश्चिम कई कोसके मैदानमें बादशाहकी सेनाने डेरा डाला। महाराणा युद्धकी तैयारी की बात पहलेसे ही सुन चुके थे, इसलिये बाईस हजार राजपूत और कुछ भीलोंको पहाड़ोंके चारों ओर रख दिया गया और शत्रुओं पर बरसानेके लिये पत्थर भी एकत्र कर लिये गये।

सन् १५७६ ई० के जुलाई मासमें हल्दीघाटीके मैदानमे दोनों दल वाले भिडे। महाराणा अपने सामन्तोंको साथ लेकर मुगल सेनामें घुस पडे। पहले आक्रमणसे ही मुगल-सेनाके छक्के छूट गये। वह छिन्न भिन्न हो गयी। महाराणाने पुकार कर कहा कि राजपूत-कुल-कलङ्क मानसिंह कहा हैं, परन्तु उन्हे कोई उत्तर न मिला। महाराणा अपने चेतक घोड़े पर सवार होकर सलीम के पास पहुचे। शत्रुको सामने देखते ही महाराणाका उत्साह दूना हो गया। उन्होंने चेतककी लगाम खींची और चेतकने उछल कर अपने दोनों पाव हाथीके शिर पर जमा दिये। महाराणाने अपना भाला उठाया, जिसे देखकर सलीम घबरा गया



से वह स्थान पवित्र किया गया। राजा मानसिंह उदयपुरसे प्रस्थान कर अकबरके पास पहुचे और उन्होंने अपने अपमानकी सारी बातें उनसे कहीं। बादशाह बड़ा क्रुद्ध हुआ और कई लाख सेना सजाकर मानसिंह, उनके भानजेने सलीम और सगर के पुत्र मुहब्बतखाको साथ देकर महाराणा-प्रतापके विरुद्ध चढाई कर दी। मुहब्बतखा सगरजीका पुत्र था जो महाराणा प्रतापके भाई थे। वह किसी मुसल्मान स्त्रीके प्रेममें फस कर मुसल्मान हो गया था। जब महाराणा पर चढ़ाई करनेके लिये घरका भेदी भेजा गया तो, उसने अपने देशद्रोहका पूरा परिचय दिया। वह गिरि-मार्गोंसे परिचित था, इसलिये उदयपुरके पश्चिम कई कोसके मैदानमें बादशाहकी सेनाने डेरा डाला। महाराणा युद्धकी तैयारी की बात पहलेसे ही सुन चुके थे, इसलिये बाईस हजार राजपूत और कुछ भीलोंको पहाड़ोंके चारों ओर रख दिया गया और शत्रुओं पर बरसानेके लिये पत्थर भी एकत्र कर लिये गये।

सन् १५७६ ई० के जुलाई मासमें हल्दीघाटीके मैदानमें दोनों दल वाले भिड़े। महाराणा अपने सामन्तोंको साथ लेकर मुगल सेनामें घुस पड़े। पहले आक्रमणसे ही मुगल-सेनाके छक्के छूट गये। वह छिन्न भिन्न हो गयी। महाराणाने पुकार कर कहा कि राजपूत-कुल-कलङ्क मानसिंह कहा हैं, परन्तु उन्हे कोई उत्तर न मिला। महाराणा अपने चेतक घोड़े पर सवार होकर सलीम के पास पहुचे। शत्रुको सामने देखते ही महाराणाका उत्साह दूना हो गया। उन्होंने चेतककी लगाम खींची और चेतकने उन्हें लेकर अपने दोनों पाव हाथीके शिर पर जमा दिये। महाराणाने अपना भाला उठाया, जिसे देखकर सलीम घबरा गया और उसने



हाथ जोड कर क्षमा मागी। महाराणाने अपना घोडा वापस लौटा लिया और नीचे उतर कर उन्होंने कहा कि शरणागत शत्रु पर हिन्दू आक्रमण नहीं किया करते। महाराणाने सलीमके हौदेमें बड़े जोरसे अपना भाला मारा था, जिससे हौदा फट गया और महावत मर गया। हाथी बडे वेगसे सलीमको लेकर भागा। इधर महाराणाको नीचे उतरा देख मुगल सेनाने उन्हे घेर लिया। राजपूतोंने बडे उत्साहके साथ महाराणाकी रक्षाके लिये प्राण त्याग दिये, परन्तु महाराणाकी सेना कम होनेके कारण उनका बल घटने लगा। महाराणाके शरीरमे इस समय तक एक गोली लगने के सिवा तलवारके तीन और भालेके तीन घाव हो चुके थे।

महाराणाने सब स्थानोंको खूब कस कर बाधा और बडे उत्साहसे लडने लगे। उन्हें यह बात मालूम हो चुकी थी कि यह युद्ध बहुत देर तक न चल सकेगा, परन्तु क्षत्रियवीरने एक क्षण भर भी युद्ध स्थल छोड़ कर भागनेका प्रयत्न न किया। इसी समय थोड़ी ही दूर पर मेवाड़की जय और महाराणा प्रतापकी जय सुनायी पडी, जिसे सुन कर महारणा और भी जोरसे गरजने लगे। झालापति मन्नाजीने जब यह देखा कि महाराणाके शिर पर मेवाड़के छत्र चवर तथा अन्य सारे राजचिन्ह हैं, इसीसे मुगल अपनी सारी शक्ति उन्हींके विरुद्ध लगाये हुए हैं, तो उन्होंने वहा पहुच कर महाराणासे कहा कि ये सारे चिन्ह मुझे देकर आप चले जाइये, परन्तु माहाराणाने कहा कि प्रताप जीवित रहता हुआ रणस्थल नहीं छोड़ सकता। मन्नाजीको जब कोई उपाय न सूझा, तो उन्होंने महाराणाका मुकुट और छत्र छीन कर अपने शिर पर रखा और चेतक [illegible] पछ काट दी। चेतक महाराणाको लेकर युद्ध-स्थलसे [illegible] मुगल मन्ना[illegible]

उधर नकली वजियका आनन्द मनाता हुआ सलीम हल्दीघाटके पहाडी स्थानोंको त्याग कर चला गया, क्योंकि वर्षाऋतुके कारण नदियां उमड़ पड़ी थीं और पहाड़ी स्थान दुर्गम हो गये थे। महाराणाका पीछा नहीं किया जा सकता था। महाराणाको इस बीच विश्राम लेनेका समय मिल गया। परन्तु सन् १५७७ ई० के जनवरी मासमें मुगल सेनाने उदयपुर पर फिर आक्रमण कर दिया। इस युद्धमें भी महाराणा अपनी थोड़ीसी सेना लेकर मुगलोंके साथ बडी वीरतासे लडे। अन्तमें वे उदयपुर छोड़ कर कमलमीर चले गये। अकबरके सेनापति शहबाजखांने कमलमीरको भी जा घेरा। बहुत देर तक महाराणा इस किलेमें रह कर मुगल सेनाका सामना करते रहे। परन्तु उस मुगल सेनापतिके साथ मेवाडका जो देशद्रोही राजपूत देवराज था, उसने महाराणासे कमलमीर भी छुडा दिया। देवराजको यह बात मालूम थी कि कमलमीरमें एक ही कुआ है, जिसका पानी सब पीते हैं, इसलिये उसने कुएमें कुछ मरे हुए जहरीले साप डलवा दिये थे। पानी खराब हो जानेके कारण महाराणाको अपना आश्रय-स्थान त्याग देना पड़ा। महाराणा चौंड नामक पहाडी किलेमें चले गये। मुगलोंने वह स्थान भी जा घेरा। भयानक युद्धके बाद सरदार भानुसिंह और मेवाड़के प्रधान महाकवि मारे गये। उन दिनों सारे मेवाड़के लोग इतने उत्तेजित हो चुके थे कि वे जहा कहीं भी किसी मुसलमानको पाते थे उसे मार डालते थे।

जिन दिनों महाराणा कमलमीरके किलेमें बन्द थे, मानसिंहने धर्मेती और गोगुद नामक किले जीत लिये। मुहब्बतखाने उदयपुर पर अधिकार जमाया। अमीशाह नामक एक दूसरे



मुगल सम्राट-अकबर।

मुसल्मान सेनापतिने अपनी सेनाको चौंड़ और अगुणपाडोरके बीचके मैदानमें अड़ा दिया। जिससे महाराणाका भीलोंसे सम्बन्ध न रहा। फरीदखा चप्पनको घेर कर चौंड तक बढा। महाराणाका आश्रयस्थान चारों ओरसे घिर गया। यद्यपि मुगलोंने महाराणाके रहनेके लिये कोई स्थान न छोडा, मुगल सेना पहाड़की प्रत्येक गुफामे उन्हे पकड़नेके लिये ढूढ़ने लगी, परन्तु प्रतापसिहको कोई न पकड पाया। जब कभी वे मुगलसेनाको असावधान पाते, उस पर टूट पड़ते। कुछ ही दिनोंमें उन्होंने फरीदखाको उसकी सारी सेना समेत काट डाला। दूसरी, तीसरी और चौथी वर्षाऋतु इसी तरह निकल गयी। वर्षाऋतुमें महाराणाको विश्रामका कुछ समय मिल जाता था, बाकी समयमें वे मुगलोंका सामना ही करते रहे।

कई वर्ष बीतने पर भी महाराणाकी विपत्ति कम न हुई। उन्हे किसी तरह भी न छोडा गया। महाराणाके स्थान एक एक कर मुगलोंके हाथ जाने लगे। अन्तमें उन्हें अपने परिवार की रक्षा भी कठिन दिखायी दी। एक समय वे सपरिवार शत्रुओं-के हाथ पड ही चुके थे कि गिहलोत कुलके भीलोंने उनका उद्धार किया। महाराणा भीलोंके साथ दूसरे मार्गसे चले गये। उनके परिवारको टोकरोंमें रख कर भीलोंने जावरेकी टीनकी खानोंमें छिपा दिया। पचासों बार भीलोंको मुगलोंके हाथसे रक्षा करनेके लिये महाराणी, कुमार अमरसिंह और राजकुमारीको वृक्षोंसे लटकाना पड़ा। आज तक भी उन स्थानोंमें बहुतसे कड़े और बडी बडी किलें गड़ी हुई दिखायी देती हैं। जिस महाराणी, राजकुमारीने कभी महलोंके बाहर पैर तक न रखा था, वे पवित्र स्वाधीनता और कुल-गौरवके लिये

को दी तो पृथ्वीराजने उनका तीव्र प्रतिवाद किया और वे लड़नेके लिये तैयार हो गये। इस पर वे कैद कर लिये गये। उनकी स्त्री जितनी सुन्दरी थी उतनी ही वीर भी थी। उन्हे अपने पितृगृहका बड़ा भारी अभिमान था। अकबर दिल्लीमें एक मेला हरसाल लगवाया करता था, जिसका नाम 'नौरोज' या 'खुशरोज' था। इस मेलेमें एक बहुत बड़ा बाजार महलोंके पीछे लगाया जाता था। राजपूतोंकी स्त्रिया और लड़किया इस बाजारमें चीजें बेचने जाया करती थीं और उनके बीच अकबर रूपलावण्यका आनन्द लूटनेके लिये घूमा करता था और किसी पुरुषके जानेकी आज्ञा न थी। पृथ्वीराजकी स्त्री पर उसकी आख बहुत दिनसे लगी हुई थी, क्योंकि एक तो वे अत्यन्त सुन्दरी थीं और दूसरे उदयपुरके शिशोदिया वश की थीं। जब वे एक दिन नौरोजके मेलेमें आयी हुई थीं तो उनके लौटने पर अकबरने और सब मार्ग तो बन्द करा दिये, केवल अपने महलका मार्ग खुला रखा। उस खुले हुए द्वारसे जब वे जाने लगीं, तो उन्हे राहमें ही दुराचारी अकबरने घेर लिया। कामोन्मत्त होकर उसने राजपूतबालाको अनेक प्रकारके प्रलोभन दिये। उसकी यह घृणित चेष्टा देख वीर महिलाने तत्काल ही अपनी बगलसे छुरी निकाली और उसे नीचे गिरा कर उसके ऊपर सवार होकर बोली कि यदि मुहसे एक भी शब्द निकाला तो यह छुरी तेरे कलेजेके पार हो जायेगी। राजपूत सतीका या-



कविवर पृथ्वीराज ।

पथ खायी। रानी जब उसे छोड़कर जाने लगीं तो उन्होंने कबरकी मूछ एक तरफकी काट ली। जिस पृथ्वीराजकी नीने अकबरको ऐसा बदला दिया,उन्हीके भाई बीकानेरके राजा ायसिहकी स्त्री अकबरके दिये हुए लालचमें फस गयीं और न्होंने अपना अमूल्य सतीत्व अकबरके हाथ बेच डाला। पृथ्वी ाजने अपने भाईसे इस घटनाका वृत्तान्त बड़े मर्मभेदी शब्दोंमें कहा था।

जब पृथ्वीराजने महाराणा प्रतापके पत्रको देखा तो उन्होंने अकबरसे कहा कि मैं महाराणाको अच्छी तरह जानता हू और उनके हस्ताक्षर भी पहचानता हू। मैं दावेके साथ यह बात कह सकता हू कि यह पत्र उनका लिखा हुआ नहीं है। यदि आप अपना राजमुकुट भी उनके शिरपर रख दें, तो भी वे आपके सामने शिर नहीं झुका सकते। इसके बाद पृथ्वीराजने बादशाहकी आज्ञासे राणा को एक पत्र लिखा और दूत उनके पास भेजा। पत्रका कुछ मूल अन्श यह है—

अकबर समद अथाह, सूरायण भरियो सजल।
मेवाड़ो तिणमाहि, पोयण फूल प्रताप सी॥ १॥
अकबर एकणबार, दागलकी सारी दुनी।
अणदागल असवार, रहियो राणप्रताप सी॥ २॥
अकबर घोर अन्धार, ऊघाणा हिन्दू अवर।
जागे जगतादार, पोहरे राणा प्रताप सी॥ ३॥
हिन्दूपति परताप, पतिराखो हिन्दुआणरी।
सहे विपति सन्तान, सत्य शपथ कर आपणी॥ ४॥
चौथो चीतोडाह, बाटो बाजन्तीतणू।
दीसै मेवाड़ाह, तो सिर राणा प्रताप सी॥ ५॥

शिर झुकाना अपमान ही नहीं घोर पाप समझता हू। दूतको रवाना करनेके बाद महाराणा मुगल सेना पर टूट पडे और सारी सेना काट डाली। दिल्ली खबर पहुचते ही वहासे बहुतसी सेना भेज दी गयी और फिर महाराणा का पीछा किया गया। महाराणा फिर छिप छिप कर आक्रमण करने लगे। जिन जङ्गलोंमें महाराणा रहते थे, उनके वृक्षोंके फल फूल खतम हो गये और पानीकी कमीसे घास भी पैदा न हुई। जिन चीजोंको खाकर वीर अपने प्राणकी रक्षा किये हुए थे, उनका भी अभाव हो गया। इस विपत्तिके समय राणा ने अपने सरदारोंके साथ बैठ कर निश्चय किया कि अब इस स्थानमें गुजारा नहीं हो सकता। इसलिये यहासे चल कर सिन्धु नदीके तट पर रहना चाहिये। यात्राकी तैयारी हुई। जीवन मरणके साथ देनेवाले सरदार अपने परिवार समेत उनके पास पहुच गये। जब महाराणा अपनी प्यारी जन्मभूमि त्याग कर पहाड़ोंके नीचे उतरे तो उनकी आखोंसे एक आसू निकल पडा जिसे देख कर मेवाड राज्यके प्रधान कोषाध्यक्ष भामाशाहने कहा कि महाराज, मुझे छोड़ कर कहा जायेंगे। ठहरिये मैं भी आपके साथ चलनेके लिये आ रहा हू। अपनी स्त्री से विदा माग आऊ। भामाशाह अपने घर आये और अपनी स्त्री तथा पुत्रको बुला कर बोले कि जिस राज्यकी बदौलत हम लोगोंने लाखों करोड़ोंकी सम्पत्ति पायी है, उसी देशके प्राण महाराणा प्रताप आज धनके बिना मेवाडकी इस दीनावस्था में देशको मुसल्मानोंके हाथमें छोड़ कर जाना चाहते हैं। हमारे धनका सदुपयोग इस समयसे बढ़ कर नहीं हो सकता। यदि देश अपने पास बना रहेगा, तो धन सम्पत्ति फिर हो जायगी।



मेवाडके उद्धारके लिये भामासाहका सर्वस्व दान।

'कह कर मामाशाहने अपनी स्त्री और पुत्रको एक एक वस्त्र
नाया और वाकी सारी सम्पत्ति महाराणाके चरणोंमें डाल दी।
उहासकारोंने लिखा है कि यह सम्पत्ति २०।२५ हजार सैनिकोंके
एए पोषणके लिये दस-बारह वर्षके लिये पर्याप्त थी। इस
पुल धनको पाकर स्वाधीनताकी लीलाभूमि मेवाड त्यागनेका
चार महाराणाने छोड़ दिया। सरदारों और महाराणाजीके
दयमें उत्साहकी कमी तो थी ही नहीं, केवल कुछ अवलम्बकी
ावश्यकता थी, जिसे वैश्यशिरोमणि राजभक्त मामाशाहने पूरी
ी। महाराणाने नयी सेना एकत्र की और मुगलसेनाके अधि-
ति शहबाजखा पर टूट पड़े। देवीरमें भयानक युद्ध हुआ,
तसमें शहबाजखा और उसकी सारी सेना काम आयी।

महाराणाने इसके बाद अमैत नामक दुर्ग पर धावा किया,
हा पर बहुतसी मुसलमान-सेना थी। वह किला भी उन्हें मिल
या। मुगलसेना काट डाली गयी। थोड़ेसे बचे हुए सैनिक
मलमीर चले गये। विजयोन्मत्त राजपूतवीरोंने शीघ्र ही
मलमीर पर चढाई कर दी और मुगलसेनापति अब्दुल्ला तथा
समस्त सेनाको मार डाला। यद्यपि मुगलोंकी तुलनामें राजपूत-
सेना कुछ भी न थी, तो भी स्वदेशोद्धारकी दृढ प्रतिज्ञा मुगलोंकी
सेनाकी सख्यासे कहीं अधिक शक्तिवान् थी। थोड़े ही दिनो
बाद चित्तौड, अजमेर और मण्डलगढ़को छोड़ कर सारा मेवाड
मुसलमानोंके हाथसे छीन लिया गया। अकबर बहुतसे घरेलू झगड़ों
में पड गया इस लिये उदयपुरपर कोई चढाई न की गयी। चित्तौड
को शत्रुओंके पास देख महाराणा सदा दुःखी रहा करते थे, वे
सदा कहा करते थे कि जब तक चित्तौड़का उद्धार न हो तब
तक किसी प्रकारकी वीरताका

: कह कर भामाशाहने अपनी स्त्री और पुत्रको एक एक वस्त्र
लाया और बाकी सारी सम्पत्ति महाराणाके चरणोंमें डाल दी।
तहासकारोंने लिखा है कि यह सम्पत्ति २०।२५ हजार सैनिकोंके
रए पोषणके लिये दस-बारह वर्षके लिये पर्याप्त थी। इस
पुल धनको पाकर स्वाधीनताकी लीलाभूमि मेवाड़ त्यागनेका
चार महाराणाने छोड दिया। सरदारों और महाराणाजीके
दयमें उत्साहकी कमी तो थी ही नहीं, केवल कुछ अवलम्बकी
ावश्यकता थी, जिसे वैश्यशिरोमणि राजभक्त भामाशाहने पूरी
ी। महाराणाने नयी सेना एकत्र की और मुगलसेनाके अधि-
ति शहबाजखा पर टूट पडे। देवीरमें भयानक युद्ध हुआ,
जसमें शहबाजखा और उसकी सारी सेना काम आयी।

महाराणाने इसके बाद अमेत नामक दुर्ग पर धावा किया,
हा पर बहुतसी मुसलमान-सेना थी। वह किला भी उन्हें मिल
या। मुगलसेना काट डाली गयी। थोडेसे बचे हुए सैनिक
कमलमीर चले गये। विजयोन्मत्त राजपूतवीरोंने शीघ्र ही
कमलमीर पर चढाई कर दी और मुगलसेनापति अब्दुल्ला तथा
समस्त सेनाको मार डाला। यद्यपि मुगलोंकी तुलनामें राजपूत-
सेना कुछ भी न थी, तो भी स्वदेशोद्धारकी दृढ प्रतिज्ञा मुगलोंकी
सेनाकी सख्यासे कहीं अधिक शक्तिवान् थी। थोड़े ही दिनों
बाद चित्तौड़, अजमेर और मण्डलगढ़को छोड़ कर सारा मेवाड़
मुसलमानोंके हाथसे छीन लिया गया। अकबर बहुतसे घरेलू झगड़ों
में पड गया इस लिये उदयपुरपर कोई चढ़ाई न की गयी। चित्तौड़
को शत्रुओंके पास देख महाराणा सदा दु खी रहा करते थे, वे
सदा कहा करते थे कि जब तक चित्तौड़का उद्धार न हो तब
तक किसी प्रकारकी वीरताका गौरव निरर्थक है।

कष्ट झेलनेके कारण प्रौढ़ावस्थामें ही महाराणा वृद्ध दिखायी देने लगे थे। चित्तौडोद्धारकी चिन्तासे उनके पुराने घाव फिर हरे हो गये। अन्तिम बार उन्होंने अम्बरपति मानसिंहसे देश द्रोहका बदला लेना चाहा, इस लिये अम्बर पर चढाई कर दी। यह नहीं कहा जा सकता कि मानसिंह स्वय लडे या नहीं, परन्तु कछुवाहोंने बड़ी सेना सजाकर महाराणासे युद्ध किया। महाराणा इस युद्धमें विजय प्राप्त कर मालपुर आदि कई गाव लूट कर वापस लौटे। लूटका बहुतसा धन सरदार और सैनिकोंमें बाटा गया। पेशोला सरोवरके किनारे महाराणाने अपने रहनेके लिये झोपड़िया बनवायीं। एक दिन जब अमरसिंह इन झोपडियोंमें प्रवेश करने लगे तो किसी बाससे उनकी पगड़ी उतर कर गिर गयी। उन्होंने फौरन तलवारसे उस बासको काट डाला और झोपड़ी बनाने वालोंको धमकाया कि इतनी छोटी झोपड़ी क्यों बनायी गयी। महाराणा यह देख कर बड़े दु खी हुए। उनका स्वास्थ्य उस समय अच्छा न था, इस लिये अमरसिंहसे वे कुछ न बोले।

महाराणा इस बीमारीसे अच्छे होकर फिर न उठे। कालने हिन्दू सूर्यको ग्रास कर लिया। महाराणाके अन्तिम समय जब सारे सरदार उनकी शय्याके पास बैठे हुए थे तो महाराणा ने बडी लम्बी आह निकाली। सारे सरदार रोने लगे। सलुम्ब्राधिपतिने पूछा महाराज, किस दारुण चिन्ताने आपकी पवित्र आत्माको दु खी कर रखा है? आपकी शान्ति क्यों भङ्ग हो रही है? महाराणाने उत्तर दिया, सरदारजी, अभी तक प्राण नहीं निकले, केवल आपकी एक शान्तिमय वाणीकी प्रतीक्षा में हैं। आप लोग शपथ खाकर कहें कि जीवित रहते मातृभूमि की स्वाधीनता किसी तरह भी दूसरोंके हाथ अर्पण न करेंगे

अमरसिंह पर मुझे विश्वास नहीं है। वह मेवाडके गौरवकी रक्षा न कर सकेगा। जिस स्वाधीनताकी रक्षा मैंने अपना और अपने सहस्रों सरदारोंका रक्त बहा कर की है, वह ऐश आरामके बदले बेच दी जायेगी। इन कुटियोंके बदले आरामके महल बनेंगे। अमर-सिंह विलासी है, इससे कठोर व्रतका पालन न होगा। महाराणाकी बात सुन कर सब सरदारोंने मिल कर शपथ ली कि जब तक हममेंसे एक भी जीवित रहेगा, मेवाडकी स्वतन्त्रता अक्षुण्ण बनी रहेगी। महाराजकी आज्ञाका निरादर कुमार द्वारा न होने देंगे। जब तक मेवाड़का पूर्ण गौरव चमक न उठेगा, तब तक हम सब इन्हीं कुटियोंमें रह कर स्वाधीनताके लिये हाथमें तलवार लिये जीवन व्यतीत करेंगे। इस बातको सुनकर महाराणाकी आंखोंसे आसू निकल पड़े और फिर भारतरत्न क्षत्रियकुल सूर्य इस संसारसे सदाके लिये विलीन हो गया।

—— ० ——

दशम-परिच्छेद ।

महाराणा अमरसिंह ।

सन् १५९७ ई० में राजपूत-कुल-गौरव महाराणा प्रतापके सत्तरह पुत्रोंमे सबसे बड़े अमरसिंह महाराणा बने। महाराणा प्रतापकी विपन्नावस्थामें कुमार अमरसिंहने भी पर्वतों और जङ्गलों के बीच समय व्यतीत किया था। महाराणा प्रतापके परलोक सिधारनेके बादसे आठ वर्ष तक अकबर जीवित रहा। इन वर्षों में महाराणा अमरसिंहने मेवाडमें पूर्ण शान्ति भोगी। महाराणा अमरसिंहने गद्दी पर बैठ कर खेतोंकी पैमाइश नये ढङ्गसे करायी और सरदारोंको नये ढङ्गसे भूमिवृत्ति-दी, जिसका वर्णन अनेक शिलालेखोंमें पाया जाता है। परन्तु महाराणा प्रतापने जो आशङ्का प्रकट की थी, वह ठीक ही निकली। शान्ति और विश्राम अमरसिंहके लिये अनर्थकारी हो गया। पिताकी आज्ञाकी अवहेलना कर उन्होंने पिशोला-नदीके किनारेकी कुटिया तोड़कर अमर महल बनवाया। बहुतसे खुशामदी भी आ मिले और सुख-चैनमें दिन कटने लगे। जहांगीरने सिंहासन पर बैठते ही जो रणभेरी मेवाड़की भूमि पर बजायी, उससे अमरसिंहकी सुखनिद्रा शीघ्र ही टूट गयी। दिल्लीके तख्त पर बैठनेके तीन चार वर्ष ही बाद जहांगीरने एक बड़ी सेना सजाकर मेवाड पर चढाई की। अमर सिंह बडे सङ्कटमें पड गये, क्योंकि एक ओर तो उनका ऐश आराम उन्हे आलसी बनाये हुए था और दूसरी ओर पूर्वजोंके

गौरवकी चिन्ता थी। खुशामदियोंने सलाह दी कि व्यर्थ ही विपक्षिका सामना करनेसे क्या लाभ होगा। जब राजपूतानेके सभी नरेश दिल्लीकी अधीनता स्वीकार कर चुके हैं, तो मेवाड़ स्वतन्त्र नहीं रह सकता। महाराणाको ये बातें यद्यपि बुरी मालूम हुईं, परन्तु वे इतने आलसी हो गये थे कि उनका प्रतिवाद तक न कर सके। जब मेवाड़के सरदारोंको मालूम हुआ कि जहांगीरकी सेना बढी आ रही है और मेवाडके राणा विलास भवनमें पड़े आनन्द कर रहे हैं, तो उन्हें बडा दु ख हुआ और वे सब मिल कर अमर-महलमें पहुचे। उन्होंने राणासे कहा कि क्या आप इसी तरह स्वर्गीय पिताकी परमपवित्र आज्ञाका पालन कर रहे हैं। सालम्ब्रा-सरदारकी तेजस्वी बातें सुनकर सरदार उत्साहित हो उठे, परन्तु अमरसिंह नीचा मुह किये ही बैठे रहे। चन्द्रावत वीरने गलीचे पर पड़े हुए एक पीतलके गोलेको उठाया और दीवाल पर लगे हुए विदेशी दर्पण पर इस जोरसे मारा कि वह टुकडे टुकडे हो गया। राणाका दाहिना हाथ पकड़ा और बडे जोरसे कहा सरदारो, इन विलास-सामग्रियोंमें आग लगा दो, और प्रतापसिंहके पुत्रको घोडेपर सवार करा कर कलङ्क से बचाओ। शीघ्र ही युद्धकी तैयारी करो। सालम्ब्रापतिके इस आचरणसे महाराणा बडे रुष्ट हुए। उन्हे कई वार राजद्रोही राजापमानी बताया। परन्तु सब सरदारोंने मिलकर जबर्दस्ती राणाको घोड़े पर सवार करा दिया। राणाके क्रोधसे आसू आ गये, परन्तु किसीने उनकी जरा भी परवा न की। धीरे धीरे जब देवीके मन्दिरमें पहुचे तो उस समय तक राणाका क्रोध कम हो गया था और वे अपना कर्त्तव्य भी समझ गये थे। मन्दिरसे बाहर होते ही उन्होंने अपनेको बहुत धिक्कारा

और चन्द्रावत-सरदारोंसे क्षमा मागी। 'राणाने सरदारजीसे कहा कि आप शिशोदिया वन्शके सच्चे हितैषी हैं। आपके ही कारण आज मेरा वश कलङ्कसे वच गया। युद्धक्षेत्रमें आप देखेंगे कि मैं वास्तवमें प्रतापसिंहका पुत्र कहलाने लायक हू। राणाजीके इन वाक्योंसे सेना और सरदारोंमें बडा उत्साह पैदा हो गया और उन्होंने देवीरमें पहुच कर मुगल सेना पर आक्रमण किया। दोनों दलोंमे भीषण युद्ध हुआ। दोपहर तक पता ही न चला कि किस दलकी हार या जीत हो रही है। सन्ध्या होते होते वीर राजपूतोंने प्राय बहुतसी मुगल सेनाको उस मैदानमें काट डाला। जो बचे वे रणस्थल त्याग कर भागे। सन् १६०८ ई० मे सबसे पहला यह युद्ध देवीरके मैदानमें राणा अमरसिंहके साथ हुआ। इस युद्धमें राणा अमरसिंहके चाचा वीरवर करणने बड़ी अद्भुत वीरता दिखायी। राणा उदयपुर लौटे और कई दिनों तक विजयोत्सव हुआ। उधर यद्यपि बादशाही सेना पराजित हुई, परन्तु जहागीर हतोत्साह न हुआ। थोड़े ही दिनों बाद अब्दुल्ला नामक सेनापतिको मेवाड़ जीतनेके लिये भेज दिया गया। रणपुरके गिरिमार्गमें राणाजी अपनी सेना लेकर भिड गये। शीघ्र ही मुसलमान सेनाके मोर्चे भङ्ग कर दिये गये। इस युद्धमे भी सारी मुगल सेना काट डाली गयी। जो थोडेसे सैनिक बचे वे प्राण बचा कर भागे। इस युद्धमें विजय प्राप्त कर राणाने और भी कई स्थानोंमें मुगल सेना पर आक्रमण किये। बादशाह जहागीर इस पराजयसे बडा दु खी हुआ। उसने इस बात पर आश्चर्य किया कि थोडेसे राजपूत किस तेजीसे इतनी बड़ी मुगल सेनाको काट कर विजय प्राप्त कर लेते हैं।

फिर बड़ी भारी सेना सजायी गयी। इस बार जहांगीरको एक कूट मन्त्र दिया गया। राणा अमरसिंहके चाचा सगरजी का अभिषेक शीघ्र ही चित्तौड़की गद्दी पर कराया गया और मेवाड़में इस बातका ढिंढोरा पिटवाया गया कि चित्तौड़की गद्दीका शासक ही सच्चा महाराणा कहाया जा सकता है। राजपूत-कुलकलङ्क सगरजी अपने पूर्वजोंके नष्ट हुए गौरवकी भस्म पर मुगल दासत्वका मुकुट पहर कर चित्तौड़के सिंहासन पर बैठ तो गया, परन्तु उसे रातदिन उस किलेके अन्दर महाराणा लक्ष्मणसिंह, महाराणा सग्रामसिंह आदि वीरोंकी भयानक मूर्तियां दिखायी दिया करती थीं। वह जब तक चित्तौड़में रहा किसी भी रातको सुखकी नींद न ले सका। मेवाड़के किसी वीर सामन्त या सरदारने सगरजीको महाराणा कह कर न पुकारा, इससे जहांगीरकी कूटनीति भी सफल न हुई।

एक रातको सगरजीने स्वप्न देखा कि कोई कह रहा है कि तू इस पवित्र राजसिंहासनको भोगने योग्य नहीं। इस स्थानसे शीघ्र ही चला जा, नहीं तो तेरा मङ्गल नहीं। सगरजीने सवेरा होते ही अमरसिंहको बुलाया और चित्तौड़का भार उनके हवाले कर एक जङ्गलमें जाकर रहने लगा। उसे जङ्गलमें भी शान्ति न मिली। जहांगीरने उसे पकड़ मंगाया और दरबारमें उसका पूरा अपमान किया। वृद्ध सगरजी इस अपमान को न सह सका और उसी क्षण अपनी छातीमें छुरा भोंक कर मर गया। देशद्रोहीने बड़ा भयानक प्रायश्चित्त किया।

महाराणा अमरसिंह चित्तौड़ पाकर बड़े प्रसन्न हुए। कई दिन उत्सव मनाया गया। उधर शीघ्र ही जहांगीरकी तीसरी चढ़ाईकी रणभेरी मेवाड़के द्वार पर सुनायी दी। मेवाड़के ८२

किलोंमें से ८० किले इस समय तक महाराणाकी अधीनतामें आ चुके थे। बादशाहने इस बार अपनी सेनाका अध्यक्ष सगरजीका पुत्र मुहब्बतखा बनाया। जहांगीरके सभी सेनापतियोंमें मुहब्बतखा सबसे अधिक साहसी माना जाता था। मेवाड़के राणा विधर्मियों और उनसे सम्बन्ध रखने वालोंका बड़ा तिरस्कार करते थे, जिससे मुहब्बतखा बहुत चिढ़ता था। वह मेवाड़के प्राय सभी पहाड़ी मार्गों से भी परिचित था।

मुगलसेनाकी चढ़ाई देख महाराणा सब तैयारियां कर चुके थे। इतनेमें ही एक नवीन घटना उपस्थित हो गयी। मेवाड़का यह नियम था कि प्रत्येक युद्धमें और प्रत्येक बार सेनाकी आगवानी (हिरोल) सरदारोंको बाट बाट कर मिला करती थी, परन्तु इधर महाराणा प्रतापके सङ्कटकालमें प्राचीन प्रणाली काममें न लायी जा सकी थी। इस युद्धके लिये प्रयाण करनेके समय उस समयके दो प्रधान वीरोंमें इस बातकी प्रतिद्वन्दता उपस्थित हुई कि हिरोल कौन ग्रहण करे। चन्द्रावतोंने यह कह कर कि हम बड़े हैं, हमारी सेवायें अधिक हैं, हिरोल मांगी। उनके प्रतिद्वन्दी शक्तावतोंने अपनेको महाराणा प्रतापका उद्धारक बताकर हिरोल मागी। परिणाम यह हुआ कि दोनों ओरसे तलवारें निकल पड़ीं। कहा गया कि जिसकी तलवारमें बल होगा, उसे ही मेवाड़की हिरोल मिलेगी। महाराणाजीने घरेलू सङ्कट उपस्थित देख कर कहा कि अन्तला दुर्ग पर पहुच कर जो कोई उसे पहले काबूमें कर लेगा वही हिरोलका अधिकारी माना जायेगा।

यह बात सुनते ही दोनों दल अपनी अपनी सेनाएं लेकर

उस ओर रवाना हुए। अन्तला दुर्गमें प्रवेश करनेके लिये एक ही द्वार था और वह किला एक पहाड़के ऊपर था, जिसके चारों ओर खाई थी। मुसलमान सेना उसे काबूमे किये हुए थी। किलेके सैनिक मुगल दलसे मिलने वाले थे। सवेरा होते ही शक्तावत अन्तलाके द्वार तक पहुच गये। मुगल सेना पहलेसे ही युद्धकी तैयारी कर रही थी, इसलिये सैनिकोंने दीवालों पर चढ कर शक्तावतोंके साथ युद्ध आरम्भ कर दिया। चन्द्रावत सरदार मार्ग भूल गये थे, इसलिये अन्तला पहुचनेमें उन्हें विलम्ब हुआ। चन्द्रावतके साथ कुछ सीढिया थीं। उन्होंने उन्हें दीवालोंसे लगा दिया। एक गोलीसे चन्द्रावत सरदार मारे गये और उनकी लाश किलेके भीतर गिर गयी। जब शक्तावत सरदारने यह सुना कि चन्द्रावत किलेके भीतर पहुच रहे हैं तो उन्होंने अपने महावतसे कहा कि हाथीको इस दरवाजे पर चढा दो। हाथीने दरवाजे पर धक्का दिया। दरवाजे पर लोहेके बड़े बडे किले लगे हुए थे, इसलिये हाथी चिह्वाड़ कर वापस लौट पडा। इधर चन्द्रावतोंकी ओर बड़े जोरका जय जयकार हुआ, जिसे सुन कर शक्तावत काप उठे। वे हाथी परसे नीचे उतर पडे और बडे बडे कीलोंके सामने छाती लगा कर खड हो गये और महावतसे बोले कि मेरी छातीपर हाथीको चला। यदि देर हुई तो सबसे पहले तेरा ही सहार करूगा। महावतने स्वामीकी आज्ञाका पालन किया। अकुशकी भयङ्कर पीडासे बडे जोरकी चिह्वाड मार हाथीने बलपूर्वक धक्का मारा। किलेका दरवाजा उस टक्करका सामना न कर सका और दोनों दरवाजे टूट कर गिर गये। लोगोंने देखा कि उन दरवाजोंके साथ शक्तावत

सरदारकी देह कीलोंसे छिदी हुई नीचे लाश बनी पडी है। शक्तावत वीर अपने सरदारकी मृत्युकी कुछ भी परवा न कर उसकी देह पर पैर रख किलेके भीतर घुस गये। शक्तावतों के इस अपूर्व आत्मत्यागने भी उन्हें हिरोलका सम्मान प्राप्त न करने दिये। जब पहले चन्द्रावत सरदार किलेके भीतर गोली खाकर गिर गये तो सेनाका भार बादाजीने सम्भाला। भीतर पहुच कर उन्होंने चन्द्रावत सरदारकी लाशको दुपट्टेमें बांध कन्धे पर लाद कर मुगल सेनापतिके महलोंके ऊपर फेंक दी और उस स्थान पर मेवाड़की विजयपताका उड़ा दी। जिस समय शक्तावत सरदारने जय जयकारका शब्द सुना था, उस समय बादाजी महल पर खडे होकर कह रहे थे कि हिरोल चन्द्रावतोंने पायी। शक्तावत सरदार सैनासहित शिर झुकाये लौट आये।

जिस शक्तावत सरदारने अपूर्व आत्मत्याग दिखाया, उसका नाम बल्लाजी था। इस विजयका समाचार सुन राणाजी स्वय अन्तला-दुर्ग पहुचे और उन्होंने अपने हाथसे शक्तावत सरदारकी दाह किया की। वीरवर बल्लाजीके समयसे ही 'दूना दातार, चौगुना जूझार खुरासानी मुल्तानीका अग्गल' कह कर उनके वशधरोंका सम्मान आज तक किया जाता है।

अजमेरमें सेना एकत्र हुई। बादशाहने स्वय सारी सेना सजा कर अपने पुत्र पर्वेजको उसके साथ भेजा और कहा कि इस बार तुम्हारी बहादुरीका इम्तिहान है। इस बातको याद रखना कि महाराणा या उनके पुत्र कोई भी तुमसे मिलने यें, तो हर तरहकी खातिरदारीसे काम लेना। याद कि बादशाह बादशाहके साथ जिस आया

हैं, उस वर्तावमें किसी तरहका अन्तर न हो । इस सेनाको भेज कर बादशाह को पूर्ण आशा थी कि मेवाड जीत लिया जायेगा । परन्तु उनकी वह आशा धूलमे मिल गयी । महाराणाने अपनी थोडीसी सेना सजा कर मुगलोंको घेर लिया, खगनोरके गिरिमार्ग पर दोनों दलोंकी मुठभेड हुई । बड़ी भारी मुगलसेना अमरसिंहके इने गिने सैनिकोंकी गति न रोक सकी । मुसलमान सेनाके पाव न जमे । बहुतसे सैनिक अजमेरकी तरफ भागे । राजपूतोंके सामने जो सैनिक आये उसी समय खतम कर दिये गये । पर्वेज लडाईके मैदानसे भागा । वह कई पहाडियोंमें ऐसा फसा कि कई दिन तक बाहर न निकल सका । यदि महाराणा चाहते तो उन्ही पहाडियोंमें उसे घेर कर खतम कर देते, परन्तु भागे हुए निरस्त्र शत्रु पर आक्रमण करना क्षत्रिय धर्मके विरुद्ध है, इस धर्मभावनाने महाराणाको वह काम न करने दिया । जब पर्वेज हार कर लौटा तो जहांगीरने उसके पुत्रको बहुत बड़ी सेना देकर मुहब्बत खां के साथ चढाई करने भेजा । इस बार भी मुगलसेना हार कर उदयपुर लौटी, और पर्वेजका पुत्र मारा गया । इस तरह १७ बार महाराणाने मुगल आक्रमण व्यर्थ बनाया । अठारहवीं बार खुर्रम बड़ी धूमसे मेवाड़ पर चढा । राणाजीने जब इस चढाई और मेवाड़की वर्तमान दशाका विचार किया तो उनकी चिन्ताका कोई ठिकाना न रहा । खजानेमें धन नहीं, दुर्गमें सेना नहीं, रणनिपुण सामन्त भी न थे । राणाजी थोड़ीसी नयी सेना लेकर रणस्थलमें उतरे । मेवाडके व्यापारियोंने इस बार बहुतसा धन एकत्र कर महाराणाके पास भेजा । जिन राजपूतोंने वर्मा अस्त्र तक धारण न किये थे, वे भी सेनामें योगदान करने पहुंच गये । इस पर भी युद्धका फल भयानक निकला । महाराणा सफ

लता प्राप्त न कर सके । उदयपुरकी उत्तरी ओर पहाड़ोंके नीचे कई झोपड़ियोंकी एक छोटीसी बस्ती थी, जिसका नाम राजन चौकी था । राणाजी युद्धसे लौट कर वहीं चले गये । वे राजधानी को वापस न लौटे । बस्तीकी झोपड़ीके भीतर महाराणा जबसे घुसे तबसे बाहर न निकले । वहीं पर तप करते हुए परमधामको सिधारे ।

खुर्रम हिन्दू कन्याके गर्भसे उत्पन्न हुआ था । जो अम्बरके कछवाहोंकी लड़की थी । वह उदयपुरके महाराणाको दिलसे नीचा दिखाना चाहता था । बादशाह जहांगीरने भी उसे युद्धमें भेजते समय समझा दिया था कि महाराणा जिस शर्त पर सन्धि करें उनसे अवश्य कर लेना । खुर्रम स्वय भी महाराणाकी अपूर्व वीरतासे घबराया हुआ था और इस चिन्तामें था कि वे किसी तरह भी अधीनता स्वीकार कर लें । युद्ध आरम्भ होनेके पहले उसने कई बार महाराणासे कहलाया था कि आप जिस तरह चाहे सन्धि-स्थापना हो सकती है, परन्तु महाराणाने अपने स्वर्गीय पिताकी कठोर आज्ञाका स्मरण रखते हुए सन्धिकी कोई बात स्वीकार न की । युद्धमें विजयी होने पर खुर्रमने महाराणा अमरसिहके पास फिर दूत भेजा और कहलाया कि मैं अब भी हर तरहसे तैयार हूं । आप जिन शर्तो पर चाहें सन्धि कर सकते हैं । महाराणाने उसके पास अपने दो सरदार सूपकर्ण और झाला हरिदास भेजे और उनके द्वारा यह कहलवा दिया कि मैं अपने पितृगौरवकी रक्षा करना अपना प्रधान धर्म मानता हूं । यदि उसकी रक्षाके साथ देशकी रक्षाके लिये सन्धि करनी पड़े तो की जा सकती है । खुर्रमने इन बातोंको बादशाहके पास लिख भेजा । बादशाहने इस पत्रको पाकर महाराणाके पास अपने हाथ

के पजेको छाप कर एक आश्वासनपत्र लिखा कि आपके गौरवकी रक्षा होगी । आप अपने हृदयसे शत्रुताके भाव दूर कर दे । बादशाहके इस पत्रने दोनों दलोंके बीच सन्धि करा दी । सन्धिकी शर्तों में सबसे पहली शर्त यह थी कि चित्तौड़के गद्दीधर महाराणा, बादशाहके दरबारमें कभी न जायेंगे । युवराज दरबारमे जायेंगे ।

इस युद्धके बाद खुर्रमने आलम गुमान नामक एक हाथी बादशाहके पास भेट स्वरूप भेजा। बादशाहने इस हाथी पर बैठ कर दिल्लीमें बहुतसी अशर्फिया लुटायी । 'जहांगीरनामा' मे इन बातोंका पूरा उल्लेख है । उन्होंने लिखा है कि जिस राज्यको वश में करनेके लिये मेरे पूर्वजोंने अविश्रान्त उद्योग किया था और वह उनके अधिकारमें न आ सका, वही मेवाड़ मेरे शासनकालमें दिल्लीके अधीन हुआ । सन्धिकी शर्तों के अनुसार महाराणाके पुत्र युवराज कर्ण दिल्ली पहुचे और उन्हे राजपूतोंमें सर्वोच्च स्थान बादशाहके ठीक दाहिनी ओर दिया गया । बादशाह उनके स्वागतके लिये स्वय उठा था । अन्य सभी राजपूत बायीं तरफ थे और युवराज कर्ण दाहिनी ओर बैठाये गये । बादशाहने अपनी बेगम नूरजहासे कर्णकी मुलाकात करायी और जब युवराज मेवाड़ लौटे तो उस समय तक बादशाह १५ लाखके रत्न आभूषण हाथी-घोड़े उनकी भेट कर चुके थे । विदाके समय बादशाहने युवराजको जागीरदारीका पट्टा लिख कर दिया । इतना उच्च पद और सम्मान पाकर भी युवराज विशेष लज्जित हो दिखायी दिये, इसका उल्लेख स्वय बादशाहने किया है । जिस दिन मेवाड़ बादशाहकी जागीर कह कर पुकारा गया, उस दिन कुमार कर्णका हृदय चूर चूर हो गया ।

एकादश-परिच्छेद।

राजसिंह।

सन् १६१६ ई० में युवराज कर्ण मेवाडकी गद्दी पर बैठे। सन् १६२१ ई० में उनका राज्याभिषेक हुआ। जिस दिनसे इनका अभिषेक हुआ, ये बादशाहके दरबारमें न जाकर अपने पुत्र जगत्सिंहको भेजने लगे। इनके शासनकालमें मेवाड़में पूर्ण शान्ति रही। यद्यपि ये मुगलोंके अधीन हो चुके थे, परन्तु इनका बादशाहके साथ समानताका ही बर्ताव रहा। कुछ दिनों बाद खुर्रमने राज्य पानेके लोभसे अपने पिता जहांगीर पर चढ़ाई की और महाराणाके भाई भीमसिंहने उसे मदद दी। अन्तमें खुर्रम बादशाहसे हार कर उदयपुर पहुंचा और महाराणाके साथ बहुत दिन तक रहा। राणा कर्णसिंहने टूटे-फूटे किलोंकी मरम्मत करायी। सन् १६२८ में उनकी मृत्युके उपरान्त उनके पुत्र जगत्सिंह राजसिंहासन पर बैठे। इस राज्याभिषेकके थोडे ही दिन बाद जहांगीरकी मृत्यु हो गयी। खुर्रम कुछ दिनोंके लिये उदयपुरसे चला गया था, वह बादशाहकी मृत्यु सुन कर उदयपुर पहुंचा। बादल-महलमें दिल्लीके सामन्त और अन्य सब राजाओंने खुर्रमको शाहजहांके नामसे दिल्लीके तख्त पर आरूढ़ किया। शाहजहां कुछ दिन उदयपुर रह कर दिल्ली चला गया। ...में शाहजहांके लिये बडा उत्सव मनाया गया था, क्योंकि ...राणाके पगडी-बदल भाई थे। राणा जगत्सिंहने २६ वर्ष

तक राज्य किया। इन्होंने ही जगनिवास, जगमन्दिर आदि बड़े बडे महल बनवाये। चित्तौड़की किलेबन्दीकी फिर मरम्मत की गयी। राणाजी मारवाड़ ब्याहे थे। उनके दो पुत्र हुए जिनमेंसे बड़े पुत्र राजसिंह सन् १६५४ ई० में महाराणा बने।

महाराणा राजसिंह बड़े प्रतापी थे, इस लिये उनके गद्दी पर बैठते ही मेवाडकी शान्ति विदा हो गयी। मेवाड़में ही नहीं सारे राजस्थानमें अशान्ति उत्पन्न हो गयी। दिल्लीका बादशाह शाहजहा इस समय बूढा हो गया था, इस लिये उसके चारो पुत्रोंमें दिल्लीका तख्त पानेके लिये झगड़ा खडा हो गया। मुगलोंके हाथ महाराणाकी अधीनता वास्तवमें कर्णसिंहके जमानेमें ही एक पीढी तक रही। मेवाड़ाधिपति राणा जगत्सिंहके प्रतिनिधि भीमसिंहने बादशाहके विरुद्ध खुर्रमका साथ दिया ही था और खुर्रमको उदयपुरमें स्थान भी दिया था। इस लिये उसी समय ही से मेवाडके राणा एक प्रकारसे स्वतन्त्र हो गये थे। शाहजहाने उदयपुरसे मित्रताका ही सम्बन्ध रखा। बादशाहके चारों पुत्रोंने ही उदयपुरनरेशकी सहायताकी भिक्षा मागी। दारा बादशाहका सबसे बडा लड़का होनेके कारण तख्तका अधिकारी था, इस लिये महाराणाने उसकी ही मदद की। उस समय राणा राजसिंह ही राजस्थानमें प्रधान माने जाते थे, इस लिये अन्य नरेश भी दाराका साथ देनेको तैयार हो गये। परन्तु फतेहाबादके मैदानमें जो युद्ध हुआ, उसमें दारा हार गया और औरङ्गजेबकी विजय प्राप्त हुई जो शाहजहाके चार पुत्रोंमें सबसे छोटा था।

जब सन् १६५८ ई० मे औरङ्गजेब अपने पिता शाहजहाको कैद कर और अपने तीनों भाइयोंको राज्याधिकारसे वञ्चित कर दिल्लीके तख्त पर बैठा तो उसकी दृष्टि अपने प्रबल शत्रु महाराणा

राजसिंहकी तरफ पड़ी। मेवाड़की टीकादौड़का महाराणा राजसिंहने उद्धार किया था। उन्होंने गद्दी पर बैठते ही अम्बर राज्यके मालपुरा नामक स्थानको लूट लिया। जब बादशाहने इस लूटका समाचार सुना तो उन्होंने हंस कर बात टाल दी। उन्होंने कहा कि मेरा भतीजा बालक है। उसने भूल कर यह काम कर डाला है। वीर शिरोमणि महाराणा-प्रतापके साथ जो मेवाड़की वीरता विदा हो गयी थी, वह राजसिंहके गद्दी पर बैठते ही फिर चमकी। मेवाड़के सरदार तलवारें लेकर फिर देशोद्धार की तैयारी करने लगे।

मारवाड़के राठोर-कुलमें बहुतसे विभाग हो गये थे, जिनमेंसे एकने रूपनगरमें निवास किया। रूपनगर मुगलोंके अधीन था, इस लिये राठोर भी मुगलोंके सामन्त बन कर रहने लगे। उन राठोरोंके यहा प्रभावती नामकी एक सुन्दर कन्या थी। जब औरङ्गजेबने प्रभावतीके रूपलावण्यकी बात सुनी, तो वह उनके साथ विवाह करनेके लिये बड़ा लालायित हुआ। प्रभावती पहले से ही महाराणा राजसिंहकी वीरता और उनके कुलकी उच्चता सुन कर निश्चय कर चुकी थी, कि महाराणाजीके साथ ही विवाह करूंगी, नहीं तो आजीवन, कुमारी ही रहूंगी। औरङ्गजेबने अपना प्रस्ताव रूपनगरके राठोरोंके पास भेज दिया और साथ ही साथ दो हजार घुड़सवार रूपनगरको रवाना कर दिये। औरङ्गजेबके इस दुस्साहसकी बात सुनते ही प्रभावतीने अपने पितासे पूंछा कि इस विपत्तिसे बचनेका क्या उपाय है? जब राठोर कोई उपाय न सोच सके, तो उन्होंने प्रभावतीसे विवाहके लिये राजी हो जानेको कहा। प्रभावती यह सुन कर बड़ी चिन्तामें पड़ीं। जिन मुगलोंसे वे हृदयसे घृणा करती थीं, उनके साथ

अपने विवाहकी बात कैसे सुन सकती थीं। कुमारीने अपने काकाको बुला कर सारी बातें कहीं। काकाने कहा कि हम औरङ्गजेबके विरुद्ध कुछ भी नहीं कर सकते। प्रभावतीने कहा कि यदि आप मेरी रक्षा नहीं करते तो विष या छुरी करेगी। मैं औरङ्गजेबके पास जानेके लिये किसी तरह भी तैयार नहीं। प्रभावतीने महाराणा राजसिंहको एक पत्र लिखा। वह पत्र पुरोहितके हाथ भेजा गया। राजसभामें पहुंच कर पुरोहितने राणाजीको प्रभावतीका पत्र दिया। प्रभावतीने पत्रमें लिखा था कि महाराज, यद्यपि मेरा आपका कभी साक्षात्कार नहीं हुआ तो भी हिन्दू धर्मकी प्राचीन प्रणालीके अनुसार मैं आपका वरण कर चुकी हूं। आप मेरे स्वामी और मैं आपकी स्त्री हूं। अब मुझे लेनेके लिये पापी औरङ्गजेब आ रहा है। महाराज, क्या राजहंसीको कौवेकी सहेली होना होगा। क्या राजपूतोंकी कन्या विधर्मीकी अङ्कशायनी होगी? राणाजी, इसका अर्थ यह होगा कि शिशोदियोंकी विवाहिता कुलवधू, हिन्दूपति महाराणा की अर्द्धाङ्गिनीको औरङ्गजेब भोगेगा। मैंने तो यह निश्चय कर लिया है कि यदि आप मेरी रक्षा न करेंगे, तो विष मेरा रक्षक होगा। यह आप अवश्य समझ लीजियेगा कि आपके वंशकी सूर्य समान उज्वल कीर्तिमें अवश्य धब्बा लग जायेगा। इस पत्रको पढ़ते ही महाराणाको बड़ा क्रोध आया, परन्तु वे कुछ न बोले। राणाजीको चुप देख कर पास बैठे हुए चूड़ावत सरदार बोले कि महाराज, चुप क्यों हैं? राणाजीने पत्र उनके हाथमें दे दिया और उसे सब सरदारोंको सुनानेकी आज्ञा दी।

इस पत्रको सुन कर महाराणाको चुप बैठा देख पास ही बैठे हुए चारणजी, राणाजी पर बड़े बिगड़े। आप बोले कि इसमें

इतना गम्भीर विचार क्या है। इस पत्रने आपको इतनी चिन्ता में क्यों डाल दिया। जो राजपूत कन्या तुम्हें अपने मनसे वर चुकी है, यदि तुम उसकी रक्षा न कर सकोगे, तो उसका क्या होगा? क्या वह विधर्मियोंके हाथ चली जायेगी? तुम्हारी विवाहिता रानीको तुर्क विवाह ले जायेंगे। हिन्दूपतिके लिये इससे अधिक और क्या अपमान होगा? जिस प्रतिष्ठाकी रक्षा के लिये हमारे तुम्हारे हजारों बापदादोंने लाखों सुपुत्रोंको हसते हसते बलि चढ़ा दिया, आज उसी मेवाडका अधीश्वर हसते हसते अपनी रानीको बादशाहके हाथ चली जाने देगा! यदि कन्या आत्मघात कर मर गयी, यदि मेवाडपति शरणागतकी रक्षा न कर सका, तो आपका तो कुछ न बिगड़ेगा, परन्तु मेवाडके पवित्र नामपर धव्वा लग जायेगा। आपको इस पत्रके उत्तरके लिये क्या रुकावट है? राणाजी बोले कि महाराज, मैंने राठोरकन्या ब्याह लेनेका प्रस्ताव अस्वीकार तो नहीं किया, केवल वृद्ध पुरुषोंकी सम्मतिकी प्रतीक्षा कर रहा था। चूडावत सरदारने कहा कि राणाजी, आप अपने वंशकी सारी रीति जानते हैं। आज तक बप्पारावलके वंशधरोंने शरणागतोंकी प्रार्थना अस्वीकार नहीं की। अभी सेना सजाइये और विवाहकी तैयारी कीजिये।

रूपनगरके पुरोहितको विदा कर कुमारीको विश्वास दिलाया गया कि राजपूत गौरवकी रक्षा अवश्य की जायेगी। उदयपुरमें रणभेरी बजी। देवीके मन्दिरमें सभी सामन्त सरदार एकत्र हुए। राजकवि भी लाल वस्त्र धारण कर लड़नेके लिये तैयार हुए। चूड़ावत सरदार तो तीन दिन पहले हाडी रानीको ब्याह-कर घर लाये थे। हाथोंके कंकण भी न खुले थे, सुहाग रात्रि भी न मनायी गयी थी। हाडी-रानीकी अवस्था केवल

१६ वर्षकी थी। ज्यों ही चूडावत-सरदार प्रस्थान करने लगे और उन्होंने रानीकी तरफ देखा तो उनका मुंह फीका पड़ गया। रानीजीने कहा, सरदार, क्या कोई अशुभ समाचार सुना है जो मुखकी आकृति बिगड़ गयी? आप जिस उमङ्गसे मेरे पास आये थे, वह कहां हवा हो गया। चूडावतने उत्तर दिया कि रानीजी, रूपनगरकी राजकन्याको बादशाह जबर्दस्ती लेजाना चाहता है। मुझे उसका उद्धार करना है। बादशाहका मार्ग रोकनेके लिये मैं रूपनगरके आगे डटूंगा। हमारी सेना बादशाही, सेनाकी तुलनामें कुछ भी नहीं है। मुझे आशा है कि मैं इस युद्धसे न लौटूंगा। मैं मरनेसे नहीं डरता। मरनेका डर पैदा होनेसे मेरे पूर्वजोंकी कीर्तिमें धब्बा लगेगा। यदि मुझे कोई चिन्ता है, तो तुम्हारी ही है। तुम अभी व्याही गयी हो, विवाहका कुछ भी सुख तुमने नहीं भोगा। तुम्हारे कङ्कण भी अब तक नहीं खुले। मुझे अभी मरनेके लिये जाना है। मैंने ज्योंही तुम्हारे मुखकी तरफ देखा मेरे हृदयकी आनन्द लहर हवा हो गयी। हाडी रानीने कहा सरदारजी, यदि आप रणस्थलमें विजय पाकर लौटेंगे तो मेरे लिये बड़े गौरवकी बात होगी। यदि आपने युद्धक्षेत्रमें स्वर्गलोकको प्रयाण किया, तो मैं क्षत्राणी होनेके कारण अपना कर्त्तव्य भली भांति जानती हूं, इसलिये ऐसे शुभ समयमें आप सब मायामोह त्याग कर आनन्द पूर्वक रणस्थलकी यात्रा करें। मेरे कारण आपके क्षत्रिय धर्म या कुलगौरवमें कलङ्क न लगे। विश्वास रखिये कि मैं अपने कर्त्तव्य पालनमें किसी तरहकी त्रुटि न करूंगी। विदा होते समय हाडी रानीने फिर कहा, महाराज, विजयी होकर शीघ्र लौटना। रणस्थलमें केवल शत्रु-सेना पर ही दृष्टि रखना।

इतना गम्भीर विचार क्या है। इस पत्रने आपको इतनी चिन्ता में क्यों डाल दिया। जो राजपूत कन्या तुम्हे अपने मनसे वर चुकी है, यदि तुम उसकी रक्षा न कर सकोगे, तो उसका क्या होगा? क्या वह विधर्मियोंके हाथ चली जायेगी? तुम्हारी विवाहिता रानीको तुर्क विवाह ले जायेंगे। हिन्दूपतिके लिये इससे अधिक और क्या अपमान होगा? जिस प्रतिष्ठाकी रक्षा के लिये हमारे तुम्हारे हजारों बापदादोंने लाखों सुपुत्रोंको हसते हसते बलि चढा दिया, आज उसी मेवाडका अधीश्वर हसते हसते अपनी रानीको बादशाहके हाथ चली जाने देगा। यदि कन्या आत्मघात कर मर गयी, यदि मेवाडपति शरणागतकी रक्षा न कर सका, तो आपका तो कुछ न बिगडेगा, परन्तु मेवाडके पवित्र नामपर धब्बा लग जायेगा। आपको इस पत्रके उत्तरके लिये क्या रुकावट है? राणाजी बोले कि महाराज, मैंने राठोरकन्या व्याह लेनेका प्रस्ताव अस्वीकार तो नहीं किया, केवल वृद्ध पुरुषोंकी सम्मतिकी प्रतीक्षा कर रहा था। चूडावत सरदारने कहा कि राणाजी, आप अपने वंशकी सारी रीति जानते हैं। आज तक बप्पारावलके वंशधरोंने शरणागतोंकी प्रार्थना अस्वीकार नहीं की। अभी सेना सजाइये और विवाहकी तैयारी कीजिये।

रूपनगरके पुरोहितको विदा कर कुमारीको विश्वास दिलाया गया कि राजपूत-गौरवकी रक्षा अवश्य की जायेगी। उदयपुरमें रणभेरी बजी। देवीके मन्दिरमें सभी सामन्त सरदार एकत्र हुए। राजकवि भी लाल वस्त्र धारण कर लड़नेके लिये तैयार हुए। चूडावत सरदार तो तीन दिन पहले हाडी रानीको व्याह-कर घर लाये थे। हाथोंके कंकण भी न खुले थे, सुहाग रात्रि भी न मनायी गयी थी। हाडी-रानीकी अवस्था केवल

१६ वर्षकी थी। ज्यों ही चूडावत-सरदार प्रस्थान करने लगे और उन्होंने रानीकी तरफ देखा तो उनका मुह फीका पड़ गया। रानीजीने कहा, सरदार, क्या कोई अशुम समाचार सुना है जो मुखकी आकृति विगड गयी ? आप जिस उमङ्गसे मेरे पास आये थे, वह कहा हवा हो गया। चूडावतने उत्तर दिया कि रानीजी, रूपनगरकी राजकन्याको बादशाह जबर्दस्ती लेजाना चाहता है। मुझे उसका उद्धार करना है। वादशाहका मार्ग रोकनेके लिये मैं रूपनगरके आगे डटूंगा। हमारी सेना बादशाही, सेनाकी तुलनामें कुछ भी नहीं है। मुझे आशा है कि मैं इस युद्धसे न लौटूंगा। मैं मरनेसे नहीं डरता। मरनेका डर पैदा होनेसे मेरे पूर्वजोंकी कीर्तिमें धब्बा लगेगा। यदि मुझे कोई चिन्ता है, तो तुम्हारी ही है। तुम अभी व्याही गयी हो, विवाहका कुछ भी सुख तुमने नहीं भोगा। तुम्हारे कङ्कण भी अब तक नहीं खुले। मुझे अभी मरनेके लिये जाना है। मैंने ज्योंही तुम्हारे मुखकी तरफ देखा मेरे हृदयकी आनन्द लहर हवा हो गयी। हाडी रानीने कहा सरदारजी, यदि आप रणस्थलमें विजय पाकर लौटेंगे तो मेरे लिये बडे गौरवकी बात होगी। यदि आपने युद्धक्षेत्रमें स्वर्गलोकको प्रयाण किया, तो मैं क्षत्राणी होनेके कारण अपना कर्त्तव्य भली भांति जानती हू, इसलिये ऐसे शुभ समयमें आप सब मायामोह त्याग कर आनन्द पूर्वक रणस्थलकी यात्रा करें। मेरे कारण आपके क्षत्रिय धर्म या कुलगौरवमें कलङ्क न लगे। विश्वास रखिये कि मैं अपने कर्त्तव्य पालनमें किसी तरहकी त्रुटि न करूंगी। विदा होते समय हाडी रानीने फि[illegible], महाराज, विजयी होकर शीघ्र लौटना। रणस्थलमें [illegible] -सेना पर ही दृष्टि

मेवाड पर चढाई न करूंगा। इसके पीछे तुम्हारी इच्छा। उस भूमिमें यदि वीर होंगे तो रक्षा कर लेंगे। ज्योंही सरदारने घोड़ा लौटाया, उनका शिर किसी मुगल सेनापतिकी तलवारसे अलग हो गया! भट्ट-कवियोंने लिखा है शिर कट जानेके बाद भी उस रातभर चूडावत सरदार लड़ते रहे। पूर्णिमाकी रात्रि शेष होने पर जब सवेरे लोगोंने कहा कि पूर्णमा हो गयी, तो घोडे परसे सरदारजीका धड नीचे गिरा।

इस युद्धमें लगभग ३७ हजार राजपूत मारे गये और अगणित मुगल-सेना काम आयी। महाराणा राजसिंह ठीक समय पर रूपनगर पहुच गये थे और राजकुमारीको व्याह कर वैशाख वदी प्रतिपदाको रूपनगरसे उदयपुर पहुच गये। उदयपुर पहुच कर चूडावत सरदारकी वीरताका हाल सुना। आज पर्यन्त भी चूडावतजीके स्मारक स्वरूप उनकी समाधि बनी हुई है, और केवल राजपूतानेके राजपूत ही नहीं, अन्यान्य स्थानोंकी अन्य जातिया भी 'जूझारजी' के नामसे उनकी पूजा किया करती हैं।

जिस समय औरङ्गजेब उदयपुरके साथ युद्ध कर रहा था उस समय दूसरी ओर भारतके राजनीतिक क्षेत्र में एक बड़ा तूफान उठ रहा था। औरङ्गजेबके अधीन राजपूतोंमें सर्व प्रधान जयपुरनरेश जयसिंह और जोधपुरके राठौर राजा यशवन्तसिंह थे। यद्यपि दोनों राजा मुगलोंकी अधीनता स्वीकार कर चुके थे, परन्तु दोनोंका बल इतना बढ गया था कि यदि दोनों मिलकर भारतकी खोयी हुई स्वाधीनता प्राप्त करना चाहते तो न जाने भारतकी राजनीतिक अवस्था आज क्या होती। जब औरङ्गजेबने देखा कि ये राजा प्रत्येक अप्रिय बातका प्रति- करते हैं और इनसे लडना कोई सहल काम नहीं, तो उसने

दोनोंका अन्त करना निश्चित किया। उसने यशवन्तसिंहको काबुल और जयसिंहको दक्षिण भेज दिया। थोड़े ही दिनोंमें समाचार मिला कि यशवन्तसिंह जहर देकर मार डाले गये। यशवन्तसिंह उदयपुर व्याहे हुए थे। जब वे काबुल जाने लगे तो राठौर सरदार वीर दुर्गादासको अपने पुत्र अजीतसिंह और रानीकी रक्षाके लिये दिल्ली छोड़ गये थे। यशवन्तकी मृत्युका समाचार पाकर औरङ्गजेब भयभीत हुआ कि कहीं राठौर बिगड़ न उठें। इसलिये उसने यशवन्तसिंहकी रानी और बच्चेको भी मार डालना चाहा और दुर्गादासको लोभ देकर काबूमें करना चाहा। दुर्गादास बादशाहके पास बुला भेजे गये और उन्हें बहुत कुछ लोभ दिखाया गया, परन्तु वे अपने कर्त्तव्य पथसे विचलित न हुए। तब बादशाहने रानी और दुर्गादासको कैद करनेकी आज्ञा दी।

वीर दुर्गादास और रानीने हाथमें तलवार लेकर अपने धर्म और बालककी रक्षा की और वे दिल्ली छोड़ कर भागे। दुर्गादासकी सलाहसे रानीने महाराणा राजसिंहकी शरण ली। महाराणाने आश्रय प्रदान किया। बादशाहने रानीका पीछा करनेके लिये एक बहुत बड़ी सेना भेजी। उदयपुरकी पहाड़ियोंमें राठोर मुगल सेनासे लड़े। दोनों ओरकी सेना काम आयी, परन्तु कुमार, रानी और दुर्गादास तीनों उदयपुर पहुच गये। महाराणाने उन्हे केलवा भिजवा कर उनकी रक्षाका प्रबन्ध कर दिया। औरङ्गजेबने जब यह सुना कि महाराणाने अजीतसिंहको शरण दी है तो आज्ञा दी, कि वे अजीतसिंहको अपने राज्यसे निकाल दें। महाराणाने उत्तर दिया कि शरणागतकी रक्षा करना क्षत्रियोंका धर्म है। मेरे प्राण रहते अजीतसिंह न

प्रजा अत्याचारसे अति दुखी हैं और सब दुर्बल पड़ गये हैं। चारों ओरसे बस्तियोंके ऊजड़ हो जानेकी और अनेक प्रकारके दु खोंकी बात सुननेमें आती है । राजमहलमें दरिद्रता छायी हुई है। जब बादशाह और शाहजादोंके देशकी यह दशा है, तब और रईसोंकी कौन कहे। शूरता तो केवल जिव्हा पर आ रही है, व्यापारी चारों ओर रोते हैं। मुसलमान अव्यवस्थित हो रहे हैं। हिन्दू महा दुखी हैं। यहा तक कि प्रजाको सन्ध्याकालके समय खानेको भी नहीं मिलता। सब दुखी होकर तमाम दिन अपना शिर पीटा करते हैं।

"ऐसे बादशाहका राज्य कितने दिन ठहर सकता है ? जिसने भारी करसे अपनी प्रजाकी ऐसी दुर्दशा कर डाली है । पूर्वसे पश्चिम तक सब लोग यही कहते हैं कि हिन्दुस्तानका बादशाह हिन्दुओंका ऐसा द्वेषी है कि वह रङ्क ब्राह्मण, योगी और वैरागी पर भी कर लगाता है। अपने उत्तम तैमूरी वंशको इन धनहीन, निरुपद्रवी उदासीन लोगोंको दु ख देकर कलङ्कित करता है। अगर आपको उस किताब पर विश्वास है, जिसे ईश्वरका वाक्य कहते हैं, तो उसमे देखिये ईश्वरको मनुष्य मात्रका स्वामी लिखा है। ईश्वर केवल मुसलमानोंका ही नहीं है। उसके सामने हिन्दू और मुसलमान दोनों समान हैं। मनुष्य मात्रको उसीने जीवनदान दिया है। नाना रङ्गके मनुष्य उसीने अपनी इच्छासे उत्पन्न किये हैं। आपकी मसजिदोंमें उसीका नाम लेकर चिल्लाते हैं और हिन्दुओं के देवमन्दिरोंमे उसीके लिये घण्टा बजाते हैं । सब उसीको स्मरण करते हैं। इसलिये किसी जातिको दु ख देना ईश्वरको अप्रसन्न करना है। हम लोग जब कोई चित्र देखते हैं तो उस चित्रके

।९७। स्मरण किया करते हैं। यदि हम उस चित्रको बिगाड़ें

तो चित्रकार अप्रसन्न होगा। कविकी उक्तीके अनुसार जब कोई फूल सूंघता है तो उसके बनानेवालेका ध्यान करता है। उसको बिगाड़ना ठीक नहीं।

"सिद्धांत यह कि हिन्दुओं पर आपने जो कर लगाना चाहा है, वह न्यायके परम विरुद्ध है। राज्यप्रबन्धको नाश करनेवाला है। ऐसा करना अच्छे राज्याधीश्वरोंका लक्षण नहीं। वह बलको शिथिल करनेवाला है। हिन्दुस्तानी रीति नीतिके विरुद्ध है। यदि आपको अपने मतका ऐसा आग्रह हो कि आप इस बातसे बाज न आवें तो पहले राजसिंहसे जो हिन्दुओंमें मुख्य हैं, उनसे यह कर लीजिये और फिर अपने इस शुभचिन्तकको बुलाइये। किन्तु यों प्रजापीड़न वा रणभङ्ग, वीरधर्म और उदारताके विरुद्ध है। बड़े आश्चर्यकी बात है कि आपके मन्त्रियोंने आपको ऐसे हानिकर विषयमें कोई उत्तम मन्त्र नहीं दिया।"

इस पत्रको पाकर औरङ्गजेबके क्रोधका ठिकाना न रहा। उसने शीघ्रही सेना सजा कर पहले मेवाड़ पर ही चढ़ाई करनेकी तैयारी की। औरङ्गजेबने अपने सेनापतिको बुलाकर कहा कि जितनी भी सेना एकत्र हो सके सबको लेकर मेवाड़ पर चढ़ाई कर दो। बङ्गाल से शाहजादा अकबर, काबुलसे अजिम, दक्षिणसे मुअज्जिम सभी वापस बुला लिये गये और एक बड़ी भारी सेना तैयार कर मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी गयी। जब महाराणा राजसिंहने बादशाहकी चढ़ाईकी बात सुनी तो उन्होंने मेवाड़की प्रजाको पहाड़ोंमें आश्रय लेनेकी आज्ञा दी। वे भी अपनी सेना सजाने लगे। पहाड़ी भील सरदार भी हजारोंकी संख्यामें अपने धनुष बाण लेकर पहुंचे। राणाने अपनी सेनाके तीन भाग किये। बड़े कुमार जयसिंहकी अधीनतामें पर्वतोंके शिखरों

पर सेना रखी गयी। गुजरात और चारों ओरके भीलोंसे सम्बन्ध रखनेके लिये पश्चिमी पर्वतोंकी रक्षाका भार भीम पर सौंपा गया। महाराणाने स्वय नाइनके गिरीमार्गमें डेरा डाला। सैन्य-सचालनका भार शक्तावत सरदार गरीबदासके ऊपर था। उन्होने बडी चतुरता पूर्वक सेनाको तीन मार्गोंमें बाट कर स्वय सैन्य-सञ्चालनके निरीक्षण पर अपनेको नियुक्त किया था। बादशाहने पचास हजार सेना तहव्वरखाकी अधीनतामें अपने लड़के अकबरके साथ उदयपुरकी ओर भेजी। आप स्वय बड़ी भारी सेना लेकर देवारी नामक भील गावमें डटा। अकबरने उदयपुर जाते हुए राहमें देखा कि सारे नगर और गाव सूने पडे हैं। वह राणाजीकी इस चालको समझ गया। राजधानीमें पहुच कर वह कई दिन तक चुप पड़ा रहा। उसकी सेनाको यह आशा न रही कि हम पर कोई आक्रमण करेगा। इसी बीचमें कुमार जयसिंहने बड़े जोरोंसे आक्रमण किया और यवन सेना काम आयी। थोडेसे सैनिकोंको लेकर अकबर अपने पिताके पास जाना चाहता था, परन्तु महाराणाने उसका मार्ग रोक दिया। जब अकबरने वहासे बच कर निकलने का कोई मार्ग न देखा, तो गोगुण्डा होकर भागनेका निश्चय किया। वह थोडी ही दूर गया था, कि भीलोंने उसका मार्ग बडे बडे पत्थरोंसे रोक दिया, और उसके साथके थोडेसे सैनिक भी काट डाले गये। प्राणों पर सकट आया समझ अकबरने कुमार जयसिहसे दया-प्रार्थना की। साथ ही प्रतिज्ञा की कि छुटकारा मिलते ही मैं मेवाड और मुगलोंके बीचकी शत्रुता बिल्कुल मिटा दूगा।

अकबरकी गिड़गिड़ाहटसे कुमारका हृदय पिघल गया

उन्होंने अपने कुछ आदमी साथ देकर जिलवाडेके गिरिमार्ग तक पहुचा दिया। वहासे निकल कर वह चित्तौडके किलेके नीचे पहुच गया। जब औरङ्गजेबने अकबरकी दुर्दशाका समाचार पाया तो वह उसकी सहायताके लिये आगे बढ़ा, परन्तु मुगल सेना पहाड़ी मार्गोंसे इतनी अपरिचित थी कि भीलों और राजपूतोंने राहमे बडे बडे पत्थर गिरा कर उसे दोनों तरफसे घेर लिया और पहाड़ों पर चढ कर उसका क्षय आरम्भ कर दिया। औरङ्गजेबके साथ उसकी बेगम और पुत्री भी थी। महाराणाके सिपाहियोंने बादशाहकी बेगम और लड़कीको कैद कर लिया। राणाजीने दोनोंको बडे सम्मानके साथ अपने राजमहलमें रखा। भट्टोंने लिखा है कि शाहजादी कुमार जयसिंह पर बहुत प्रेम दिखाने लगी थी, और उसने उनके साथ अपनी शादीका प्रस्ताव भी किया, परन्तु कई कारणोंसे महाराणाने उसे स्वीकार न किया। महाराणी प्रभावती और औरङ्गजेबकी बेगमके बीच जो बातचीत हुई उसका भी भट्टोने उल्लेख किया है। बादशाह, बेगम और शाहजादीकी गिरफ्तारीसे बहुत घबड़ाया, वह समझता था कि दोनोंकी इज्जत जानेसे बडी मुश्किल होगी, महाराणाने दोनोंको अपने सेनापतिके साथ भेज कर बादशाहसे कहलवाया कि मैं इसके बदलेमें और कुछ नहीं चाहता केवल इतना ही चाहता हू कि यदि राहमें आपको कोई गौ मिल जाये तो उसे न मारना। दुराचारी औरङ्गजेबने महाराणाके कहने पर जरा भी ध्यान न दिया। वह सदा यही कहता रहा कि महाराणाने मुझसे डर कर ऐसा किया है।

औरङ्गजेब पहाड़ी मार्गसे निकल कर भागा। यह मुठभेड़ सन् १६८० ई० के मार्च मासमें हुई। औरङ्गजेब और उसका

पुत्र अकबर हार कर चित्तौड़के परकोटके पास एकत्र हुए। औरंगजेबका दूसरा पुत्र मुअज्जम दक्षिणसे लौट कर यहीं आ मिला। वीरवर जयमलके वंशधर सावलदासने मुगल सेना पर राठोर वंशी सोलङ्की गोपीनाथ (रूपनगरके राजा) के साथ मिल कर भयानक आक्रमण किया। औङ्गजेब अपनी रक्षाका कोई उपाय न देख बीचमें ही भाग पड़ा, और अपने पुत्रसे कह गया कि जब तक मैं दूसरी सेना न भेजूं, तब तक यहीं रहना। अजमेर पहुंच कर उसने बहुतसी सेना तैयार की और खां रुहेला की अधीनतामें चित्तौड भेज दी। सावलदासने राहमें ही इस सहायक सेना पर आक्रमण किया और उसे खतम कर दिया। खां रुहेला भी युद्धमें काम आये। चित्तौड़ और अजमेरके बीच जितने मुगल स्थान थे, सावलदास द्वारा लूट लिये गये। इधर महाराणाजी विजयोत्सव मनाने लगे और उधर भीमसिंहने गुजरात पर चढाई कर दी। राहमें ईदर नगर ध्वंस कर दिया। वहांका मुसल्मान शासक अपनी सारी सेना लेकर भागा। भीमसिंहने पट्टन, बडनगर आदि कई स्थान लूटे। जब लूटमार ज्यादा हुई, तो अधिवासी घबड़ा कर महाराणाके पास पहुंचे। महाराणाने भीमसिंहको वापस बुला लिया। वे सूरत पर चढाई करने जा रहे थे।

औरंगजेब कई बार हार जानेसे दब तो गया, परन्तु उसके दिलमें बदला लेनेकी जो आग जल रही थी, वह धधकती ही रही। वह मेवाड पर चढाई करनेकी तैयारी फिर करने लगा। महाराणाजी उसके साथ छेड़-छाड न करना चाहते थे, जब तक वह मेवाड पर चढाई न करे। विजयोन्मत्त सामन्त महाराणाके निर्णयसे सन्तुष्ट न हुए। वे शत्रुको जड़से उखाड़ना चाहते

थे। राणाजीके दयालुदास नामक साहसी दीवान थे। उन्होंने बहुतसी घुड़सवार सेना एकत्र कर मालवा लूट लिया। वहांसे देवास, माडू, चन्देरी आदि स्थान लूटते हुए और मुसलमानी सेना विध्वस करते हुए लौटे। मुसलमान इतने भयभीत हो गये कि अपने स्त्री पुत्रोंको छोड कर भागे। दयालुदासजीने काजियोंको पकड उनकी दाढी मूछ मुडवा दी और उनसे बदला लिया। लूटका धन महाराणाका भेट किया गया। इसके बाद कुमार जयसिहके साथ दयालुदासने शाहजादा अजीम पर चढाई कर दी। वह चित्तौडसे रणथभारकी ओर भागा। इस वार महाराणा और उनके सामन्तोने मेवाडके सभी स्थानोंकी मुगल-सेनाको भगा दिया। हिन्दूपतिकी भूमि एकदम शत्रु शून्य हो गयी।

औरगजेब जब महाराणा राजसिहको नीचा न दिखा सका, तो उसने क्रुद्ध होकर मारवाड़ पर चढाई की। वह जानता था कि महाराज यशवन्तसिहका छोटा पुत्र और रानी महाराणाकी शरणमे हैं। महाराणा राजसिंह मेवाड़ और मारवाड की सेना एकत्र कर गनौरामें भिड गये। दिल्लीकी तरफसे अकबर और तहव्वरखाकी अधीनतामे सेना भेजी गयी थी। महाराणा की ओरसे भीमसिहने एक विचित्र चाल चली। रातको बादशाही सेनामेंसे करीब पाचसौ ऊट खुलवा मगाये और उन ऊटोंकी पीठों पर जलती हुई मशालें बाधकर वे बादशाही-सेनामें छोड दिये गये। ऊट एक दूसरेके ऊपर मशाल देख बडे जोरसे चिल्ला कर इधर उधर भागने लगे। ऊटोंकी चिल्लाहट सुन कर सेनाके सभी सैनिक डर कर भाग गये। इसी अवसर पर राजपूतोंने बडे जोरसे आक्रमण [illegible] । और मुगल सेनाको बुरी

तरहसे हरा दिया। इसके कुछ ही दिन बाद राजपूतानेके राजाओं ने मिल कर औरंजेबको दिल्लीके तख्तसे उतार कर अकबर को राजगद्दी देनेका विचार किया। अकबरके पास यह समाचार भेज दिया गया और गुप्त रूपसे युद्धकी सारी तैयारियां होने लगीं। ज्योतिषीने अकबरके राजतिलका दिन निश्चित किया। जब ज्योतिषीने देखा कि अकबरको राजसिंहासन देने की तैयारियां हो रही हैं, तो उसने भागकर औरंगजेबको खबर दे दी। खबर एक दिन पहले मिली, इसलिये औरंगजेब बहुत डरा। वह समझ गया कि मैं जरूर राजगद्दीसे उतार दिया जाऊंगा। औरंगजेबके पास उस समय कुछ सेना भी न थी। उसकी कुटिल बुद्धि अन्तमें काम कर गयी। उसने अकबरके नाम एक पत्र लिखा और उसे एक विश्वासी आदमीके हाथ देकर कह दिया कि इस पत्रको सेनापति दुर्गादासके डेरेमें डाल आना। उस पत्रमे उसने लिखा कि बेटा, तुम्हारी इस चतुराईको सुन कर मैं बड़ा खुश हुआ, परन्तु सावधान रहना। राजपूत कहीं इस गुप्त षड्यन्त्रको जान न जायें। जब राजपूत हमारे साथ लड़ते हों, तुम अपनी सेना लेकर उनपर चढ़ाई कर देना और उनका विध्वंस कर देना।

दुर्गादासको यह पत्र मिल गया। अकबरका नाम देख कर उसने उसे खोल कर पढ डाला। उसे पढ कर उन्हें बड़ा दु:ख हुआ, उन्होंने कहा कि जिसके लिये हम लडनेको तैयार हो रहे हैं, वह इतना विश्वासघाती है! मुसल्मानोंके सम्बन्धमे उन्हें पहलेसे ही अविश्वास रहता था, इसलिये अकबरका विश्वासघात उन्हें सत्य ही मालूम हुआ। वे अपनी सेना वापस लौटा ले गये। अकबरने अपनेको अकेला पाया और उसकी सारी

आशा धूलमें मिल गयी। इधर औरङ्गजेबने शीघ्र ही अपने अन्य दो लडकोंको बुला लिया। राजपूतोंको पीछेसे बादशाहकी कूटनीति मालूम हो गयी।

औरङ्गजेब राजपूतोंसे भयभीत हो गया, इसलिये वह चाहता था कि महाराणासे सन्धि हो जाये। उन दिनों बीकानेरका राजा श्यामसिंह बादशाही-सेनामें था। बादशाहने उसे राणाजी के पास भेजा और उससे कह दिया कि राणाजीको पता न लगे कि बादशाह सन्धिके लिये बड़ा अभिलाषी है। थोड़े ही दिनोंमें सन्धि हो गयी। सन्धिकी शर्तें ये थीं,—

१—चित्तौडके अन्तर्गत और सन्निकट जो स्थान बादशाहके अधीन हैं, वे राणाजीको लौटा दिये जायेंगे।

२—मन्दिर तोड कर जिन स्थानोंमें मसजिदें बनवायी गयी हैं, उस विषयमें कुछ न होगा, परन्तु भविष्यमें ऐसा घृणित कार्य न किया जायेगा।

३—यशवन्तसिंहके पुत्र और उनके कुटुम्बियोंको पुत्रके अवस्था प्राप्त करने पर उनका राज्य दे दिया जायेगा।

सन् १६६१ ई० में मेवाड़में भयानक अकाल पड़ा। महाराणाने कई लाख रुपये खर्च कर प्रजाकी रक्षाके लिये एक बड़ा तालाब खुदाया जो आज तक भी राजसमदके नामसे प्रसिद्ध है। इसके बाद २७ वर्ष शासन कर महाराणाजी स्वर्ग सिधारे और उनके पुत्र जयसिंह गद्दी पर बैठे।

——— ❀ ———

तरहसे हरा दिया। इसके कुछ ही दिन बाद राजपूतानेके राजाओं ने मिल कर औरंजेबको दिल्लीके तख्तसे उतार कर अकबर को राजगद्दी देनेका विचार किया। अकबरके पास यह समाचार भेज दिया गया और गुप्त रूपसे युद्धकी सारी तैयारियां होने लगीं। ज्योतिषीने अकबरके राजतिलका दिन निश्चित किया। जब ज्योतिषीने देखा कि अकबरको राजसिंहासन देने की तैयारियां हो रही हैं, तो उसने भागकर औरंगजेबको खबर दे दी। खबर एक दिन पहले मिली, इसलिये औरंगजेब बहुत डरा। वह समझ गया कि मैं जरूर राजगद्दीसे उतार दिया जाऊंगा। औरंगजेबके पास उस समय कुछ सेना भी न थी। उसकी कुटिल बुद्धि अन्तमें काम कर गयी। उसने अकबरके नाम एक पत्र लिखा और उसे एक विश्वासी आदमीके हाथ देकर कह दिया कि इस पत्रको सेनापति दुर्गादासके डेरेमें डाल आना। उस पत्रमें उसने लिखा कि बेटा, तुम्हारी इस चतुराईको सुन कर मैं बडा खुश हुआ, परन्तु सावधान रहना। राजपूत कहीं इस गुप्त षड्यन्त्रको जान न जायें। जब राजपूत हमारे साथ लड़ते हों, तुम अपनी सेना लेकर उनपर चढाई कर देना और उनका विध्वंस कर देना।

दुर्गादासको यह पत्र मिल गया। अकबरका नाम देख कर उसने उसे खोल कर पढ डाला। उसे पढ कर उन्हें बडा दुःख हुआ, उन्होंने कहा कि जिसके लिये हम लडनेको तैयार हो रहे हैं, वह इतना विश्वासघाती है। मुसलमानोंके सम्बन्धमें उन्हें पहलेसे ही अविश्वास रहता था, इसलिये अकबरका विश्वासघात उन्हें सत्य ही मालूम हुआ। वे अपनी सेना वापस लौटा ले गये। अकबरने अपनेको अकेला पाया और उसकी सारी

आशा धूलमें मिल गयी। इधर औरङ्गजेबने शीघ्र ही अपने अन्य दो लड़कोंको बुला लिया। राजपूतोंको पीछेसे बादशाहकी कूटनीति मालूम हो गयी।

औरङ्गजेब राजपूतोंसे भयभीत हो गया, इसलिये वह चाहता था कि महाराणासे सन्धि हो जाये। उन दिनों बीकानेरका राजा श्यामसिंह बादशाही सेनामें था। बादशाहने उसे राणाजीके पास भेजा और उससे कह दिया कि राणाजीको पता न लगे कि बादशाह सन्धिके लिये बड़ा अभिलाषी है। थोड़े ही दिनोंमें सन्धि हो गयी। सन्धिकी शर्तें ये थीं,—

१—चित्तौड़के अन्तर्गत और सन्निकट जो स्थान बादशाहके अधीन हैं, वे राणाजीको लौटा दिये जायेंगे।

२—मन्दिर तोड़ कर जिन स्थानोंमें मसजिदें बनवायी गयी हैं, उस विषयमें कुछ न होगा, परन्तु भविष्यमें ऐसा घृणित कार्य न किया जायेगा।

३—यशवन्तसिंहके पुत्र और उनके कुटुम्बियोंको पुत्रके अवस्था प्राप्त करने पर उनका राज्य दे दिया जायेगा।

सन् १६६१ ई० में मेवाड़में भयानक अकाल पड़ा। महाराणाने कई लाख रुपये खर्च कर प्रजाकी रक्षाके लिये एक बड़ा तालाब खुदाया जो आज तक भी राजसमद्रके नामसे प्रसिद्ध है। इसके बाद २७ वर्ष शासन कर महाराणाजी स्वर्ग सिधारे और उनके पुत्र जयसिंह गद्दी पर बैठे।

———:o:———

बड़े लज्जित हुए। वे रानीसे पहले भी अप्रसन्न रहते थे, यह हाल देख कर उनकी अप्रसन्नता और भी बढ़ गयी। इस पर रानीजो वहा पर ही चिता जला कर भस्म हो गयीं। उन्होंने चित्तौड़ लौटना स्वीकार न किया।

कुछ दिनोंके बाद महाराणा जयसिंह कमलादेवीको लेकर जयपुर राज्यके एक निर्जन स्थानमें जा बसे थे। अमरसिंह अपनी माताकी मृत्युसे बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसने बूंदीसे अपने मामाको लेकर उदयपुर पर चढाई कर दी। यह समाचार पाकर राणाजीको राजधानी लौटना पड़ा। जैसे तैसे अमरसिंह एक लिंगके मन्दिरमे बुलाये गये और सन्धि हो गयी। निश्चय हुआ कि राणाजी अपनी राजधानीको लौटेंगे और अमरसिंह राणाजी के जीवनकालमे जयसमद्के तट पर रहेंगे। २० वर्ष तक राज्य कर महाराणा जयसिंह स्वर्ग सिधार गये। जयसिंहने अपने पिताके साथ रह कर जैसी वीरता दिखायी थी, वैसी अपने शासन कालमे न दिखायी। कमलावतीके मोहने उन्हें कुछ न करने दिया।

सन् १७०० ई० में जयसिंहके पुत्र अमरसिंह राजगद्दी पर बठे। शासन भार ग्रहण करनेके बाद उन्होंने दिल्लीके मुगल बादशाह, शाह आलमसे सन्धि कर ली। सन्धिकी प्रधान शर्तें ये थीं चित्तौड़की मरम्मत बादशाही खर्चसे हो। गोहत्या बिल्कुल बन्द हो। मेवाड़के जो स्थान बादशाही अधिकारमें चले गये हैं, वे सब लौटा दिये जायें। हिन्दू स्वाधीनता पूर्वक धर्माचरण कर सकें।

शिशोदिया-कुलकी एक शाखामें रावगोपाल नामक एक राजपूत था। वह चम्बल नदीके किनारे रामपुर और भनपुरका शासन सामन्त रूपसे किया करता था। राव गोपाल अपने पुत्रके हाथ भार देकर दक्षिणमें लड़नेके लिये गया था। लड़

राज्यके लोभमें बादशाहसे मिल कर मुसलमान हो गया और बादशाहसे आज्ञापत्र ले आया कि अपने पिताका राज्य वही स्वय भोगे । जब राव गोपालकी कोई शिकायत बादशाहने न सुनी तो उन्होंने महाराणाका आश्रय लिया । राव गोपालकी सहायता करनेसे महाराणा बादशाहके क्रोधभाजन बने । उनके विरुद्ध सेना भेजी गयी । सेना महाराणाका सामना करने न पहुच सकी क्योंकि उसे दक्षिण चला जाना पड़ा । इसी बीचमें बादशाह औरङ्गजेब १७०७ में औरङ्गाबादमें मर गया ।

औरगजेबके मरते ही उसके पुत्रोंमें तख्तके लिये लड़ाई हुई । महाराणाने मुअज्जमका साथ दिया । धातनगरमें बड़ा भारी युद्ध हुआ और मुअज्जमकी जीत हुई । वह शाह आलम बहादुरशाह का नाम धारण कर दिल्लीके तख्त पर बैठा । महाराणा अमरसिंह के उद्योगसे राजपूतोंने प्रण किया कि भविष्यमें अपनी कन्याए मुगलोंको न दी जायेंगी । बादशाहने राजपूत कन्याएं पानेके लिये बड़ी चेष्टा की, परन्तु वह सफलता न प्राप्त कर सका । इसी समय देशमें वीर सिखोंने शिर उठाया । बहादुरशाहको उनके विरुद्ध लड़नेके लिये उत्तरकी ओर जाना पड़ा । जयपुर, जोधपुरके राजाओंने भी मुगलोंका साथ न दिया । राणा अमरसिंहके जीवन में सबसे महत्वपूर्ण यह काम हुआ कि सब राजपूत राजाओंने महाराणाको अपना प्रधान माना और महाराणाने जयपुर, जोधपुरके साथ विवाह सम्बन्ध इस शर्त पर स्थापित किया कि वे मुगलोंको कन्याए न देंगे । उदयपुर घरानेकी जो लड़कियां अन्यत्र ब्याही जायेंगी, उनके गर्भसे उत्पन्न होने वाले लड़के राज्यके उत्तराधिकारी होंगे । यदि कोई कन्या उत्पन्न होगी तो ऊंचे राजपूत घरानेमें ब्याही जायेगी । इस सन्धिसे जयपुर, जोधपुरमें

बड़े लज्जित हुए। वे रानीसे पहले भी अप्रसन्न रहते थे, यह हाल देख कर उनकी अप्रसन्नता और भी बढ़ गयी। इस पर रानीजो वहां पर ही चिता जला कर भस्म हो गयी। उन्होंने चित्तौड़ लौटना स्वीकार न किया।

कुछ दिनोंके बाद महाराणा जयसिंह कमलादेवीको लेकर जयपुर राज्यके एक निर्जन स्थानमें जा बसे थे। अमरसिंह अपनी माताकी मृत्युसे बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसने बूंदीसे अपने मामाको लेकर उदयपुर पर चढ़ाई कर दी। यह समाचार पाकर राणाजीको राजधानी लौटना पड़ा। जैसे तैसे अमरसिंह एक लिंगके मन्दिरमें बुलाये गये और सन्धि हो गयी। निश्चय हुआ कि राणाजी अपनी राजधानीको लौटेंगे और अमरसिंह राणाजी के जीवनकालमे जयसमद्रके तट पर रहेंगे। २० वर्ष तक राज्य कर महाराणा जयसिंह स्वर्ग सिधार गये। जयसिंहने अपने पिताके साथ रह कर जैसी वीरता दिखायी थी, वैसी अपने शासन कालमें न दिखायी। कमलावतीके मोहने उन्हें कुछ न करने दिया।

सन् १७०० ई० में जयसिंहके पुत्र अमरसिंह राजगद्दी पर बठे। शासन भार ग्रहण करनेके बाद उन्होंने दिल्लीके मुगल बादशाह, शाह आलमसे सन्धि कर ली। सन्धिकी प्रधान शर्तें ये थीं, चित्तौडकी मरम्मत बादशाही खर्चसे हो। गोहत्या बिल्कुल बन्द हो। मेवाड़के जो स्थान बादशाही अधिकारमें चले गये हैं, वे सब लौटा दिये जायें। हिन्दू स्वाधीनता पूर्वक धर्माचरण कर सकें।

शिशोदिया-कुलकी एक शाखामे रावगोपाल नामक एक राजपूत था। वह चम्बल नदीके किनारे रामपुर और भनपुरका शासन सामन्त रूपसे किया करता था। राव गोपाल अपने पुत्रके हाथमें भार देकर दक्षिणमें लड़नेके लिये गया था। लड़का

ग्यके लोभमें बादशाहसे मिल कर मुसल्मान हो गया और बाद-
हसे आज्ञापत्र ले आया कि अपने पिताका राज्य वही स्वय
गे। जब राव गोपालकी कोई शिकायत बादशाहने न सुनी तो
होंने महाराणाका आश्रय लिया। राव गोपालकी सहायता
नेसे महाराणा बादशाहके क्रोधभाजन बने। उनके विरुद्ध सेना
ी गयी। सेना महाराणाका सामना करने न पहुच सकी क्यों-
उसे दक्षिण चला जाना पडा। इसी बीचमें बादशाह औरङ्ग-
: १७०७ में औरङ्गाबादमें मर गया।

औरंगजेबके मरते ही उसके पुत्रोंमें तख्तके लिये लड़ाई हुई।
राणाने मुअज्जमका साथ दिया। धातनगरमें बडा भारी युद्ध
ा और मुअज्जमकी जीत हुई। वह शाह आलम बहादुरशाह
नाम धारण कर दिल्लीके तख्त पर बैठा। महाराणा अमरसिंह
योगसे राजपूतोंने प्रण किया कि भविष्यमे अपनी कन्याएं
तोंको न दी जायेंगी। बादशाहने राजपूत कन्याए पानेके लिये
चेष्टा की, परन्तु वह सफलता न प्राप्त कर सका। इसी समय
ं वीर सिखोंने शिर उठाया। बहादुरशाहको उनके विरुद्ध
के लिये उत्तरकी ओर जाना पडा। जयपुर, जोधपुरके
ाओंने भी मुगलोंका साथ न दिया। राणा अमरसिंहके जीवन
बसे महत्वपूर्ण यह काम हुआ कि सब राजपूत राजाओंने
ाणाको अपना प्रधान माना और महाराणाने जयपुर, जोध
साथ विवाह सम्बन्ध इस शर्त पर स्थापित किया कि ये
ोंको कन्याए न देंगे। उदयपुर घरानेकी जो लड़कियां अन्यत्र
ी जायेंगी, उनके गर्भसे उत्पन्न होने वाले लड़के राज्यके
ाधिकारी होंगे। यदि कोई कन्या उत्पन्न होगी तो ऊंचे राज-
घरानेमें ब्याही जायेगी। इस सन्धिसे जयपुर, जोधपुरमें बडा

आनन्दोत्सव मनाया गया। सबने शपथ खाकर सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर किये।

जोधपुरके अजीतसिंहने अपने रक्षक दुर्गादासको अपने राज्य से निकाल दिया था। उन्होंने महाराणाकी शरण ली। महाराणा ने उन्हे वडे आदरसे अपने यहा रख लिया और उनके खर्चके लिये हर रोज पांचसौ रुपये देने लगे। जयपुर, जोधपुर और उदयपुरने निश्चय किया कि मुगलोंकी अधीनतासे छुटकारा पाया जाये और इस कामके लिये महाराणा प्रधान चुने गये। इसी बीचमें सैय्यदभाइयोंने बहादुरशाहको जहर देकर मार डाला और फर्रुखशियर बादशाह बना। उसने जब राजपूतोंकी सन्धि का समाचार सुना और साथ ही साथ यह भी सुना कि वीर दुर्गा दास अजीतसिंहको छोड कर महाराणाके पास चले गये हैं, तो अजीतसिहकी निर्बलता उसे प्रत्यक्ष दिखायी दी। उसने अजीतसिं के विरुद्ध चढ़ाई कर दी। अजीतसिह घबरा गया और राजपूतों सहायता की प्रतीक्षा न कर बादशाहसे सन्धि कर बैठा। उसने अपनी लडकी भी राजपूत-सन्धिकी कुछ परवा न कर बादशाह साथ व्याह दी। मुगल बादशाहने उसे अपने दरबारमें उच्चप दिया। महाराणा यह समाचार पाकर वडे दु खी हुए। फर्रुख शियरने ही एक अंग्रेज डाक्टरसे राजपूत कुमारीसे विवाह करने लिये अपनी एक भयानक बीमारीका इलाज कराया था, जिस प्रसन्न होकर उसने अंग्रेजोंको देशमें व्यापार करनेके बहुत अधिकार और सुविधाये दे दीं। इसी समयसे भारतमें बृटि शासनकी नींव पडी।

फर्रुखशियरने जब महाराणा अमरसिंहकी तैयारी और विरोधकी बात सुनी तो उसने उनसे, सन्धिका प्रस्ताव किया औ

महाराणाको आपसकी फूट देख उसे स्वीकार कर लेना पड़ा। इस सन्धिके अनुसार ही हिन्दुओं पर से जजिया कर उठा दिया गया। महाराणा सन्धि कर जङ्गलमें चले गये और सन् १७१६ ई० में परलोक सिधारे।

महाराणा अमरसिहके पुत्र सग्रामसिह पिताकी मृत्युके बाद मेवाड़के शासक हुए। उन्होंने १८ वर्ष राज्य किया। वे मुगल बादशाह मुहम्मदशाहके तख्त पर बैठनेके एक साल पहले महाराणा हुए। इनके शासनकालमें मुगल साम्राज्य, बादशाहोंकी कमजोरीके कारण छिन्न भिन्न होने लगा। चारों ओर जागीरदार स्वतन्त्र बनने लगे। हैदराबादके निजामने अपना राज्य अलग स्थापित कर लिया। अवधके नवाव भी स्वतन्त्र हो गये। बगाल भी देहलीसे अलग हो गया। जयपुर और जोधपुरके राजाओंने भी अपनी अपनी सीमायें खूब बढायीं। यदि महाराणा चाहते तो इस समय शासनक्षेत्र बढा सकते थे, परन्तु वे इस बातसे सदा डरते थे कि दूसरों पर आक्रमण करनेसे कहीं मुगलोंकी सहायता न लेनीपड़े और अपनी स्वतन्त्रतामें बाधा पड़े तथा जयपुर जोधपुरके रजदूत घरानोंकी खुशामद करनी पडे और उनसे विवाह सम्बन्धथापित करना पडे। मेवाड़के राणा अपने पवित्र सिद्धान्त के सामने राजनीतिक महत्वकी कुछ भी परवा न करते थे, जो दूसरोंकी गुलामी और खुशामदसे प्राप्त हो सकता था। इसीसे सुअवसर उपस्थित होने पर भी महाराणा सग्रामसिहने सादा जीवन बिता कर अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षाकी ओर ही ध्यान दिया। दूसरोंकी कमजोरी देख कर उनके मुहमें पानी न आया।

महाराणा सग्रामसिहने अपने परिवार तथा सरदारोंके बीच मितव्ययिताका प्रचार करनेके लिये बहुतसे नियम बनाये थे,

जिनका वे स्वयं पालन किया करते थे। एक बार कोटरिया के चौहान-सामन्तने महाराणासे प्रार्थना की कि आप अपनी दरबारी पोशाक और भी बहुमूल्य बनायें। महाराणाने शिष्टता पूर्वक वह प्रार्थना स्वीकार कर ली। चौहान अपने इस सम्मानसे बडे प्रसन्न हुए। कुछ ही दिन बाद महाराणाने अपने मन्त्रीको आज्ञा दी कि कोटरियाकी जागीरसे दो गाव ले लो। जब सामन्त ने यह बात सुनी तो वे घबरा कर महाराणाके पास पहुचे और उन्होंने अपना अपराध जानना चाहा। राणाने उत्तर दिया कि अपराध तो कुछ नहीं हुआ। मेरी आमदनी अलग अलग खर्चों के लिये बधी हुई है। आपने बढिया पोशाक पहननेको कहा है उसके लिये दो गाव चाहियें। इसीसे आपके अधिकारसे लिये हैं। सामन्त यह सुन कर बडे लज्जित हुए और वे फिर किफायतके पक्षपाती बन गये।

राणाने एक गाव किसीको दे दिया था, जिसकी आयसे उनकी भोजनशालामें चीनीका खर्च पूरा हुआ करता था। एक दिन जब उन्हें रसोईदारने दही परोसा जिसमें चीनी न पड़ी थी तो वे बडे क्रुद्ध हुए, परन्तु जब उनसे कहा गया कि महाराजने अमुक गाव दान कर दिया है तो वे चीनी बिना दही खाकर ही उठ आये।

महाराणाने देशरक्षाके लिये शत्रुओंके साथ अठारह बार युद्ध किया। वे बप्पारावलके घरानेके अन्तिम प्रतापी राणा माने जाते हैं। उनके बाद मेवाड़को घरेलू झगड़ेके कारण मराठोंकी शरण लेनी पड़ी और अन्तमें बृटिश छत्रछायामें जाना पड़ा।

सन १७३४ में महाराणा संग्रामसिंहके चारों पुत्रोंमें सबसे बड़े

पुत्र जगतसिंहने मेवाड़की गद्दी पायी। जोधपुरके राजा अजीतसिंह ने लोभमें पड कर जो तीनों राजाओंकी सन्धि तोड दी थी, उसे फिर स्थापित करनेके लिये महाराणा जयसिंहने फिर सबको हुड़ला नामक स्थानमें एकत्र किया और वहा पर इष्टदेवकी शपथ खाकर सबने सन्धि स्वीकार की। उसमें परस्परके विश्वास और सहायता की व्यवस्था थी। बूदीके हाडा भी इस सभामें सम्मिलित हुए थे। महाराणा सर्वप्रधान बनाये गये और मुगलोंकी अधीनता त्यागनेके लिये रामपुरमें सेना एकत्र करनेका निश्चय हुआ। इसी समय दक्षिणमें मराठोंकी प्रभुता बहुत बढ गयी। वे धन लेकर राजाओंकी सहायता करते और लूटपाट भी किया करते थे। उन्होंने एक बार दिल्ली तक धूम मचायी और बादशाहसे चौथ वसूल की। इस अवस्थाके बीच नादिरशाह भी भारत लूटने पहुचा और उसने दिल्लीमें लङ्काकाण्ड तथा भयानक लूटकी धूम कई दिन तक रखी। दिल्लीके कमजोर बादशाहने उसे कई प्रदेश और काबुल आदि देकर सन्धि कर ली।

जयपुर-जोधपुरके सरदारोंने इसी धूमसे लाभ उठा कर अपने अलग अलग स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिये। बाजीराव पेशवाने मालवेको जीत कर मेवाड़ पर चढ़ाई की। राणाजीने अपने सालम्ब्रा सरदार और प्रधान मन्त्री बिहारीदासको सन्धिके लिये भेजा। सन्धिमें निश्चय हुआ कि राणाजी हर साल पौने दो लाख रुपया मराठोंको दिया करेंगे। उदयपुरके राणाकी बहन जयपुर ब्याही हुई थीं, उनके माधोसिंह उत्पन्न हुए। सन्धिके अनुसार उन्हे गद्दी न देकर ईश्वरीसिंहको दी गयी। माधोसिंह राणाजीके पास शिकायत लेकर पहुचे। उन्होंने ईश्वरीसिंह पर चढाई की। मेवाड़ पर कोई सकट तो था ही नहीं, इसलिये मेवाड़के वीर

सरदारोंने इस युद्धमें विशेष उत्साह न दिखाया, जिससे राणाकी हार हुई। राणाकी सहायताके लिये बूदी कोटावाले भी पहुचे थे, इस लिये उनसे बदला लेनेके लिये ईश्वरीसिंहने सिन्धियाकी सहायतासे उनपर चढाई कर दी। ईश्वरीसिहकी हार हुई। महाराणाने पीछेसे होल्करसे सहायता मागी और कहा कि यदि मेरा मानजा जयपुरकी गद्दी पर वैठा दिया जाये तो आपको ६४ लाख रुपये दिये जायेंगे। होल्करने माधोसिहको गद्दी पर वैठा दिया और महाराणासे ६४ लाख रुपये ले लिये। मराठोंको पता लग गया कि मेवाडमें अधिक धन है। सन् १७५२ ई० में राणा जगतसिहकी मृत्यु हो गयी।

उनके पुत्र प्रतापसिह राजगद्दी पर वैठे। इन्होंने केवल तीन वर्ष राज्य किया। मराठोंने तीन वार मेवाड पर आक्रमण किया जयपुरके राजा राजसिहकी पुत्रीसे इनका विवाह हुआ था। इस रानीके गर्भसे राजसिह उत्पन्न हुए और वे पिताकी मृत्युके बाद गद्दी पर वैठे। राजसिहने सात वर्ष तक राज्य किया। प्रत्येक वर्ष मराठोंने आक्रमण कर, कर वसूल किया। सन् १७६२ में राजसिहके चाचा अरिसिह गद्दी पर वैठे। इनके शासनमें मल्हारराव होल्करकी चढाई हुई। अरिसिहने उन्हे ५१ लाख रुपये देकर सन्धि कर ली। इसी समय मेवाडके सरदारोंमें आपसमें बडी फूट फैली। राणाने एक पराक्रमी राजपूत जालिमसिहको सामन्त बना लिया था। उन्हींकी सलाहसे सरदारोंका विद्रोह दबानेके लिये राणाने महाराष्ट्र सेनापति रघू पागे और दौलामिया नामक एक मुसल्मानको अपने यहा बुला लिया।।

सरदारोंने माधोजी सिंधियाको अपने पक्षमें कर लिया और दोनों ओरकी सेना मैदानमें डट गयी। सिंधिया और विद्रोही स

हार हार कर उज्जैन भागे। राणाकी सेना अपनी पूर्ण विजय समझ कर आनन्दोत्सव मनाने लगी। माधोजीने अपनी सेना फिर सजा कर चढ़ाई कर दी। राणाजीको बड़ी हानि उठानी पड़ी। सलुम्ब्रा, शाहपुर और बुनेराके सरदार युद्धमें काम आये। जालिमसिंह युद्धमें गिरफ़ार हो गये और दौलामिया घायल हुए। जालिमसिंह दो वर्ष बाद कुछ धन देकर छूट सके। थोड़े ही दिन बाद सिंधियाने उदयपुर घेर लिया। सालम्ब्राके सरदार भीमसिंह को नगर-रक्षाका भार दिया गया। राणाजीके पुराने मन्त्री नष्ट होकर नौकरी छोड़ गये थे। उदयपुर पर सङ्कट आया समझ वैश्यकुलोत्पन्न अमरचन्द बरवा एकलिंगके मन्दिरमें फिर राणाजी से मिले और बोले कि उदयपुरकी दुर्गति मुझसे नहीं देखी जा सकती। राणाजीने अपने सब अपराध स्वीकार किये और भविष्य के लिये यह बात तय हुई कि अमरचन्दजीके कार्यमें कुछ भी हस्तक्षेप न किया जायेगा। अमरचन्दजीने जब मन्त्रीत्व ग्रहण किया उन्होंने सेनाको विद्रोही पाया, क्योंकि उसका वेतन न चुकाया गया था। उन्होंने राजकोषमें पड़ी हुई बहुतसी अनावश्यक वस्तुएं बेच कर उस धनसे सेनाका वेतन चुका दिया। बाजारोंमें व्यापार भी चमकने लगा। मराठोंने इसी समय राणा से ७० लाख रुपया देकर सन्धि करना स्वीकार कर लिया। इस बातको सुन कर सिंधियाकी लालसा और भी बढ़ गयी। सन्धि पर सही कर उन्होंने २० लाख और मांगे। अमरचन्दको सिंधिया की बात पर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने सन्धि फाड़ डाली और सिंधिया पर आक्रमण किया। ६ महीने तक इधर उधर लड़ाई होती रही। अन्तमें गर्मीके दिनोंमें अमरचन्दने सिंधियाकी सेनाके पास पानीका जाना बन्द कर दिया। इससे सिंधियाने घबरा कर

सन्धिका प्रस्ताव किया। अमरचन्दने कहा कि ६ महीनेकी हानि काटने पर ७० लाखमें जो बचे वह लेना हो तो ले लो।

अन्तमें ६३॥ लाख पर फैसला हो गया। ३३ लाख तो नकद दिये गये और ३० लाखमें कई गाव बन्धक रख दिये गये। अहेरियाके उत्सव पर राणा अरिसिहको एक हाडा राजपूतने मार डाला। उनकी एक उपपत्नी उनके साथ सती हो गयी। सन् १७७२ में उनका बडा पुत्र हमीर गद्दी पर बैठा। उसकी अवस्था १२ वर्षकी थी, इस लिये राज्यशासनका भार उसकी माताने सम्भाला। मराठोंने फिर उदयपुर पर धावा किया। इस समय राजमाता लोगोंके बहकानेसे मन्त्री अमरचन्दसे नाराज हो गयीं। अमरचन्दने अपनी सफाईके लिये अपनी सारी सम्पत्ति और वस्त्र तक राजमाताके पास भेज दिये। बहुत समझाने पर उन्होंने पुराने वस्त्र फिर वापस लिये। रानी उनके हृदयकी शुद्धता कुछ समयके लिये तो मान गयीं परन्तु फिर लोगोंके कहनेमें आ गयीं, और उन्हे जहर देकर मरवा डाला। जिस अमीरचन्दने मातृभूमिके गौरवकी रक्षार्थ सर्वस्व अर्पण करके की थी, उसके साथ कुसगमें पडी हुई एक अवलाने इस प्रकारका नीच वर्ताव किया। अमरचन्दकी मृत्युके बाद मेवाड़ पर मराठोंने फिर आक्रमण किया और ६ लाख रुपया सालानाका कर उन्होंने वीर भूमिसे लिया। सन् १७७८ ई० में हमीर स्वर्गवासी हुए और उनके छोटे भाई भीमसिह गद्दी पर बैठे। उन्होंने लगभग ५० वर्ष तक राज्य किया।

भीमसिहके शासनकालमें मराठोंकी शक्ति शिथिल हो गयी। जयपुर, जोधपुर वालोंने मराठोंको दिये हुए गाव फिरसे छीन लिये। इसी अवसर पर राणाजीके दीवान मालदास मेहता और

सहकारी मौजीरामने नीमवहेडा और उसके आस पासके महाराष्ट्र किले दबा लिये। जावदाके किले पर भी आक्रमण किया गया। और भी सरदार पुराने वैर भावको भूल कर शामिल हो गये और मेवाड़की खोई हुई सारी भूमिका उद्धार कर लिया गया। उदयपुर वाले अपनी इस विजयसे इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने मराठोंके गांवों पर भी अपना अधिकार जमाना चाहा। अपनी भूमि भी हाथसे जाती देख होलकर वंशकी महारानी अहिल्याबाई एक दम क्रुद्ध हो उठी। सन् १७८८ ई० में अहिल्याबाईकी सेना राणाकी सेनासे मसोरके पास भिड गयी और भीषण युद्ध हुआ। राणाजीका मन्त्री बहुतसी सेनाके साथ मारा गया और कई स्थानोंके सरदार गिरफ़ार हो गये। जो परगने मेवाड़वालोंने छीने थे, उनमेंसे जावदाको छोड कर और सब फिर मराठोंके हाथ चले गये।

इन उपद्रवों और विप्लवोंसे मेवाडके राज्यमें इतना अन्धेर मच गया कि कोई किसीको न मानता था। दिन-दहाड़े बाजार और शहर लूटे जाते थे। जो अपना बल दिखा सका वही प्रजासे कर वसूल करने लगता था।

थोड़े ही दिनोंके बाद माधोजी सिंधियाकी मृत्यु हो गयी और उनका भतीजा दौलतराव बलपूर्वक उनका उत्तराधिकारी बना। मराठोंमें भी घरेलू वैमनस्य आरम्भ हो गया। राणाने कई बार भिन्न भिन्न व्यक्तियोंका साथ दिया। वे कई बार जीते और कई बार पराजित हुए। सन् १८०२ में इन्दौरमें होल्कर सिंधियाके बीच भयानक युद्ध हुआ। होल्कर हार कर राणाजीके पास चला गया और नाथद्वारामें रहने लगा। नाथद्वारा पहुचकर उसने अपनी बदमाशी दिखायी। वहाके पुरोहित और गोसाई को घेर

सन्धिका प्रस्ताव किया। अमरचन्दने कहा कि ६ महीनेकी हानि काटने पर ७० लाखमें जो बचे वह लेना हो तो ले लो।

अन्तमें ६३॥ लाख पर फैसला हो गया। ३३ लाख तो नकद दिये गये और ३० लाखमें कई गाव बन्धक रख दिये गये। अहेरियाके उत्सव पर राणा अरिसिहको एक हाडा राजपूतने मार डाला। उनकी एक उपपत्नी उनके साथ सती हो गयी। सन् १७७२ में उनका बड़ा पुत्र हमीर गद्दी पर बैठा। उसकी अवस्था १२ वर्षकी थी, इस लिये राज्यशासनका भार उसकी माताने सम्भाला। मराठोंने फिर उदयपुर पर धावा किया। इस समय राजमाता लोगोंके बहकानेसे मन्त्री अमरचन्दसे नाराज हो गयी। अमरचन्दने अपनी सफाईके लिये अपनी सारी सम्पत्ति और वस्त्र तक राजमाताके पास भेज दिये। बहुत समझाने पर उन्होंने पुराने वस्त्र फिर वापस लिये। रानी उनके हृदयकी शुद्धता कुछ समयके लिये तो मान गयीं परन्तु फिर लोगोंके कहनेमें आ गयीं, और उन्हे जहर देकर मरवा डाला। जिस अमीरचन्दने मातृभूमिके गौरवकी रक्षार्थ सर्वस्व अर्पण करके की थी, उसके साथ कुसगमें पड़ी हुई एक अवलाने इस प्रकारका नीच वर्ताव किया। अमरचन्दकी मृत्युके बाद मेवाड़ पर मराठोंने फिर आक्रमण किया और ६ लाख रुपया सालानाका कर उन्होंने वीर भूमिसे लिया। सन् १७७८ ई० में हमीर स्वर्गवासी हुए और उनके छोटे भाई भीमसिह गद्दी पर बैठे। उन्होंने लगभग ५० वर्ष तक राज्य किया।

भीमसिहके शासनकालमें मराठोंकी शक्ति शिथिल हो गयी। जयपुर, जोधपुर वालोंने मराठोंको दिये हुए गाव फिरसे छीन लिये। इसी अवसर पर राणाजीके दीवान मालदास मेहता और

सहकारी मौजीरामने नीमचहेड़ा और उसके आस पासके महाराष्ट्र किले दबा लिये। जावदाके किले पर भी आक्रमण किया गया। और भी सरदार पुराने वैर भावको भूल कर शामिल हो गये और मेवाड़की खोई हुई सारी भूमिका उद्धार कर लिया गया। उदयपुर वाले अपनी इस विजयसे इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने मराठोंके गावों पर भी अपना अधिकार जमाना चाहा। अपनी भूमि भी हाथसे जाती देख होल्कर वंशकी महारानी अहिल्याबाई एक दम क्रुद्ध हो उठीं। सन् १७८८ ई० में अहिल्याबाईकी सेना राणाकी सेनासे मसोरके पास भिड़ गयी और भीषण युद्ध हुआ। राणाजीका मन्त्री बहुतसी सेनाके साथ मारा गया और कई स्थानोंके सरदार गिरफ्तार हो गये। जो परगने मेवाड़वालोंने छीने थे, उनमेंसे जावदाको छोड़ कर और सब फिर मराठोंके हाथ चले गये।

इन उपद्रवों और विप्लवोंसे मेवाड़के राज्यमें इतना अन्धेर मच गया कि कोई किसीको न मानता था। दिन-दहाड़े बाजार और शहर लूटे जाते थे। जो अपना बल दिखा सका वही प्रजासे कर वसूल करने लगता था।

थोड़े ही दिनोंके बाद माधोजी सिंधियाकी मृत्यु हो गयी और उनका भतीजा दौलतराव बलपूर्वक उनका उत्तराधिकारी बना। मराठोंमें भी घरेलू वैमनस्य आरम्भ हो गया। राणाने कई बार भिन्न भिन्न व्यक्तियोंका साथ दिया। वे कई बार जीते और कई बार पराजित हुए। सन् १८०२ में इन्दौरमें होल्कर सिंधियाके बीच भयानक युद्ध हुआ। होल्कर हार कर राणाजीके पास चला गया और नाथद्वारामें रहने लगा। नाथद्वारा पहुंचकर उसने अपनी बदमाशी दिखायी। वहांके [illegible] गोसाईं को घेर

सन्धिका प्रस्ताव किया। अमरचन्दने कहा कि ६ महीनेकी हानि काटने पर ७० लाखमें जो बचे वह लेना हो तो ले लो।

अन्तमें ६३॥ लाख पर फैसला हो गया। ३३ लाख तो नकद दिये गये और ३० लाखमें कई गाव बन्धक रख दिये गये। अहेरियाके उत्सव पर राणा अरिसिंहको एक हाडा राजपूतने मार डाला। उनकी एक उपपत्नी उनके साथ सती हो गयी। सन् १७७२ में उनका बड़ा पुत्र हमीर गद्दी पर बैठा। उसकी अवस्था १२ वर्षकी थी, इस लिये राज्यशासनका भार उसकी माताने सम्भाला। मराठोंने फिर उदयपुर पर धावा किया। इस समय राजमाता लोगोंके बहकानेसे मन्त्री अमरचन्दसे नाराज हो गयीं। अमरचन्दने अपनी सफाईके लिये अपनी सारी सम्पत्ति और वस्त्र तक राजमाताके पास भेज दिये। बहुत समझाने पर उन्होंने पुराने वस्त्र फिर वापस लिये। रानी उनके हृदयकी शुद्धता कुछ समयके लिये तो मान गयीं परन्तु फिर लोगोंके कहनेमें आ गयीं, और उन्हे जहर देकर मरवा डाला। जिस अमीरचन्दने मातृभूमिके गौरवकी रक्षार्थ सर्वस्व अर्पण करके की थी, उसके साथ कुसगमें पड़ी हुई एक अबलाने इस प्रकारका नीच बर्ताव किया। अमरचन्दकी मृत्युके बाद मेवाड़ पर मराठोंने फिर आक्रमण किया और ६ लाख रुपया सालानाका कर उन्होंने वीर भूमिसे लिया। सन् १७७८ ई० में हमीर स्वर्गवासी हुए और उनके छोटे भाई भीमसिंह गद्दी पर बैठे। उन्होंने लगभग ५० वर्ष तक राज्य किया।

भीमसिंहके शासनकालमें मराठोंकी शक्ति शिथिल हो गयी। जयपुर, जोधपुर वालोंने मराठोंको दिये हुए गाव फिरसे छीन लिये। इसी अवसर पर राणाजीके दीवान मालदास मेहता और

रूपकी बात सुन मानसिंह उससे स्वय विवाह करना चाहता था। उसने राणासे कहला दिया कि यदि आप मुझे कृष्णा न देंगे, तो मैं उसे जगतसिंहको कभी न देने दूगा। मैं अपनी सारी शक्ति इसके लिये लगा दूगा।

मानसिंहने यह भी प्रचार कर दिया कि कृष्णाका सम्बन्ध जोधपुरके स्वर्गवासी राजासे निश्चित हो चुका था, इसलिये उसका सम्बन्ध अब मुझसे ही होना चाहिये। मानसिंहने जयपुर पर चढ़ाई कर दी। सिंधियाने कुछ दिन पहले जयपुरसे धन मागा था, परन्तु उन्होंने कुछ न दिया। इस अवसर पर सिंधिया मान सिंहके साथ मिलकर जयपुरसे लड़नेको तैयार हो गया। सिंधियाने राणासे भी कहला दिया कि जयपुरवालोंको मेवाडसे निकाल दो और कृष्णाका विवाह उनके साथ न करो, परन्तु राणाने यह बात न मानी। सिंधियाने मेवाड पर चढाई कर दी। राणाजी जगतसिंहकी सेना अपने सेनाके साथ लेकर पहाड़ोंमें उससे भिड़ गये। वे युद्धमें हार गये और नगरको भागे। सिंधियाने उनका पीछा किया और जाकर शहर घेर लिया। वह एक महीने तक घेरा डाले पड़ा रहा। अन्तमें यह बात तय हुई कि एक लिङ्गके मन्दिरमें राणाजीके साथ सिंधियाका दरबार हो। इस दरबारमें सिंधियाने अपनी उच्चता दिखानेके लिये अगरेजोंके प्रतिनिधिको बुलाया। राजस्थान इतिहासके लेखक कर्नल टाड प्रतिनिधि रूपसे उपस्थित हुए। जयपुरके जगतसिंह कृष्णाको न पाकर बडे दु खी हुए। और उन्होंने मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी। जोधपुरवालोंने भी इस चढ़ाई की बात सुन कर आक्रमण कर दिया।

जयपुरके महाराजके साथ एक लाख बीस हजार और जोध

पुरके नरेशके पास इससे भी अधिक सेना आक्रमणके लिये थी। पर्वतसर नामक स्थानमें दोनों सेनाओंके बीच घोर युद्ध हुआ। जयपुर नरेश अन्तमें विजयी हुए और वे जोधपुर तक बढ़े चले गये, जिसे उन्होंने खूब लूटा। पीछेसे जोधपुरके राठोरोंने जयपुर वालों पर बड़े जोरसे आक्रमण किया और वे विजयी हुए। जयपुरके जगतसिंह अपनी बची हुई सेना लेकर भागे। यद्यपि जयपुर जोधपुरके राजा लड़ कर शक्तिहीन हो गये, परन्तु दोनों ही कृष्णाको पानेकी अभिलाषा किये रहे। उन दिनों अमीरखा नामक एक दुष्ट मुगल राणाजीके दरबारमें आया जाया करता था। एक दिन उस नीचने राणाजी और उनके कई सरदारोंके सामने साफ कह दिया कि या तो राजकुमारी जोधपुरके राजा मानसिंहसे अपना विवाह कर ले या विष खाकर अपने प्राण त्याग दे, तभी मेवाड़में शान्ति होगी। यदि इन दो उपायोंके अतिरिक्त और कुछ किया जायेगा तो राणाजीको सङ्कटमें पड़ना होगा। राणाजीका हृदय यह बात सुन कर सिहर उठा। जिस कन्याको देख कर वे अपनी विपत्तिके दिन भी भूल जाते थे, उसी निरपराधिनी कन्याके बलिदानकी बात उन्हें भला किस तरह सह्य हो सकती थी। इस दयाशून्य कार्यका भार आखिरको शिशोदिया कुलके सरदार दौलतसिंहको सौंपा गया। जब सरदारने यह बात सुनी तो उन्होंने इस कार्यको बिलकुल ही अस्वीकार किया। इसके बाद राणाके स्वर्गवासी पिताकी उपपत्नीके गर्भसे उत्पन्न हुए जवानदासको वह भीषण काम सौंपा गया। जब निरीह कुमारी उसके सामने पहुची, तो वह छुरी फेंक कर भागा। धीरे धीरे यह बात सारे रनवासमें फैल गयी। महारानी उस छुरीको देख कर रोती रोती बेहोश हो गयीं। उन्होंने खाना

पीना बिलकुल ही छोड़ दिया । उन्हे जीवित कुमारी भी मृत वत् दिखायी देने लगी। कृष्णाने माताको बहुत कुछ समझाया और कहा कि मैं मरनेसे नहीं डरती, मैंने भी तो तुम्हारे गर्भसे जन्म लिया है। राजपूत-बालाए मरनेसे नहीं डरा करतीं। जहरका प्याला कृष्णाको दिया गया, जिसे वह आनन्दपूर्वक पी गयी। प्राणोंसे विष पराजित हो गया । हलाहल विषका दूसरा प्याला फिर तैयार किया गया। वह भी काम न आया । तीसरा प्याला दिया गया और वह भी व्यर्थ हुआ । जब तीसरे प्यालेसे भी कृष्णाके प्राण न गये तो मेवाडके सरदार भयभीत हो उठे। अमीरखा वार वार यही कहता रहा कि जब तक कृष्णा जीवित है, मेवाड़में शान्ति नहीं हो सकती । अबकी वार अफीम और कसूवेको मिला कर बड़ा भयानक विष तैयार किया गया। कृष्णा समझ गयी कि इस वार अन्तिम विदा लेनी पडेगी। वह यह कह कर कि भगवान् इस वार मृत्यु दे, हसती हसती वह प्याला पी गयी और फिर वह ऐसी सोयी कि फिर न उठी।

थोड़े ही दिनों बाद पुत्रीके शोकमे महाराणीने शरीर त्याग दिया। महाराणाके १५ पुत्र थे। कृष्णाकी मृत्युके बाद जवानसिंह को छोड़ कर और सब मर गये। सन् १८०९ ई० मे अमीरखाने बहुतसी सेना एकत्र कर मेवाड़ घेर लिया और महाराणासे कहा कि मुझे ११ लाख रुपया दो, नहीं तो एकलिङ्गजीका मन्दिर ध्वस कर दिया जायेगा। नौ लाख रुपया देनेकी बात तय हुई, परन्तु रुपये अदा न किये जा सके। दुराचारी अमीरने अपनी सेना उदयपुरमें घुसा दी। कुछ ही दिनों बाद मराठोंकी सेना भी उदयपुरमें घुसा दी। और शहर-गाव खूब ही लूटे गये। कोई गृहस्थ [illegible] न बचा। जब दोनोंका अत्याचार बहुत बढ़ गया तो



कृष्णाकी विष पानकी तैयारी ।

महाराणाजीने दोनोंके बीच अपना राज्य बाट देना निश्चित किया। धवल-मगरामें सभा हुई। राणाजीके निर्णयको सुन दोनो शात हो गये। इसी बीचमें बापूजी सिंधिया ने धावा किया। उसे जो मिला अपने साथ लूट ले गया और कुछ आदमी भी पकड़ ले गया, जिन्हें अजमेरमें कैद कर दिया। इधर अग्रेजोंसे राणाजीकी सन्धिकी बात चलने लगी। सन् १८१७ के अक्टोबर मासमें लाड हेस्टिंगने सब राजपूतोंकी एक सभा दिल्लीमें की जिसमें महाराणाके साथ सन्धि हो गयी। अग्रेजोंने मेवाड़में पड़े हुए सब शत्रुओंको खदेड दिया और शान्ति स्थापित कर दी। कई सभाओंके बाद मेवाड़के सभी सामन्त सरदारोंके साथ राणा की सन्धि हा पायी।

अभी तक वही सन्धि वर्तमान है। यद्यपि मेवाड़का वह वैभव नष्ट हो गया, तथापि मेवाडने अपने नामको अपने अद्भुत सूर्य कुलीनोंसे अमर कर दिया। मेवाड़के गिरि-पर्वत और समतल भूमि और नदिया हमारी वन्दनीय हैं।

समाप्त ।

महाराणाजीने दोनोंके बीच अपना राज्य बाट देना निश्चित किया। धवल-मूगरामें सभा हुई। राणाजीके निर्णयको सुन दोनों शात हो गये। इसी बीचमें बापूजी सिंधिया ने धावा किया। उसे जो मिला अपने साथ लूट ले गया और कुछ आदमी भी पकड़ ले गया, जिन्हे अजमेरमें कैद कर दिया । इधर अंग्रजोंसे राणाजीकी सन्धिकी बात चलने लगी। सन् १८१७ के अक्टोबर मासमें लार्ड हेस्टिंगने सब राजपूतोंकी एक सभा दिल्लीमें की जिसमें महाराणाके साथ सन्धि हो गयी । अंग्रेजोंने मेवाड़में पड़े हुए सब शत्रुओंको खदेड़ दिया और शान्ति स्थापित कर दी। कई सभाओंके बाद मेवाडके सभी सामन्त सरदारोंके साथ राणा की सन्धि हो पायी ।

अभी तक वही सन्धि वर्तमान है । यद्यपि मेवाडका वह वैभव नष्ट हो गया, तथापि मेवाडने अपने नामको अपने अद्भुत मूर्य कृत्योंसे अमर कर दिया। मेवाडके गिरि-पर्वत और समतल भूमि और नदिया हमारी वन्दनीय हैं।

समाप्त ।

शङ्कर प्रिया सतीशिरोमणि—

सती-पार्वती ।

हरएक हिन्दू घरमें हर-पार्वतीका पवित्र नाम बड़ी श्रद्धा और भक्तिके साथ स्मरण किया जाता है। इस उपाख्यानमें सती-पार्वतीका बाल्यकाल, सतीकी शिक्षा, सतीकी तपस्या, सतीका शिव-दर्शन, सती-स्वयम्वर, सतीका विवाह, दक्ष यज्ञमें शिवका अपमान, सतीका देह त्याग। वीरभद्र द्वारा दक्ष यज्ञ भंग तथा दक्ष वध। सतीका दूसरा अवतार, बाल्यकाल, शिव पूजन, मदन भस्म, पार्वतीकी घोर तपस्या, प्रेम-परीक्षा, सतीका विवाह और गणेश तथा कार्तिकेयका जन्म। इसको पढ़नेसे साधारण पढ़ी लिखी भारतीय-रमणियां और अल्प वयस्क बालक-बालिकायें बड़ी सरलतासे हर पार्वतीकी विचित्र कथाको हृदयङ्गम कर सकते हैं। अनेक रंगीन चित्रोंसे सुसज्जित। सुन्दर कागज पर छपी हुई। मूल्य सर्वसुलभ वही ॥) मात्र।

साहित्य संसारका शृङ्गार।

शकुन्तला ।

संसारप्रसिद्ध कविकुलचूड़ामणि कालिदासका 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नाटक-उपाख्यानके रूपमें अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। संसार प्रसिद्ध महाकवि कालीदासके इस जगदव्यापी संस्कृत नाटकका उपाख्यानके रूपमें उल्लेख किया गया है। उपाख्यानकी एक एक पंक्ति, कवित्व और कल्पना कौशलसे परिपूर्ण है। शकुन्तला उपाख्यानमें दाम्पत्य स्नेह, नारी-कर्त्तव्य, सती-धर्म और विश्व विश्रुत प्रेमका जगमगाता उज्ज्वल चरित्र चित्रित किया गया है। इसके पढ़ने से इतिहास, उपन्यास, नाटक और काव्यका एक साथ आनन्द आता है। बाल, वृद्ध, वनिता सभीको इस अद्भुत चरित्रको पढ़कर जीवन सफल करना चाहिये। भाषा सरल है। अनेक रंगीन चित्र देकर सुसज्जित किया गया है। मूल्य सर्वसुलभ ॥=) मात्र।

पुस्तकें मिलनेका पता—

मैनेजर—दी पोपुल[illegible] कम्पनी,

[illegible] फलकत्ता।

वीर-मुकुट-मणि, चक्र-व्यूह भञ्जक—

वीर-बालक-अभिमन्यु।

धनुर्धर गाण्डीवधारी अर्जुन तथा कृष्ण—भगिनी महीयसी सुभद्राके एक मात्र वीरवर पुत्र, वीर बालक अभिमन्युकी वीरताको कौन हिन्दू नहीं जानता। वीरवर अभिमन्यु, अर्जुन और सुभद्राके पुत्र थे और भगवान् श्रीकृष्णके परमप्रिय भानजे और शिष्य। वीरवर अभिमन्यु जैसे सुकुमार बालक थे, उससे कहीं बढ़ कर विद्वान्—नीतिज्ञ, धर्मनिष्ठ और कर्तव्यपरायण थे। वीरतामें तो वे अपने विश्व-विश्रुत पिता धनञ्जय और महागुरु मामा श्रीकृष्णके समान थे। अर्जुनकी अनुपस्थितिमें पाण्डवोंका सर्व-नाश करनेके लिये—जिस समय गुरु द्रोणने चक्रव्यूह रचा, वो सोलह वर्षके वीर बालक ने उस विचित्र चक्र-व्यूहको भङ्ग कर जो वीरता प्रदर्शितकी थी, वह भारत के इतिहासमें सदा अमर रहेगी। इस पुस्तकमें उन्हीं वीरवर अभिमन्युका जीवनचरित सरल भाषामें लिखा गया है। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। हरएक बालक-बालिकाको इस चरित्रको पढ़ना चाहिये। मूल्य सही ॥=) मात्र।

स्वनामधन्य रामचन्द्र और देवी सीताके
विश्व विख्यात पुत्र द्वय—

लव-कुश।

भक्त-शिरोमणि तुलसीदासजीकी कृपासे भारतके घर घरमें आज रामायणका प्रचार है। इसलिये मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामके वीरवर पुत्र द्वय लव-कुशका परिचय देना व्यर्थ है। इस पुस्तकमें बालकोपयोगी सरल भाषामें रामायणका संक्षिप्त वृत्तान्त, देवी भगवती सीताका निर्वासन, बाल्मीकि आश्रममें लव कुशका जन्म, और शास्त्र तथा शस्त्र-शिक्षा। रामका अश्वमेध यज्ञ। लव कुशका यज्ञके घोड़ेको पकड़ना। रामचन्द्रजी की सेनाकी चढ़ाई। सुग्रीव, विभीषण, हनुमान, शत्रुघ्न और लक्ष्मणका वीर बालक लव और कुश द्वारा पराजित होना। रामचन्द्रके दर्बारमें बालक द्वय द्वारा अद्भुद राम-गुण गान, इसके बाद आत्म-परिचय, भगवती सीताका पुनग्रहण और पुनः अग्नि परीक्षाकी तैय्यारी, परन्तु सीताका पृथ्वीमें प्रवेश हो जाना आदि बातें, बड़ी ही ओजस्विनी तथा सरल भाषा में लिखी गई हैं। बालक-बालिकाओंके लिये इस पुस्तकका पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह बाल- रामायणकी रामायण और जीवन चरित का जीवन चरित है। मूल्य सही ॥=) मात्र।

प्रात स्मरणीय—आदित्य ब्रह्मचारी—

भीष्म ।

महामहिम भीष्म, महाराज शान्तनुके औरस और भगवती गङ्गाके गर्भ जात पुत्र थे। जिस समय महाराज शान्तनु द्वितीय विवाह करना चाहते थे उस समय महाराजके श्वसुरने महाराजसे यह प्रतिज्ञा करवानी चाही कि राज्यके उत्तराधिकारी भीष्म नहीं होंगे। युवराज, उनकी पुत्रीके गर्भ जात पुत्र ही होंगे। महाराज शान्तनु इसके लिये तैयार न हुए। परन्तु जब पितृ भक्त पुत्र भीष्मको इस बातका पता लगा, तो उन्होंने उसी समय प्रतिज्ञा की, कि मैं उत्तराधिकारी नहीं हूंगा और आजन्म विवाह न कर ब्रह्मचारी रहूंगा! महाराज शान्तनुका विवाह हो गया। भीष्मकी विमाताके गर्भजात पुत्र ही राज्यके अधिकारी हुए। परन्तु भीष्मने आजन्म ब्रह्मचारी रहकर देशकी सेवा की। उस समय भीष्म जैसा सत्य प्रतिज्ञ, वीर, प्रतापी, महावली, शास्त्रवेत्ता, देशमें कोई नहीं था। महाभारतके महासमरमें जो प्रचण्ड वीरता भीष्मपितामहने दिखाई थी, वह विश्व विख्यात है। मूल्य सही ॥=)

हिन्दू जातिके परम प्रतापी अन्तिम चक्रवर्त्ती सम्राट्—

पृथ्वीराज ।

जिस समय भारत पर विदेशी—यवनोंकी लोलुप-दृष्टि लगी हुई थी और वे वार वार भारत पर आक्रमण करते और मुहकी खाकर बैरङ्ग लौट जाते थे, यह उसी समयका रक्त—रञ्जित इतिहास है। उस समय यदि जयचन्द जैसे देश—द्रोही जातीय शत्रु, भारत वसुन्धराको कलङ्कित न करते, तो आज भारतका मान—चित्र और ही किसी रूपमें दृष्टिगोचर होता। न आज हिन्दू—मुसल्मानोंकी समस्या उपस्थित होती, न स्वाधीनता प्राप्तिके लिये इतने वलिदानोंकी आवश्यकता पड़ती। आज जो सात करोड़ हिन्दू सन्तान, यवन धर्म ग्रहण करके हिन्दू—देवी- देवताओंके मन्दिरों और मूर्तियोंको भग्न कर रहे हैं, तथा हिन्दी, हिन्दू सभ्यताको रसातलमें भेजनेकी कोशिश कर रहे हैं, इसकी कल्पना भी न होती। उस समय जिस वीरता—के साथ वीरवर पृथ्वीराजने यवनोंके छक्के छुटाये थे—वे हिन्दू—इतिहासकी प्रधान सामग्री हैं। अन्तमें पृथ्वीराज चल बसे! कालातीत समयसे फैहराती हुई हिन्दू-जातिकी आर्यकीर्ति—पताका सदाके लिये नोच खींचकर भूमिपर गिरा दी गई। स्वाधीन हिन्दू जातिने पराधीनताकी बेड़ियोंको पहन लिया! भाषा सरल। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य १) मात्र

राठौर वंशावतंस—क्षत्रिय कुल मुकुट मणि—

महाराणा प्रताप ।

जिस समय यवन साम्राज्यकी अग्नि-ज्वालामें समस्त देश, धू धू करके बिना रोक टोकके दग्ध हो रहा था,—भारतके विश्व विख्यात राजा महाराजागण जिस समय अपनी मुकुट मणियोंको मुगल सम्राटके पाद पद्मोंमें निक्षेप करनेमें ही अपना गौरव समझते थे, महा नीतिनिपुण मुगल-सम्राट अकबर, एकके बाद एक हिन्दू राज्यको हड़प करनेमें लग रहा था। ऐसा मालूम होता था कि यदि साम्राज्य लोलुप मुसलमानोंकी यही चाल बराबर जारी रही, तो शीघ्रही संसारसे हिन्दू जातिका नामोनिशां तक मिट जायगा। सम्राट् अकबरने ओहदों और पदोंका लालच दे और अपनी अतुल शक्तिका आतङ्क दिखाकर—कुलीन राजपूतोंकी कन्याओं तकसे विवाह करना शुरू कर दिया था। यवन-साम्राज्यकी चिनगारियां समस्त देशमें उड़ रही थीं। ऐसा प्रतीत होता था, जैसे इस महाजल-प्लावनमें शीघ्रही विशाल हिन्दू जाति निमज्जित होनेवाली हो। हिन्दू धड़ा-धड़ मुसलमान हो रहे थे। इसी समय क्षत्रियकुल मुकुटमणि महाराणा प्रतापका उदय हुआ था। समस्त देशके राजा महाराजा, मुगल-सम्राट्की वश्यता स्वीकार कर चुके थे। कितने ही भूपतिगण अपनी कन्याओं और बहनोंको यवनोंकी पर्यंक शायिनी बनाकर हिन्दू-जातिको कलङ्क-कालिमासे कलुषित कर चुके थे—और मुगल सम्राट्की मातहतीमें छोटे बड़े पद पाकर गुलामोंकी तरहसे भटकते फिरते थे। इसी समय महाराणा प्रतापने एक ऐसी हुंकार-ध्वनि की, कि समस्त देश कांप उठा! मुगल-सम्राट्का तख्ते ताऊस हिल गया! हिन्दुओंने बिजलीकी कड़कड़ाहटमें देखा कि हिन्दू जातिका अस्तोन्मुख सूर्य, अभी अस्त नहीं हुआ है! मेवाड़की कन्दराओंमें उसकी रश्मियां पहुंचकर दूबती हुई हिन्दू जातिको आश्वासन दे रही थीं! महाशक्तिशाली मुगल सम्राट्ने हिन्दू जातिके मेवाड़में टिमटिमाते हुए इस दीयेको गुल करनेके लिये एक बार नहीं, जन्मभर जोर लगाया, परन्तु महाराणा प्रतापका, प्रताप—नहीं—नहीं हिन्दू जातिका प्रताप बराबर उसको अंगूठा दिखाता रहा। मुट्ठीभर साथियोंको लेकर महाराणा प्रतापने जीवनकी अन्तिम घड़ी तक, हिन्दू-जातिकी विजय पताकाको बराबर फहराते रखा। यह उनही महामहिम महाराणा प्रतापका ओजस्विनी भाषा में लिखा सचित्र जीवन चरित्र और इतिहास है। मूल्य १) मात्र। बच्चोंको पढ़ाइये और वीर बनाइये।

वीर-शिरोमणि हिन्दूधर्म-संरक्षक—

छत्रपति—शिवाजी ।

मुगल-साम्राज्य समस्त देशको हड़प कर चुका था। सम्राट् औरङ्गजेबने हिन्दुओंको मुसलमान बनानेके लिये अपनी समस्त शक्ति लगा दी थी। हमारे धर्मशास्त्र, मठ मन्दिर, गो ब्राह्मण, साधु सन्यासी, उसकी दया पर जीवित थे! औरङ्गजेब चाहता था कि एक बार समस्त भारतके हिन्दुओंको मुसलमान बना डालूं ! अखिल भारतवर्षमें मन्दिरोंकी जगह मस्जिदें बन जांय, प्रयाग, काशी, हरद्वार, मथुराको मक्का मदीना और काबा बना डाला जाय। अज्ञात समयसे जहां वेद ध्वनिसे आकाश-मण्डल गुञ्जरित होता रहा है, वहां नमाज, कलमा, अजानका बोलबाला हो जाय। इसी समय दक्षिणके एक छोटेसे मुसलमानी राज्य बीजापुरके कर्मचारीके यहां एक बालकका जन्म हुआ। पूर्वजन्मके पुण्य प्रतापसे उसे ऐसी सुविधाएं मिलीं कि बचपनमें ही उसे आत्म-बोध हो गया। उसने आसपासके गंवार मावलोंको साथ लेकर सङ्गठन शुरू किया। और अन्तमें गुरु रामदासके उपदेशसे इसी बालकने बिना-विद्या बुद्धि और धन-दौलतके हिन्दू साम्राज्य स्थापित करनेका बीड़ा उठाया। दक्षिणके समस्त राज्योंको छीन-झपटकर महान् हिन्दू धर्मकी शताब्दियोंसे गिरी हुई विजय-पताकाको फहरा दिया। समस्त देशमें हलचल हो उठी। सम्राट औरङ्गजेबका आसन डोला। उसने अपनी समस्त शक्ति लगाकर शिवाजीको खत्म करना चाहा। इसके लिये लाखों यवन रणभूमिकी भेंट चढ़े। करोड़ों रुपया बर्बाद हुआ। परन्तु शिवाजीकी शक्ति बढ़ती ही गयी। औरङ्गजेबने धोखा देकर ईमान्दारीका खून किया और उन्हें आगरामें बन्दी तक करा लिया। परन्तु वीरवर शिवाजी कैद तोड़ कर भाग गये और जीवनकी अन्तिम घड़ी तक हिन्दू धर्मकी रक्षा करते रहे। इस पुस्तकमें उन्हीं शिवाजीका जीवन-चरित्र तथा उनके अद्भुत कार्य-कलापोंका वर्णन है। शिवाजीका ऐसा अच्छा सचित्र जीवन-चरित्र, आज तक किसी भाषामें नहीं निकला। दर्जनों चित्र हैं। भाषा ओजस्विनी। आप पढ़िये और बालक बालिकाओंको पढ़ाकर उनके चरित्रको गठित कीजिये। मू० १॥) मात्र।

मैनेजर—पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी

१९५ हरीसन रोड, कलकत्ता।

भारतके सौभाग्यसूर्य, कीर्ति-स्तम्भ गौरव-रवि—

श्रीकृष्ण ।

आनन्द-कन्द गीताके उपदेष्टा, महाभारतके सूत्र-चालक, श्रीमद्‌भागवत् के प्रधान नायक, महाक्रान्तिकारी भगवान् श्रीकृष्णको कौन नहीं जानता ? जिनके निष्काम-कर्मके आदर्श उपदेश, कर्तव्य पालन करनेकी गम्भीर वाणि को अपनानेके लिये अखिल ब्रह्माण्ड व्याकुल हो रहा है। श्रीकृष्णके समान सोलहों कलापूर्ण अवतार न संसारमें कभी हुआ है—न होगा । धन्य हैं वे गोपाल-बाल, जिनके साथ कृष्ण खेले कूदे। धन्य हैं वे गोपियां, जिनके साथ रासलीला की। हमारा कोटि कोटि प्रणाम है—वृन्दावन गोकुलके उस कालिन्दी तटको तथा वहाके जल, वन, पर्वतोंको—जहां श्रीकृष्णने बाल्य-काल व्यतीत किया। जिस समय श्रीकृष्णका अवतार हुआ उस समय क्षत्रिय-राजकुल नष्ट हो रहे थे। वर्णव्यवस्था नष्ट होती जाती थी। अधर्माचरण और अनीति ने पुण्यभूमि भारतवर्षके वायुमण्डलको अप वित्र कर दिया था। वैदिकधर्मके माननेवाली आर्यजाति अधःपतित हो रही थी। राज-काजमें, समाजमें और धर्ममें क्रान्तिकी जरूरत आ पड़ी थी। भगवान् श्रीकृष्णने अवतार धारण कर समस्त देशमें भीषण क्रांति की। लोप होते हुए वैदिक धर्मको बचाया और कवचस्वरूप गीताका ऐसा उपदेश दिया जिसके प्रभावसे कल्प-कल्पांतरमें भी आर्यजातिका विनाश नहीं हो सकता। इसमें श्रीकृष्णके चरित्रकी सभी बाते ओजस्विनी भाषामें लिखी गई हैं। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित है। श्रीकृष्णका ऐसा अच्छा सर्वाङ्ग सुन्दर सचित्र सस्ता जीवन-चरित्र, किसी भाषामें भी नहीं छपा। आप पढ़िये, अपनी घरकी स्त्रियोंको पढ़ाइये तथा बालक-बालिकाओं को पढ़ाकर उनके चरित्रको आदर्श बनाइये। केवल इस चरित्रको पढ़नेसे ही श्रीमद्‌भागवत् और महाभारतका सार-तत्त्व आप सरलतासे हृदयङ्गम कर सकेंगे। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य १॥) मात्र।

मैनेजर—पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी
११५ हरीसन रोड, कलकत्ता।

महाराणा-प्रताप



रत्नाकर-ग्रन्थ-मालाका १७ वा रत्न।

दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, ११५ हरीसन रोड, कलकत्ता।